छठा कमोडिटी आउटलुक वार्षिकांक

कमोडिटी आउटलुक 2014

आपकी उन्नति: हमारा ध्येय

smc®

Moneywise. Be wise.

ace
Commodity Exchange

A multi-commodity, cutting edge, pan-India platform. Anchored by one of India's most respected Financial Institutions.

Refined Soyoil | Soybean | Soybean Meal | RBD Palmoleon
Cotton | Castor | Chana | Mustard Seed | Crude Oil
CPO | Copper

kotak® Anchored Enterprise

For Live prices: www.aceindia.com

Ace Derivatives and Commodity Exchange Ltd - 401, Infinity IT Park, Building No. 4, General A. K. Vaidya Marg, Dindoshi, Malad (E), Mumbai - 400097 | NATIONAL HEAD - BUSINESS DEVELOPMENT: Selven Rodrigo: +91 9820347137 | MAHARASHTRA, GOA & MP: Saurabh Raheja: +91 9769474419 | DELHI, PUNJAB & HARYANA: Nishant Dixit: – 91 9582901299 | UP & WEST BENGAL: Amit Kumar Sharma: +91 9836090111 | GUJARAT & RAJASTHAN: Kaushal Mehta: +91 9825008590 | AP, KARNATAKA, TAMIL NADU & KERALA: Bhanu Prakash: + 91 8886859555 | For membership queries, write to membership@aceindia.com

		पृष्ठ संख्या
1	2013 का प्रदर्शन और घटनाक्रम	4
2	कमोडिटी का प्रदर्शन 2013	5
3	एसेट समूहों की तुलना 2013	6
4	कीमतों में बदलाव का दायरा	7
5	फंडामेंटल कॉल 2013 का प्रदर्शन	8-9
6	आर्थिक इंडिकेटर	10-12
7	वार्षिक समीक्षा 2013 और वार्षिक आउटलुक 2014	
	I. सर्राफा	13-16
	ii. एनर्जी	17-20
	iii. बेस मेटल	21-26
	iv. मसाले	27-30
	v. तिलहन एवं खाद्य तेल	31-34
	vi. अन्य कमोडिटीज	35-38

जगन्नाधम थुनुगुन्टला — रिसर्च हेड

कमोडिटी फंडामेंटल टीम

वंदना भारती — एवीपी (कमोडिटी)
संदीप जून — सीनियर रिसर्च एनॉलिस्ट
सुब्रानील डे — सीनियर रिसर्च एनॉलिस्ट

शिवानन्द उपाध्याय — कंटेन्ट एडिटर-हिन्दी

सहायक टीम

प्रमोद छिम्वाल — ग्राफिक डिजाइनर
सोनिया बांबा — रिसर्च एक्जीक्यूटिव

कॉरपोरेट ऑफिस

11/6बी, शान्ति चैम्बर,
पूसा रोड, नई दिल्ली-110005
दूरभाष: 91-11-30111000, एक्स: 625,642, 674
फैक्स: 91-11-25754365

एसएमसी कॉमट्रेड लिमिटेड के लिए प्रकाशित और मुद्रित
11/6बी, शान्ति चैम्बर,
पूसा रोड, नई दिल्ली-110005
बेबसाइट: www.smctradeonline.com
निवेशकों की शिकायतें: smc@smcindiaonline.com

मुद्रित:
एस एण्ड एस मार्केटिंग
102, महावीर जी कॉम्पलेक्स, एलएससी-3, ऋषभ विहार, दिल्ली-110092
दूरभाष: 91-11-43035012, 43035014
ई मेल: sachdeva_shiv@hotmail.com

वक्त द्रुत गति से भागता जा रहा है। 2009 में पहली बार हमारे रिसर्च के विशेषज्ञों द्वारा "कमोडिटी वार्षिक आउटलुक" की शुरूआत की गई । वर्ष 2014 इस वार्षिकांक की छठी वर्षगांठ है और आप सबकी गहरी दिलचस्पी का ही परिणाम है कि हमने एक बार फिर "कमोडिटी वार्षिक आउटलुक" को सफलतापूर्वक तैयार किया है । इस बार भी हमने इसमें कई बदलाव किए है और अपने शोध कार्यो और उपलब्ध सूचनाओं को आपके साथ साझा करने की कोशिश की है।

ठीक ही कहा है कि "धन हमेशा वहीं जाता है जहां इसका सम्मान होता है" हमने कमोडिटीज से पूंजी की निकासी(आउटफ्लो) और सुरक्षित निवेश के रूप में खरीददारी कम होते देखा है जबकि निवेश जोखिम वाले एसेट में हुआ है, जिससे काफी आकर्षक मुनाफा हुआ है। इसके अतिरिक्त कमोडिटी बाजार ने पिछले कुछ वर्षो से निवेशकों को निराश किया है। थॉमसन रॉयटर /कोर कमोडिटी सीआरबी इंडेक्स, जिसमें 19 कमोडिटीज शामिल है, पिछले वर्ष 10% से अधिक गिरा है, जो गिरावट का तीसरा वर्ष है। विकासशील देशों में कमजोर वृद्धि दर का असर कमोडिटी, खासतौर से औद्योगिक धातुओं, की कीमतों पर भी देखा जा रहा है । अमेरिकी अर्थव्यवस्था में लगातार वृद्धि के साथ ही कुछ अन्य बड़ी अर्थव्यवस्था में रिकवरी ने निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो को फिर से संतुलित करने के लिए और जोखिम वाले एसेट में अधिक निवेश के लिए प्रोत्साहित किया ।

घरेलू बाजार में रूपये के अनियंत्रित कारोबार के कारण कुछ कमोडिटीज में, खासतौर से सोना, अंतरराष्ट्रीय बाजार के रूख से अलग कारोबार हुआ । कमोडिटीज के हिसाब से पिछला वर्ष अनेक घटनाक्रमों वाला वर्ष था। कई सरकारी फैसलों का इस बाजार पर काफी असर पड़ा । 1 जुलाई से गैर कृषि कमोडिटीज और प्रोसेस्ड खाद्य वस्तुओं पर कमोडिटी ट्रांजैक्शन टैक्स लागू किए जाने से अधिकांश कमोडिटी एक्सचेंजों में वायदा कारोबार का वॉल्यूम प्रभावित हुआ। मौजूदा वित्त वर्ष के पहले नौ महीनों में कमोडिटी एक्सचेंजों के टर्नओवर में 36% की गिरावट हुई । सोने के आयात को नियंत्रित करने के लिए उठाए गए कई कदमों के कारण भारतीय बाजार में सोने के फिजिकल कारोबार में कमी दर्ज की गई ।

स्टीमुलस में कटौती शुरू हो गई है । इसका अभिप्राय यह है कि पूरी दुनिया में किसी न किसी रूप में फैल रही सुलभ मुद्रा फिर से अमेरिका की ओर वापस हो जाएगी । चीन की आर्थिक रफ्तार धीमी पड़ रही है लेकिन वह निश्चित रूप से विकास के रास्ते बना रहेगा । अन्य विकासशील देश भी अपनी मौजूदा विकास की गति को बरकरार रखेंगें जबकि यूरो जोन अभी चिंता का विषय बना रह सकता हैं । अपनी अर्थव्यवस्था को फिर से संतुलित करने के लिए चीन की सरकारी नीति एक अवरोधक का काम कर सकती है । कुल मिलाकर देखा जाय तो हम यह नही कह सकते है कि कमोडिटीज का महाचक्र टूट गया है। फिर भी इसे जोरदार गिरावट का सामना करना पड़ा है और कमोडिटीज में 1-2 वर्षो तक स्थिरता रह सकती है। कमोडिटीज की अतिरिक्त सप्लाई, खासतौर से औद्योगिक धातुओं की, से कीमतों में नरमी रह सकती है। सप्लाई का सरप्लस 2-3 वर्ष पहले, जब कीमतें उच्च स्तर पर थी, शुरू की गई निवेश परियोजनाओं का परिणाम है।

निष्कर्षत: कमोडिटीज की कीमतें छोटी अवधि में स्थिर ही रहने वाली है क्योंकि बाजार में किसी नए एवं मजबूत कारकों का अभाव है। अमेरिकी बांड खरीद में कटौती की खबर कमोडिटीज बाजार के लिए अब निष्प्रभावी हो चुकी है। विकासशील देशों से मांग फिर से अहम रहने वाली है जो कीमतों को व्यापक रूप से प्रभावित कर सकती हैं। करेंसी के कारोबार को अनदेखा कर उसकी ओर से आंख बंद नही करें । कभी-कभी करेंसी में बदलाव बड़ी भूमिका निभाता है। रूपया 55-68/डॉलर के दायरे में कारोबार कर सकता है जबकि डॉलर इंडेक्स में भी थोड़ी मजबूती दर्ज किए जाने की संभावना है।

कुल मिलाकर 2014 में कमोडिटीज के एक दायरे में ही कारोबार करने की संभावना है जबकि सोने में नरमी का रूझान और बेस मेटल में सुस्त बदलाव जारी रह सकता है। एनर्जी बाजार में स्थिरता रह सकती है जबकि कृषि कमोडिटीज में हल्की बढ़त दर्ज की जा सकती है। कृषि कमोडिटीज की सप्लाई को निर्धरित करने में मौसम से जुड़ी खबरों की भी मुख्य भूमिका होगी । "विभिन्न एसेट वर्गो की चाल और उसमें बने रहना ही जीत हासिल करने की उचित रणनीति है।" कुछ कमोडिटीज में बेलगाम चाल से इंकार नही किया जा सकता है, इसलिए पोर्टफोलियो में समय-समय पर बदलाव करना आवश्यक है।

कमोडिटीज में निवेश के लिए हार्दिक शुभकामनाएं

Vandana Bharti

(वंदना भारती)

डिसक्लेमर : एसएमसी ग्लोबल सिक्योरिटीज लिमिटेड अपने इक्विटी शेयर के लिए एक पब्लिक इश्यू, जो आवश्यक अनुमोदन, बाजार की स्थितियों और अन्य शर्तो के अधीन है, का प्रस्ताव किया है और भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (SEBI) के पास ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉसपेक्टस(DRHP) दर्ज कराया है। DRHP भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड के वेबसाइट www.sebi.gov.in पर उपलब्ध है और बुक रनिंग लीड मैनेजर्स अर्थात टाटा सिक्योरिटीज लिमिटेड के वेबसाइट www.tatacapital.com और IL&FS कैपिटल एडवाइजर्स लिमिटेड के वेबसाइट www.ilfscapital.com पर भी उपलब्ध है। निवेशकों को ध्यान देना होगा कि इक्विटी शेयरों के निवेश में काफी अधिक जोखिम होता है। विस्तृत विवरण के लिए DRHP को विशेषकर ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉसपेक्टस के जोखिम फैक्टर्स के शीर्षक वाले भाग को देखें ।

यह रिपोर्ट अधिकृत प्राप्तकर्त्ता की पर्सनल सूचना के लिए है और इसका किसी निवेश, विधिक एवं कर संबंधी परामर्श से संबंध नही हैं यह केवल प्राइवेट सर्कुलेशन एवं उपयोग के लिए है। यह रिपोर्ट विश्वस्त सूत्रों पर आधारित है लेकिन यह पूरी तरह सही और पूर्ण है,जरूरी नही और इस पर पूरी तरह भरोसा नही किया जाना चाहिए । रिपोर्ट के कन्टेन्ट के आधार पर कोई कार्य नही किया जा सकता है । इस रिपोर्ट का पुन: उत्पादन या पुन: वितरण एसएमसी से लिखित आज्ञा के बिना किसी भी रूप में एवं किसी भी अन्य व्यक्ति को नही किया जाना चाहिए । इस सामग्री का कन्टेन्ट सामान्य है और यह न तो पूरी तरह से व्यापक है और न विस्तृत है । न तो एसएमसी और न इसका कोई संबंधी, सहायक, रिप्रेजेन्टेटिव,डायरेक्टर या कर्मचारी इस रिपोर्ट के आधार पर उठाये गये किसी कदम से होने वाली क्षति या नुकसान के लिए उत्तरदायी ठहराया जाना चाहिए । यह कोई पर्सनल अनुमोदन नही करता या किसी खास निवेश उद्देश्य,वितीय स्थिति या किसी व्यक्ति या कॉरपोरेट की जरूरतों को लेकर नही चलता है । सभी निवेश जोखिमपूर्ण एवं पिछले प्रदर्शन पर आधारित होते है जो किसी रिजल्ट की गारन्टी नही देते । इंवेस्टमेंट की इन्कम एवं वैल्यू एक निश्चित समय में उपलब्ध कुछ बड़े एवं सूक्ष्म कारकों के बदलाव पर निर्भर करते है। निवेश का निर्णय लेते समय किसी भी व्यक्ति को अपने विवेक का इस्तेमाल करना चाहिए । कृपया ध्यान रखें कि हम या हमारा कोई अधिकारी, सहायक, रिप्रेजेन्टेटिव, डायरेक्टर या कर्मचारी, जो भी इस रिपोर्ट को बनाने या भेजने में शामिल है उसकी खरीद या बिक्री किसी भी कमोडिटीज में, जिनका इस रिपोर्ट में जिक्र किया गया है, हो सकती है अथवा वह इन किसी भी कमोडिटीज को भविष्य में बेच सकता है। इसके अलावा वह इन कमोडिटीज के किसी भी प्रकार के सौदों में और ब्रोकरेज या अन्य प्रकार के मुआवजे में अथवा मार्केट मेकिंग में शामिल हो सकता है। इन कंपनियों के कमोडिटीज के इंवेस्टमेंट बैंकिग में सेवायें दे रहे है या दे सकते हैं इन कंपनियों को परामर्श या ऋण देने या इन कंपनियों से ऋण लेने अथवा इस रिपोर्ट में दी गये सुझाव या परामर्श या सूचना एवं अनुमोदन में इनका अपना कोई भी निहित स्वार्थ या विवाद हो सकता है । सभी विवादों का निपटारा अंतिम रूप से दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीन होगा ।

कमोडिटी आउटलुक 2013 में दिए गए कॉल का प्रदर्शन

	दायरा (वार्षिकांक 2013)	2013 निम्न स्तर*	2013 उच्च स्तर*
सोना (कोमेक्स)	1530-1950	1180	1696
सोना (एमसीएक्स)	28000-35000	24830	35074
चांदी (कोमेक्स)	21-48	18.14	32.45
चांदी (एमसीएक्स)	51000-75000	38536.00	59974.00
कच्चा तेल (नाइमेक्स)	75-105	85.90	112.20
कच्चा तेल (एमसीएक्स)	4400-5800	4737.00	7785.00
नेचुरल गैस (नाइमेक्स)	3.3-4.9	3.07	4.43
नेचुरल गैस (एमसीएक्स)	160-270	176.20	276.80
तांबा	370-520	366.40	512.70
जिंक	95-130	97.40	136.90
लेड	100-150	104.30	155.40
निकल	800-1250	787.50	1004.50
एल्युमीनियम	100-130	99.10	133.50
हल्दी	5000-9000	4426.00	7248.00
जीरा	13500-18500	11895.00	14845.00
लाल मिर्च	5500-8000	4650.00	7666.00
इलायची	800-1400	559.90	1082.70
चना	3200-4800	2528.00	4127.00
कपास	800-1200	874.00	1105.00
गेहूँ	1400-1800	1370.00	1688.00
चीनी	2800-3650	2680.00	3267.00
सोयाबीन (एनसीडीईएक्स)	2900-4800	2838.00	4276.00
सोयाबीन (सीबोट)	1200-1800	1255.00	1630.00
आरएमसीड	3200-4600	3020.00	4290.00
रिफाइन्ड सोयातेल	620-800	628.00	760.80
सीपीओ (एमसीएक्स)	360-580	426.40	585.10
सीपीओ (बीएमडी)	2100-3100	2177.00	2688.00

* 13 दिसम्बर 2013 तक

2014 में FOMC और FCB की बैठक

माह	FOMC की बैठक	ECB की बैठक
जनवरी	28 और 29	9 और 22
फरवरी	–	6 और 19
मार्च	18 और 19	6 और 19
अप्रैल	29 और 30	3 से 16
मई	–	8 से 21
जून	17 और 18	5 से 17
जुलाई	29 और 30	3 से 17
अगस्त	–	7
सितम्बर	16 और 17	4 और 18
अक्टूबर	28 और 29	2 और 15
नवम्बर	–	6 और 19
दिसम्बर	16 और 17	4 और 17

सोना होल्डिंग वाले 10 प्रमुख देश (WGC)

क्रमांक	देश	टन	रिजर्व में (%)
1	अमेरिका	8,133.50	71.70%
2	जर्मनी	3,390.60	68.80%
3	इटली	2,451.80	67.10%
4	फ्रांस	2,435.40	65.50%
5	चीन	1,054.10	1.30%
6	स्विटजरलैंड	1,040.10	8.60%
7	रुस	1,015.10	8.30%
8	जापान	765.2	2.60%
9	नीदरलैंड	612.5	54.20%
10	भारत	557.7	8.40%

विश्व के प्रमुख सेंट्रल बैंकों की ब्याज दर

सेंट्रल बैंक	देश	वर्तमान ब्याज दरें	पिछली ब्याज दर	बदलाव की तिथि
फेडरल रिजर्व (FED)	अमेरिका	0.25%	1.00%	16-दिसम्बर-08
यूरोपीयन सेन्ट्रल बैंक (ECB)	यूरो	0.25%	0.50%	7-नवम्बर-13
बैंक ऑफ इंग्लैंड (BOE)	इंग्लैंड	0.50%	1.00%	5-मार्च-09
बैंक ऑफ जापान (BOJ)	जापान	0.10%	0.10%	5-अक्टूबर-10
रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (RBI)	भारत	7.75%	7.50%	29-अक्टूबर-13
पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना (PBOC)	चीन	6.00%	6.31%	5-जुलाई-12
रिजर्व बैंक ऑफ ऑस्ट्रेलिया (RBA)	ऑस्ट्रेलिया	2.50%	2.75%	6-अगस्त-13
ब्राजील सेन्ट्रल बैंक (BACEN)	ब्राजील	9.50%	9.00%	9-अक्टूबर-12

01/01/13 से 13/12/13 के बीच कृषि कमोडिटी कारोबार में रिटर्न (% में)

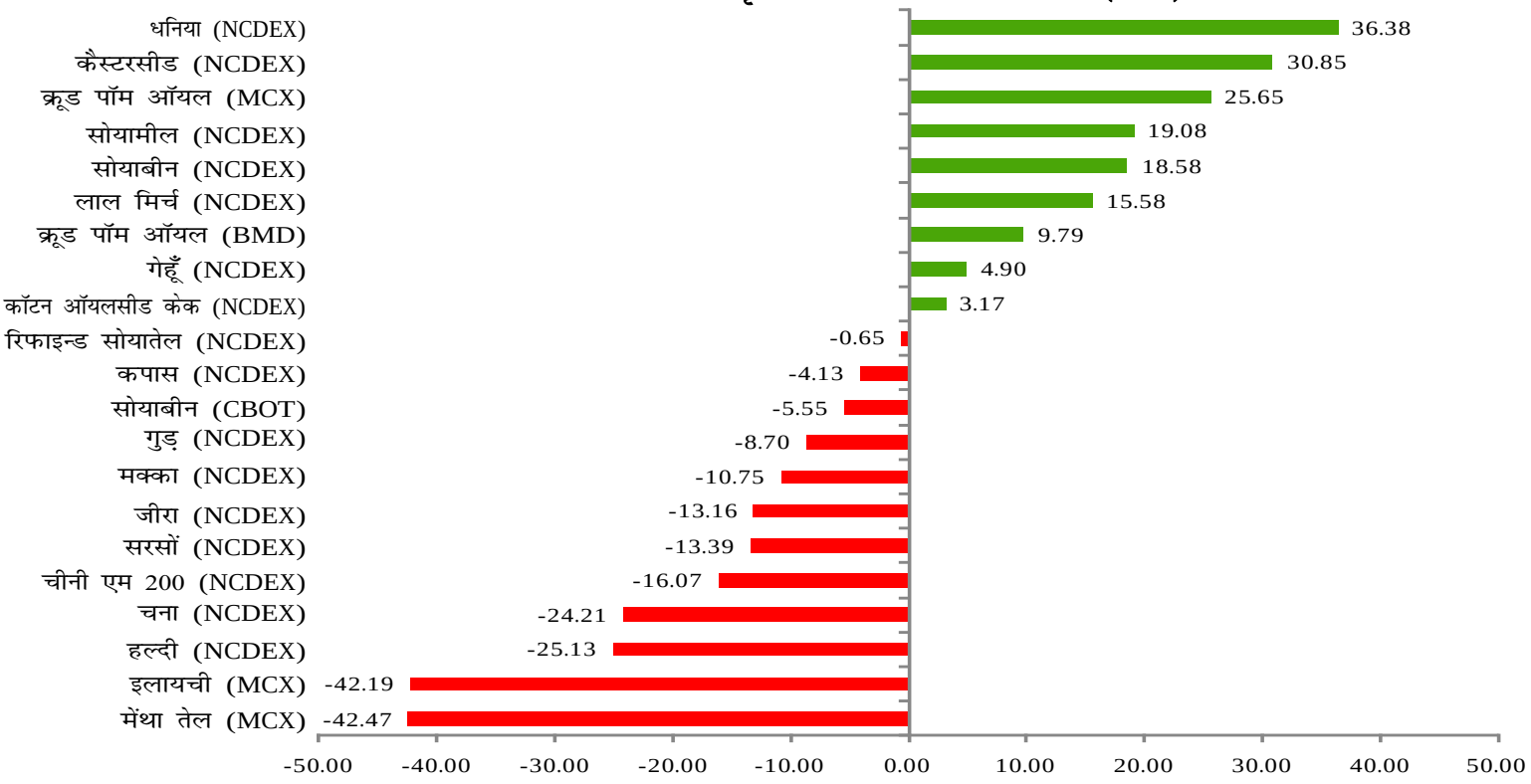

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

02/01/13 से 13/12/13 के बीच बुलियंस, मेटल्स और एनर्जी कारोबार में रिटर्न (% में)

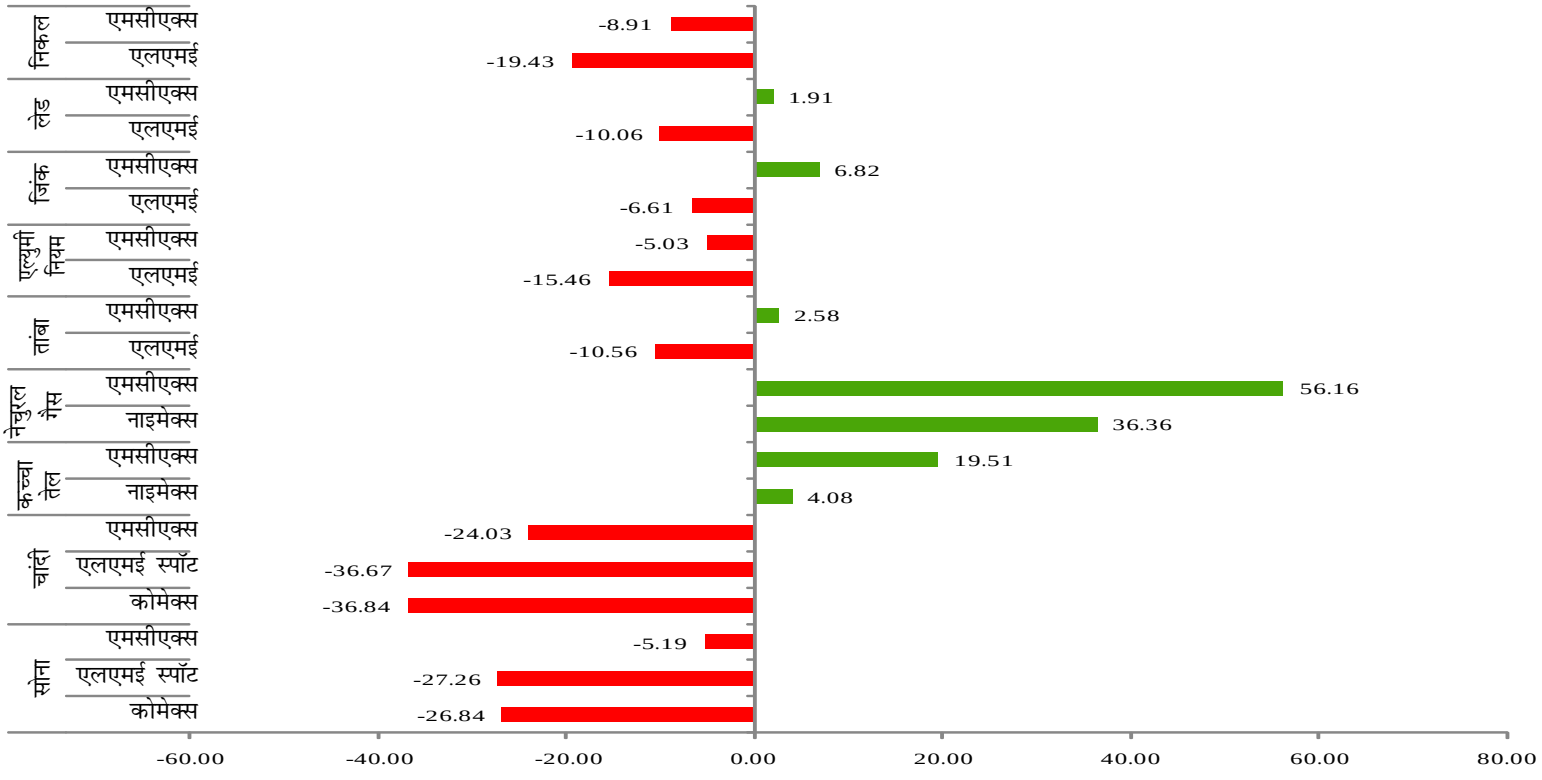

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

smc®
Moneywise. Be wise.

02/01/13 से 13/12/13 के बीच एसेट समूहों में रिटर्न की तुलना (% में)

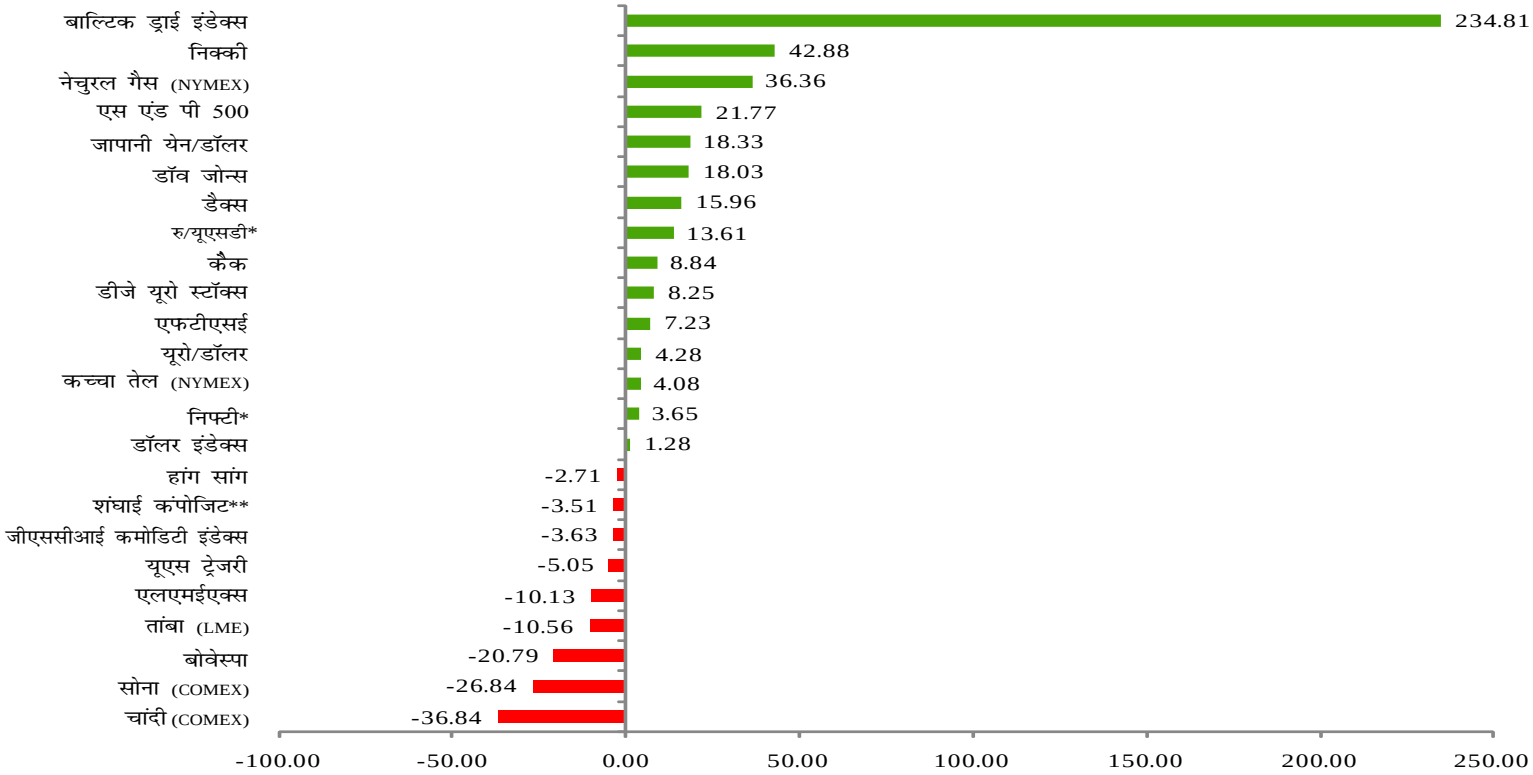

* 1 जनवरी 2013 के अनुसार बंद भाव ** 4 जनवरी 2013 के अनुसार बंद भाव

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

यह वर्ष अनेक अहम घटनाक्रमों से भरा रहा, जिसकी शुरूआत अमेरिका में मजबूती के कुछ अहम संकेतों से हुई और अधिकांश विकासशील देशों की आर्थिक गतिविधियों में सुस्ती के साथ-साथ यूरोपीय देशों में मामूली वृद्धि के साथ स्थिर प्रदर्शन तक सीमित रही । अमेरिकी सरकार की आंशिक कामबंदी ने वित्तीय बाजार को थोड़ा बेचैन कर दिया, जिसकी समाप्ति दो हफ्ते के बाद हुई । पिछले 40 वर्ष में यह 17 वीं बार कामबंदी है जबकि अंतिम कामबंदी 1995-1996 में हुई थी । कामबंदी के अतिरिक्त स्टीमुलस में कटौती पूरी दुनिया के लिए एक बड़ी चिंता का विषय था, जिससे बाजार में काफी हलचल रही । कटौती 2013 के मध्य में होने की संभावना थी, लेकिन दिसम्बर में हुई ।

2013 में अनेक आर्थिक संकेतकों से बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों में रिकवरी के संकेत मिलने के कारण शेयर बाजारों में जोरदार निवेश हुआ । जबकि निश्चित आय वाले बाजार से या तो कोई आमदनी नही हुई या नकारात्मक आमदनी हुई क्योंकि बढ़ती ब्याज दरों के कारण बांड की कीमतों में कमी दर्ज की गई । कुछ बाजारों में जैसे इक्विटी और प्रॉपर्टी में भारी उछाल दर्ज की गई । ऐसा मुख्य रूप से कम ब्याज दरों और विश्व स्तर पर स्टीमुलस कदमों के जारी रहने से हुआ । इसप्रकार इक्विटी जैसे जोखिम वाले एसेट में पूंजी निवेश में अधिक वृद्धि हुई । अमेरिका और यूरोपीयन यूनियन के प्रमुख शेयर बाजारों ने एशिया के शेयर बाजारों से बेहतर प्रदर्शन किया । आर्थिक गतिविधियों में सुस्ती से एशिया के अधिकांश शेयर बाजारों पर असर पड़ा । जापान इसका अपवाद रहा, जहां 40% से अधिक मुनाफा हुआ क्योंकि वहां की अर्थव्यवस्था कई वर्षो के बाद मुद्रास्फीति की स्थिति में आ गई है।

डॉव जोन्स ने 15% से अधिक मुनाफा प्रदान किया जबकि डॉलर इंडेक्स भी बढ़त के साथ बंद हुआ । एस एंड पी 500 इंडेक्स एक दशक में सबसे बड़ी वार्षिक बढ़त की ओर अग्रसर है। ट्रेजरी और सोना, जिन्हे बुरे दौर का साथी माना जाता है, भी गिरावट के साथ बंद हुए क्योंकि थोड़ी आर्थिक रिकवरी के कारण सुरक्षित निवेश के रूप में खरीददारी कम हो गई । संकट के समय 'फ्लाइट टू क्वालिटी' इंस्ट्रूमेंट के रूप में ट्रेजरी बांड और सोने की कीमतों में वृद्धि होती है जबकि शेयर जैसे जोखिम वाले एसेट की बिकवाली होती है और विपरीत स्थिति में ठीक इसके उलट प्रक्रिया होती है। फेडरल रिजर्व द्वारा 85 बिलियन डॉलर की मासिक बांड खरीद योजना में कमी शुरू किए जाने की संभावना से 2013 में सोने की कीमतों में 26% से अधिक की गिरावट हुई और यह सन 2000 के बाद पहली वार्षिक गिरावट है। लेकिन सोने की तुलना में चांदी की कीमतों में अधिक लगभग 36% की गिरावट हुई ।

तेल, मेटल, और अन्य कृषि उत्पादों जैसे कच्चे मालों की खरीददारी में मामूली गिरावट के कारण अन्य वित्तीय बाजारों की तुलना में कमोडिटी इंडेक्स ने कमजोर प्रदर्शन किया । इसके बावजूद मंदी के बाद कमोडिटीज में V-आकार में रिकवरी हुई, लेकिन यदि हम वृहद तस्वीर को देखें तो यह अपने अब तक के उच्चतम स्तर से अभी भी नीचे है। डॉव जोन्स-यूबीएस कमोडिटी इंडेक्स 1998 में शुरू होने के बाद 2013 में लगातार तीसरे वर्ष 11% नीचे गिरा है।

लगातार सप्लाई के बीच आर्थिक प्रदर्शनों के औसत से कम रहने के कारण बेस मेटल में आकर्षण नही रहा और इसके परिणामस्वरूप इसमें बिकवाली दर्ज की गई । अधिकांश बेस मेटल का 2007-08 के बाद से कम या अधिक सरप्लस रहा। यह वर्ष भी औसत फिजिकल मांग के बीच सप्लाई में अधिकतम वृद्धि वाला वर्ष रहा । LMEX में 10%से अधिक की गिरावट हुई । यहां तक जब विकासशील देशों में सुस्ती आयी तो चीन भी अपवाद नही रहा ।

घरेलू बाजार में निफ्टी थोड़ा बेहतर रहा । लेकिन भारतीय रूपये के लचर प्रदर्शन ने 2013 में कमोडिटी की कीमतों को कई गुना तेजी प्रदान की । कुल मिलाकर वित्तीय बाजार ने पिछले वर्ष तेजड़ियों और मंदड़ियों दोनों को अवसर प्रदान किया ।

कमोडिटी कीमतों में बदलाव का दायरा (कृषि कमोडिटी)

कमोडिटी	एक्सचेंज	अब तक का उच्चतम स्तर	अब तक का निचला स्तर	2013 उच्चतम स्तर*	2013 निचला स्तर*
मसाले					
हल्दी	NCDEX	16350.00	1666.00	7248.00	4426.00
जीरा	NCDEX	17520.00	4877.40	14845.00	11895.00
लाल मिर्च	NCDEX	10970.00	1698.00	7666.00	4650.00
इलायची	MCX	2097.00	206.10	1082.70	559.90
अन्य कमोडिटी					
चना	NCDEX	4999.00	1331.00	4127.00	2528.00
गेहूँ	NCDEX	1705.00	662.00	1688.00	1370.00
मेंथा ऑयल	MCX	2564.80	342.00	1585.00	816.30
गुड़	NCDEX	1348.00	361.40	1348.00	965.50
चीनी	NCDEX	3672.00	1182.00	3267.00	2680.00
कपास	NCDEX	1262.00	398.90	1105.00	874.00
तिलहन					
क्रूड पाम ऑयल	MCX	632.20	154.20	585.10	426.40
क्रूड पाम ऑयल	BMD	4483.00	430.00	2688.00	2177.00
सोयाबीन	NCDEX	5064.50	1104.50	4276.00	2838.00
सोयाबीन	CBOT	1794.75	401.50	1630.00	1255.00
आरएमसीड	NCDEX	4538.00	1586.25	4290.00	3020.00
रिफाइंड सोयातेल	NCDEX	817.00	337.70	760.80	628.00

* 13 दिसम्बर 2013 तक बंद भाव

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

कमोडिटी कीमतों में बदलाव का दायरा (मेटल और एनर्जी)

कमोडिटी	एक्सचेंज	अब तक का उच्चतम स्तर	अब तक का निचला स्तर	2013 उच्चतम स्तर*	2013 निचला स्तर*
सोना	COMEX	1911.60	252.50	1696.00	1180.00
	MCX	35074.00	5600.00	35074.00	24830.00
चांदी	COMEX	50.35	1.95	32.45	18.14
	MCX	73600.00	7551.00	59974.00	38536.00
कच्चा तेल	NYMEX	147.27	9.75	112.20	85.90
	MCX	7785.00	1626.00	7785.00	4737.00
नेचुरल गैस	NYMEX	15.78	1.04	4.43	3.07
	MCX	591.80	99.50	276.80	176.20
तांबा	MCX	466.20	117.60	512.70	366.40
एल्युमीनियम	MCX	151.50	62.20	133.50	99.10
जिंक	MCX	208.30	49.85	136.90	97.40
लेड	MCX	154.40	40.50	155.40	104.30
निकल	MCX	1416.00	442.30	1004.50	787.50

* 13 दिसम्बर 2013 तक बंद भाव

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

मेटल एवं एनर्जी में फंडामेंटल कॉल का प्रदर्शन 2013 (जनवरी से दिसम्बर)

मेटल एवं एनर्जी एनॉलिस्टः संदीप जून

Sl. No.	Date	Commodity	Contract	Trend Given	Call Initiated Price	Targets	Stop Loss	Remarks	Price movement since call Is initiated (%)
1	7-Jan-13	Lead	Feb	Sell	128.70	120 and 116	133.00	Booked profit at 123.00	4.43
2	7-Jan-13	Zinc	Feb	Sell	112.80	106 and 104	115.50	Booked profit at 108.15	4.12
3	6-Feb-13	Natural gas	March	Buy	185.00	197 and 205	178.00	Stop loss hit	-3.78
4	21-Feb-13	Crude oil	March	Sell	5165.00	4900 and 4800	5280.00	Booked profit at 4950.00	4.16
5	5-Mar-13	Silver	May	Buy	54800.00	59000 and 60000	52900.00	Stop loss hit	-3.47
6	13-Mar-13	Lead	April	Buy	122.00	128	118.00	Exit at 119.80	-1.80
7	13-Mar-13	Zinc	April	Buy	108.00	115	105.50	Exit at 106.50	-1.39
8	2-Apr-13	Natural gas	May	Sell	223.00	202 and 198	232.00	Stop loss hit	-4.04
9	30-Apr-13	Gold	June	Sell	27025.00	25600 and 25400	27800.00	Both target met	6.01
10	30-Apr-13	Silver	July	Sell	45725.00	40000 and 38000	48000.00	Booked profit at 40800.00	10.77
11	14-May-13	Crude oil	June	Sell	5235.00	5000 and 4950	5340.00	Booked profit at 5100.00	2.58
12	22-May-13	Lead	June	Buy	113.50	126 and 128	108.00	Both target met	12.78
13	22-May-13	Zinc	June	Buy	102.60	110 and 114	100.00	Both target met	10.00
14	4-Jun-13	Nickel	July	Buy	865.00	940 and 960	835.00	Stop loss hit	-3.59
15	1-Jul-13	Gold	Oct	Buy	25730.00	27000 and 27500	25300.00	Booked profit at 26471.00	2.88
16	1-Jul-13	Silver	Sep	Buy	40500.00	44000	39100.00	Booked profit at 41680.00	2.91
17	11-Jul-13	Silver	Sep	Buy	41400.00	44000 and 45000	40300.00	Stop loss hit	-2.66
18	25-Jul-13	Crude oil	Sep	Sell	6230.00	5800	6400.00	Stop loss hit	-2.73
19	29-Aug-13	Lead	Sep	Sell	148.30	140 and 137	152.00	First target met	5.60
20	29-Aug-13	Zinc	Sep	Sell	130.40	120 and 118	135.00	Booked profit at 123.00	5.67
21	6-Sep-13	Natural gas	Oct	Sell	244.00	220 and 215	256.00	First target met	9.84
22	15-Oct-13	Lead	Nov	Buy	131.25	140 and 143	128.00	Booked profit at 135.00	3.16
23	15-Oct-13	Zinc	Nov	Buy	118.00	126 and 129	114.50	Booked profit at 119.80	1.69
24	25-Oct-13	Nickel	Nov	Buy	900.00	980	870.00	Exit at 875.00	-2.89

नोटः 1) ये फंडामेंटल कॉल एक से तीन हफ्ते की अवधि के लिए होते है और इसे इंट्रा डे कॉल नही माना जाना चाहिए।

कृषि कमोडिटीज में फंडामेंटल कॉल का प्रदर्शन 2013 (जनवरी से दिसम्बर)

कृषि कमोडिटी एनॉलिस्टः सुब्रानिल डे

S. N.	Date	Commodity	Contract	Trend Given	Call Initiated Price	Targets	Stop Loss closing below/above	Remarks	Price movement since call is initiated (%)
1	29-Jan-13	Coriander	April	Sell	7,021.00	6,250.00	7,335.00	Booked profit at 6435.00	9.11
2	31-Jan-13	CPO	Mar	Buy	460.00	490.00	440.00	Booked profit at 465.00	1.09
3	18-Feb-13	Chilli	April	Sell	7,150.00	6,470.00	7,470.00	Booked profit at 6618.00	8.7
4	26-Feb-13	Pepper	April	Sell	35,100.00	32,325.00	36,545.00	Booked profit at 34270.00	2.42
5	2-Apr-13	Mustard	June	Buy	3,532.00	3,815.00	3,380.00	Booked profit at 3632.00	2.83
6	16-Apr-13	Cocud	June	Sell	1,560.00	1,460.00	1,610.00	Target Met at 1460.00	7.07
7	25-Apr-13	Maize	June	Buy	1,196.00	1,295.00	1,150.00	Exit at 1150.00	-3.85
8	23-May-13	Jeera	July	Buy	13,450.00	14,525.00	12,915.00	Booked profit at 13770.00	2.38
9	18-Jun-13	Kapas	Apr'14	Sell	1,060.00	1,010.00	1,090.00	Exit at 1090.00	-2.75
10	7-Aug-13	Kapas	Apr'14	Buy	992.00	1,050.00	960.00	Target met at 1050.00	5.34
11	16-Aug-13	Chana	Sept	Buy	2,900.00	3,125.00	2,770.00	Booked profit at 3088.00	6.48
12	20-Aug-13	Cocud	Dec	Buy	1,507.00	1,605.00	1,460.00	Stop loss hit	-3.12
13	23-Aug-13	Maize	Oct	Buy	1,268.00	1,340.00	1,225.00	Booked profit at 1340.00	5.44
14	28-Aug-13	Guar Seed	Oct	Buy	5,180.00	5,610.00	4,980.00	Target met at 5610.00	11.97
15	15-Oct-13	CPO	Nov	Buy	521.00	540.00	510.00	Target met at 540.00	3.65
16	17-Oct-13	Soybean	Dec	Sell	3,607.50	3,380.00	3,710.00	Booked profit at 3538.00	1.96
17	24-Oct-13	Mustard	Dec	Buy	3,788.00	4,020.00	3,675.00	Booked profit at 3870.00	3.59

नोटः 1) ये फंडामेंटल कॉल एक से तीन हफ्ते की अवधि के लिए होते है और इसे इंट्राडे कॉल नही माना जाना चाहिए।

Moneywise. Be wise.

भारत में मुद्रास्फीति

% बदलाव

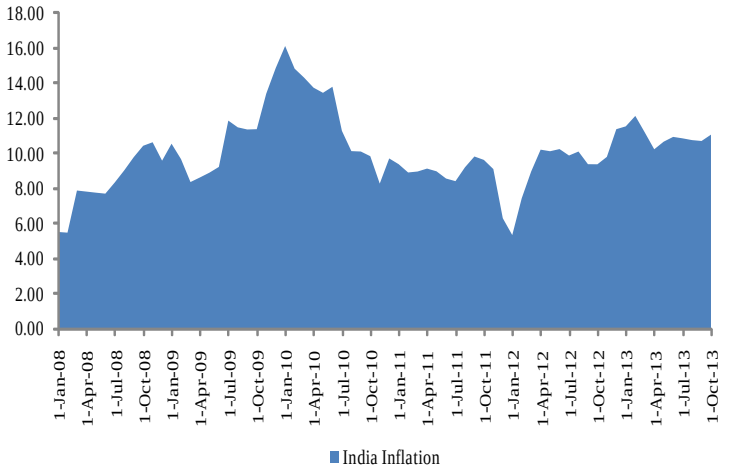

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

अमेरिकी वर्तमान होमसेल्स

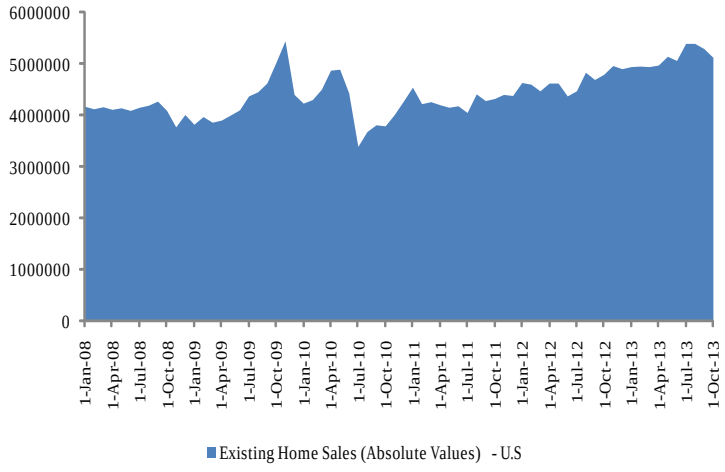

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

अमेरिकी औद्योगिक उत्पादन (वार्षिक)

% बदलाव

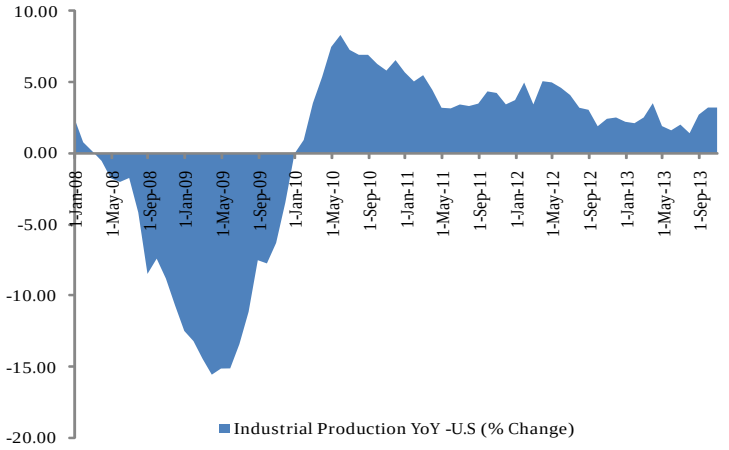

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

नॉन फॉर्म पेरोल-यूएस

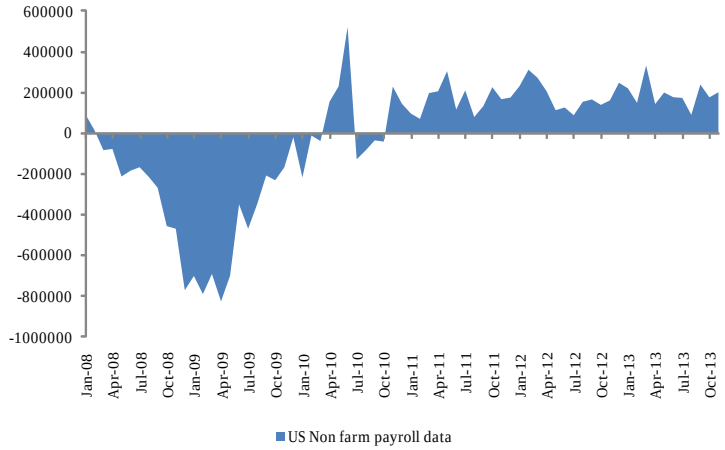

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

अमेरिकी बेरोजगारी दर

% बदलाव

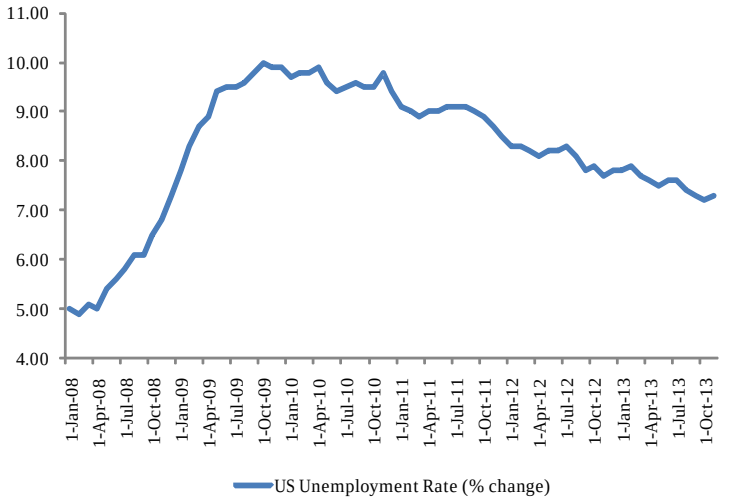

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

अमेरिकी कंज्यूमर कंफिडेन्स इंडेक्स

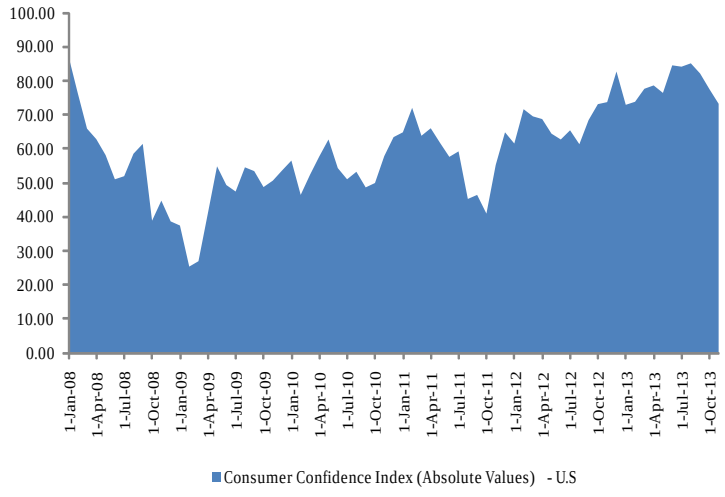

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

NMCE
Trade with the Pioneer
National Multi-Commodity Exchange of India Ltd

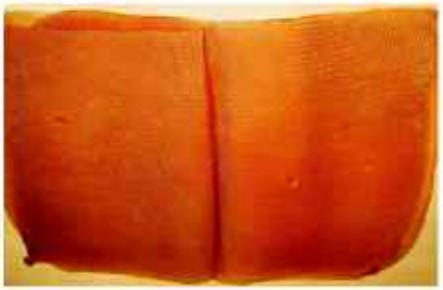

For Membership:-
Contact :- 07940086042/43/18
Email – member@nmce.com

Head Office :-
Office No. 4, 4th Floor, H.K House,
B/h. Jivabhai Chambers, Ashram Road.
Ahmedabad – 380009
Contact 079-40086039/40
Email :- contact@nmce.com
www.nmce.com

Branch Offices :-
Mumbai :-
(+91)8291152111
Bangalore :-
(+91)9845074090

Kochi :-3rd Floor Vasudev Complex,
Palarivattom P.O, Cochin – 682025
(+91)9947256920
Delhi :- Office No. 1008, 10th Floor , New Delhi
House, 27, Barakhamba Road
New Delhi – 110001
(+91) 9910064567

अमेरिकी कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स (Median)

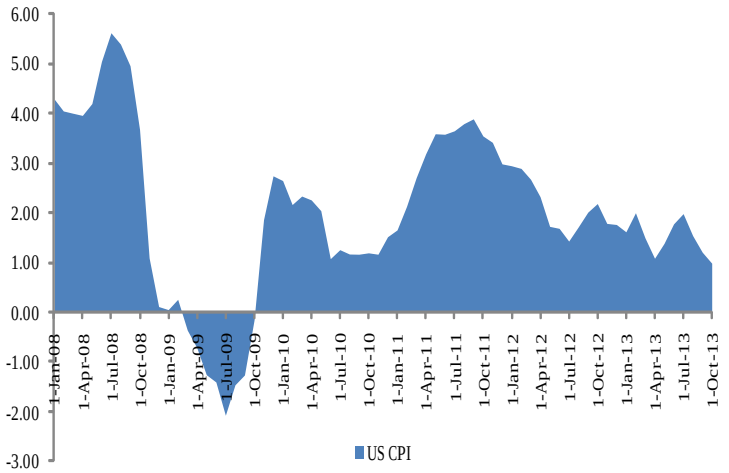

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

बाल्टिक ड्राइ इंडेक्स

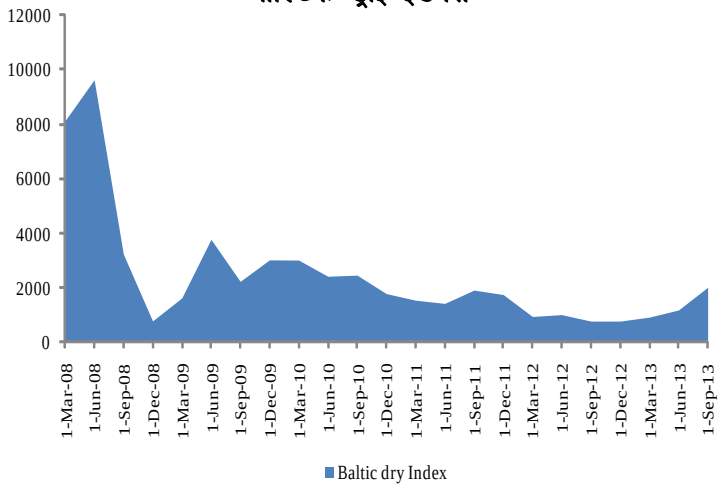

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

जीडीपी – चीन एवं भारत (वार्षिक)

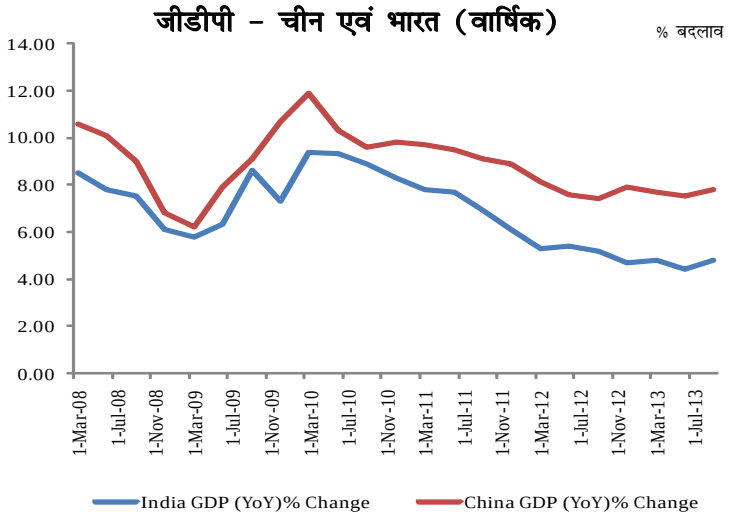

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

जीडीपी – यूरोजोन एवं अमेरिका (वार्षिक)

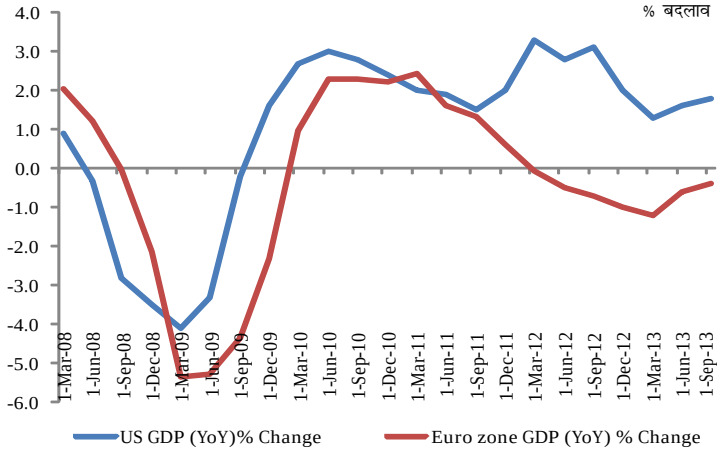

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

पर्चेजिंग मैनेजर इंडेक्स की तुलना – यूएस, चीन एवं यूरो जोन

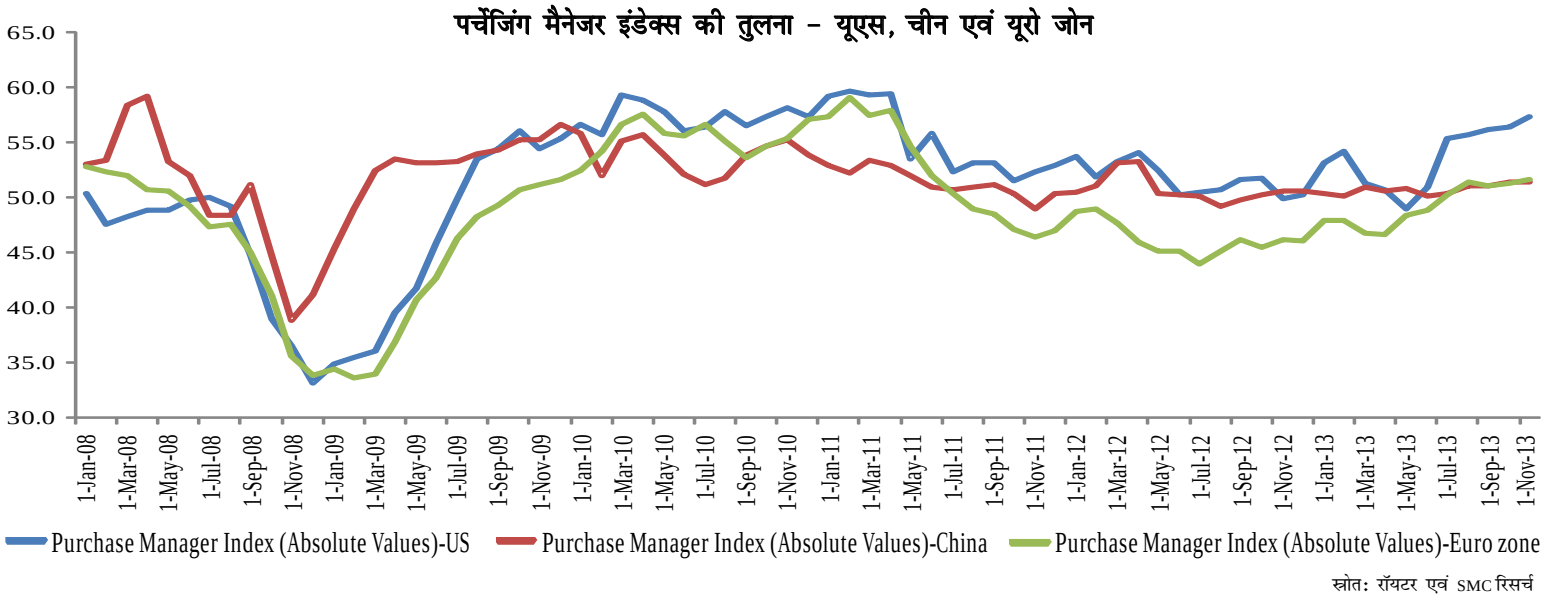

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

वार्षिक समीक्षा 2013: सोना

कोमेक्स में सोने में पिछले 12 वर्षो से चली आ रही तेजी 2013 में थम गई और कीमतें औंधे मुंह लुढ़क गई । कोमेक्स में 2011 में अब तक के उच्चतम स्तर 1915 डॉलर को दर्ज करने के बाद कीमतें फिर से इस जादुई स्तर को पार करने में नाकामयाब रही और 2012 में लगभग 1800 डॉलर के उच्च स्तर तक ही पहुंच सकी । लेकिन 2013 की पहली तिमाही में लगभग 1700 डॉलर से अधिक की ऊंचाई दर्ज करने के बाद मंदड़ियों की पकड़ मजबूती होती गई । दूसरी तिमाही आते-आते कीमतों में सबसे बड़ी लगभग 26% की गिरावट दर्ज की गई ।

क्वांटिटिव इजिंग की समाप्ति के भय, सुरक्षित निवेश के रूप में खरीददारी में कमी, जोखिम वाले एसेट से बेहतर कमाई, विश्व स्तर पर राजनीतिक तनावों में कमी, ईरान और पश्चिमी देशों के बीच समझौता, कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट और साइप्रस द्वारा बिकवाली की खबरों के कारण कीमतों पर दबाव पड़ा । एसपीडीआर गोल्ड ईटीएफ (एक्सचेंज ट्रेडेड फंड) की होल्डिंग में भारी गिरावट से भी सर्राफा में बिकवाली के दबाव को बढ़ावा मिला । भारी क्वांटिटिव इजिंग की नीति, धीमी आर्थिक विकास दर, करेंसी एसेट में गिरावट वैश्विक अनिश्चितता और राजनीतिक एवं सैन्य तनावों के मुकाबले सोने को हेज माना जाता है। अमेरिकी बजट संकट को लेकर छोटी अवधि के प्रस्ताव और भारत द्वारा सोने के आयात शुल्क में बढ़ोतरी कीमती धातु के लिए अच्छी खबर नही थी ।

घरेलू बाजार में रूपये की कमजोरी ने सोने का बचाव किया और इसकी कीमतों में वर्ष के मध्य में 25000 रू तक की गिरावट दर्ज करने के बाद फिर से उछाल दर्ज की गई । जुलाई और अगस्त में सोने की कीमतों में उछाल दर्ज की गई और केवल दो महीने में लगभग 25500 रू के निचले स्तर से 37% की तेज उछाल के साथ लगभग 35000 रू ऊपर पहुंच गई । इसी अवधि में भारत के बढ़ते राजकोषीय घाटे के बीच रूपये में लगभग 17% की गिरावट दर्ज की गई । इसके अतिरिक्त भारत द्वारा सोने के आयात शुल्क में बढ़ोतरी के कारण भी कीमतों को मदद मिली । लेकिन अगले दो महीने सितम्बर और अक्टूबर में भारी बिकवाली के दबाव के कारण एमसीएक्स में कीमतों में 17% की गिरावट हुई क्योंकि इस दौरान रूपये में 11% की तेजी दर्ज की गई । भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा 22 जुलाई को आयातकों को अपने कुल आयात के लगभग 20% निर्यात करने और 80% घरेलू इस्तेमाल के निर्देश के बाद भारत में सोने का आयात लगभग रूक गया था।

इस बीच तुर्की जैसे कुछ देशों ने पिछले पांच महीने में सबसे अधिक अगस्त में सोने की खरीददारी की है और सोना खरीदने वालों की सूची में शीर्ष पर पहुंच गया । अमेरिकी अर्थव्यवस्था में थोड़ी रिकवरी दर्ज की गई है और पहली तिमाही की तुलना में दूसरी तिमाही में यह तेज रफ्तार से बढ़ी है और यह रफ्तार 2.5% वार्षिक रही है।

सितम्बर में एफओएमसी ने चिंता जतायी कि उधारी लागत (Borrowing cost)में तेज उछाल से अर्थव्यस्था पर दबाव बढ़ सकता है। 18 दिसम्बर 2013 को हुई बैठक में फेडरल रिजर्व चेयरमैन बर्नान्के ने एसेट खरीद योजना में कटौती का फैसला करते हुए मासिक बांड खरीद योजना को 85 बिलियन डॉलर से कम करके 75 बिलियन डॉलर कर दिया। फेडरल रिजर्व ने दोहराया कि जब तक बेरोजगारी घटकर कम से कम 6.5% से कम नही हो जाती, तबतक ब्याज दरों में बढ़ोतरी करना शुरू नही किया जा सकता है क्योंकि मुद्रास्फीति की दर के 2.5% से ऊपर जाने का खतरा नही है ।

भारत ने चालू खाते के घाटे को कम करने के लिए विदेशों से खरीद रोकने के बजाय घरेलू आभूषण बाजार को सुरक्षा प्रदान करने के लिए सितम्बर में सोने के आभूषणों पर आयात शुल्क 10% से बढ़ाकर 15% कर दिया है। लेकिन सोने के आयात पर 10% शुल्क में कोई बदलाव नही किया गया । भारत के वायदा बाजार में सोने का कारोबार बैकवॉर्डेशन में हुआ है जो सोने के कारोबार में कभी कभार ही देखने को मिलता है और यह वैवाहिक और त्योहारी मांग के लगातार बने रहने के कारण हुआ है।

वर्ष के अंतिम दो महीने में सोने की कीमतें एक दायरे में स्थिर रही क्योंकि स्टीमुलस में कटौती की आशंका से बढ़त पर रोक लगी जबकि चीन की ओर से मांग में वृद्धि के कारण कीमतों को मदद मिली ।

वार्षिक आउटलुक 2014

सोना **दायरा: एमसीएक्स: 25000-35000 रु**

कोमेक्स: 1100-1500 डॉलर

2013 में अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने में रहा नरमी का सेंटीमेंट 2014 में कमजोर हो सकता है क्योंकि 2014 की दूसरी तिमाही के बाद सोने में निचले स्तर पर खरीददारी हो सकती है। सुरक्षित निवेश के रूप में खरीददारी के अभाव और विश्व स्तर पर शेयर बाजारों के बेहतरीन प्रदर्शन के कारण 2013 में बिकवाली के दबाव को बढ़ावा मिला था लेकिन 2014 में विश्व स्तर पर बड़े आर्थिक कारकों में फिर से कमजोरी उभरने की संभावना है जिससे सोने को अपनी खोई जमीन फिर से प्राप्त करने में मदद मिलेगी । ऐसा लगता है कि 2014 में क्वांटिटिव इजिंग में कटौती की संभावना का असर पहले ही सोने की कीमतों में गिरावट के रूप में देखा जा चुका है, जिसकी शुरूआत 18 दिसम्बर 2013 की बैठक के फैसले से हुई और मासिक बांड योजना को 85 बिलियन डॉलर से कम करके 75 बिलियन डॉलर कर दिया गया है। इस बीच रूपये-डॉलर के कारोबार पर भी पैनी नजर रखी जाएगी क्योंकि 2013 में रूपये के कमजोर होने से घरेलू बाजार में कीमतों को काफी मदद मिली है। 2014 में डॉलर के मुकाबले रूपया 55-68/डॉलर के दायरे में रह सकता है।

भारत ने अप्रैल-सितम्बर के दौरान 3.34 बिलियन डॉलर के सोने के आभूषणों का निर्यात किया है जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 58.34% कम है। इसी अवधि में रत्नों और आभूषणों का कुल निर्यात 15.91% घटकर 16.54 बिलियन डॉलर का रह गया है।

चालू खाते के घाटे और सोने के आयात को कम करने के लिए भारत सरकार ने सोने पर आयात शुल्क बढ़ाकर 10% कर दिया और आरबीआई ने बैंकों द्वारा किए जाने वाले आयात पर कई तरह की शर्त्ते थोप दी । आयातक कंपनियों के लिए यह अनिवार्य बना दिया गया कि घरेलू बाजार में सोने की सप्लाई करने से पहले निर्यात ऑर्डर को पूरा करना होगा । लेकिन 2013 की दूसरी छमाही में सोने के आयात में भारी गिरावट के बाद सरकार द्वारा 2014 में सोने के आयात को महंगा करने वाले प्रतिबंधों में कुछ छूट दिए जाने की संभावना है।

2013-14 में भारत का सोना आयात 40% की गिरावट के साथ 500 टन होने की संभावना है जिससे सरकार को बड़ी राहत मिलेगी, जो चालू खाते के घाटे को कम करने और रूपये को स्थिर करने की कोशिश में जुटी हुई है। सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक दोनों के द्वारा सोने के आयात को कम करने के लिए उठाए गए कदमों का असर दिखने लगा है और अक्टूबर 2013 तक लगभग कुल 400 टन सोने का ही आयात हो सका हैं । 2012-13 में भारत ने लगभग 835 टन सोने का आयात किया था जिसके कारण भारत के चालू खाते का घाटा बढ़कर 88.2 बिलियन डॉलर हो गया है, जो जीडीपी का 4.8% है।

सरकार द्वारा सोना आयात पर प्रतिबंधों के बाद सप्लाई में कमी के कारण घरेलू बाजार में सोने पर प्रीमियम 80-120 डॉलर/औंस हो गया । 2014 में भी प्रीमियम के कारण घरेलू बाजार में सोने की कीमतों की गिरावट पर रोक लग सकती है।

चीन में सोने की बढ़ती मांग से भी इस वर्ष कीमतों को मदद मिल सकती है क्योंकि 2013 में खपत के हिसाब से चीन भारत से आगे निकल गया है। लेकिन लम्बी अवधि के हिसाब से चीन में सोने की मांग की रफ्तार वह नही रह सकती है जैसा कि वित्तीय संकट के प्रारंभ से रही है क्योंकि चीन में सोने के उपभोक्ता भारतीय उपभोक्ताओं की तरह सांस्कृतिक स्तर पर सोने के प्रति आकर्षित नही है। इसके साथ ही 2013 में मांग में हुई कमी की भरपायी इस वर्ष हो सकती है।

केन्द्रीय बैंकों द्वारा सोने की खरीददारी से भी कीमतों को नयी दिशा मिलने की संभावना है। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल के अनुसार 2013 में केन्द्रीय बैंकों द्वारा सोने की कुल खरीददारी 350 टन हो सकती है जबकि 2012 में केन्द्रीय बैंकों ने 1964 के बाद सबसे अधिक 534.6 टन सोने की खरीददारी की थी । आईएमएफ के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार वित्तीय संकट शुरू होने के बाद 2013 के पहले आठ महीने में केन्द्रीय बैंकों द्वारा सोने की खरीददारी धीमी हुई है।

ईटीपी (एक्सचेंज ट्रेडेड प्रॉडक्ट) की होल्डिंग एक अन्य कारक है जिससे मध्यम अवधि में सोने की कीमतें प्रभावित होंगी क्योंकि सोने की ईटीपी होल्डिंग ने 2013 में मांग और सप्लाई की स्थिति को काफी प्रभावित किया है। 2013 में ईटीपी होल्डिंग सोने की सप्लाई का प्रमुख माध्यम बन गया था और नवम्बर तक 650 टन सोने की निकासी हुई है जो 2012 में विश्व स्तर पर सोने की कुल सप्लाई का 17% है।

मध्य-पूर्व के सामरिक तनाव और विश्व के किसी अन्य हिस्से में तनाव से सोने की कीमतें प्रभावित हो सकती हैं क्योंकि विश्व स्तर पर सामरिक अनिश्चितता के दौर में सोने को सुरक्षित निवेश माना जाता है। नवम्बर में ईरान को लेकर हुए समझौते के बाद तनाव कुछ हद तक कम हुआ है । इस समझौते के तहत ईरान को परमाणु गतिविधियां सीमित करने के बदले अगले छह महीने तक 7 बिलियन डॉलर के आर्थिक प्रतिबंध की छूट दी गई है।

डॉलर इंडेक्स के कारोबार से 2014 में सोने की कीमतें प्रभावित होंगी और यह 79-84 के दायरे में कारोबार कर सकता है।

अमेरिका में फिस्कल क्लिफ, जिसे फरवरी 2014 तक बढ़ाया गया है, से भी सोने की कीमतें प्रभावित होंगी। पिछले वर्ष कर्ज संकट का शीघ्र समाधान नही होने के कारण अमेरिकी सरकार को लगभग महीने भर कामबंदी का सामना करना पड़ा । पिछले वर्ष अमेरिकी कांग्रेस कर्ज की सीमा बढ़ाए जाने को लेकर अंतिम समय में समझौते पर पहुंची, जिसके चलते अमेरिकी सरकार संभावित डिफाल्ट को टाल सकी । इस समझौते के तहत अमेरिकी सरकार के उधार लेने के अधिकार को 7 फरवरी 2014 तक के लिए बढ़ा दिया गया जबकि सरकार को 15 जनवरी 2014 तक ही फंड प्रदान किया जाएगा ।

विनिर्माण और ईटीएफ के लिए अधिक मांग के साथ ही खदानों पर लागत के दबाव के कारण 2014 में सोने की कीमतों को मदद मिल सकती है।

2014 में आभूषणों के लिए सोने की मांग से भी कीमतों को मदद मिल सकती है। 2013 की तीसरी तिमाही में आभूषणों के लिए सोने की मांग पांच वर्षो के उच्च स्तर पर पहुंच गई क्योंकि कीमतों में भारी गिरावट के बाद विश्व स्तर पर काफी सकारात्मक प्रतिक्रिया हुई । 2013 की तीसरी तिमाही में एशियाई देशों में हुई कुल 155 टन की मांग में से लगभग 120 टन की मांग भारत और चीन की ओर से हुई है।

2013 में निवेश मांग के दो वर्षो के निचले स्तर पर पहुंचने के बाद 2014 में उछाल दर्ज की जा सकती है। सुरक्षित निवेश के रूप में खरीददारी के कारण 2014 की दूसरी तिमाही के बाद एसपीडीआर जैसे सोने के ईटीएफ के निवेश में उछाल दर्ज की जा सकती है। भारत में सोने का कारोबार बहुत कुछ रूपये के कारोबार और घरेलू बाजार में सोने की सप्लाई पर निर्भर करता है, जो सरकार द्वारा आयात शुल्क में बढ़ोतरी के कारण कम हो गई है और इस प्रकार प्रीमियम में वृद्धि हुई है।

2014 में कोमेक्स में सोने की कीमतों को 1100 डॉलर पर अहम सपोर्ट और 1500 डॉलर के स्तर पर रेजिस्टेंस रह सकता हैं । 2014 में घरेलू बाजार में यदि रूपया मजबूत होता है तो एमसीएक्स में सोने की कीमतों पर दबाव पड़ सकता है । एमसीएक्स में सोने की कीमतों को 25000 रू पर अहम सपोर्ट और 35000 रू के स्तर पर रेजिस्टेंस रह सकता हैं ।

सोना वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (MCX)

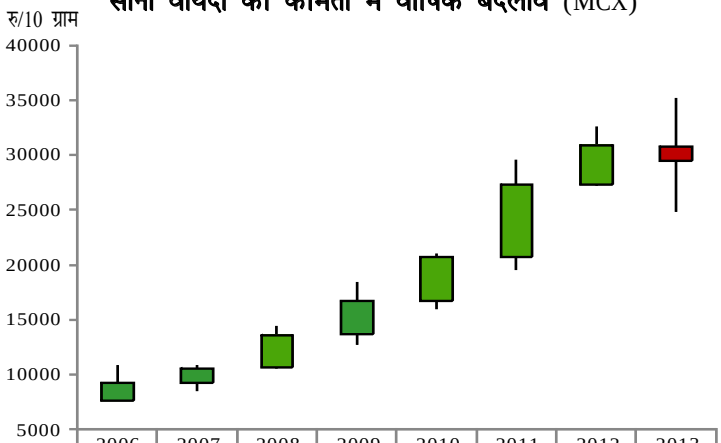

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	7636	9251	10609	13699	16683	20740	27300	30818
High	10763	10720	14320	18294	20924	29433	32464	35074
Low	7627	8542	10582	12731	15950	19515	27170	24830
Close	9265	10598	13630	16686	20728	27329	30859	29445*

*बंद भाव 13 दिसम्बर 2013 के अनुसार

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

भारत का सोना आयात (% वार्षिक बदलाव)

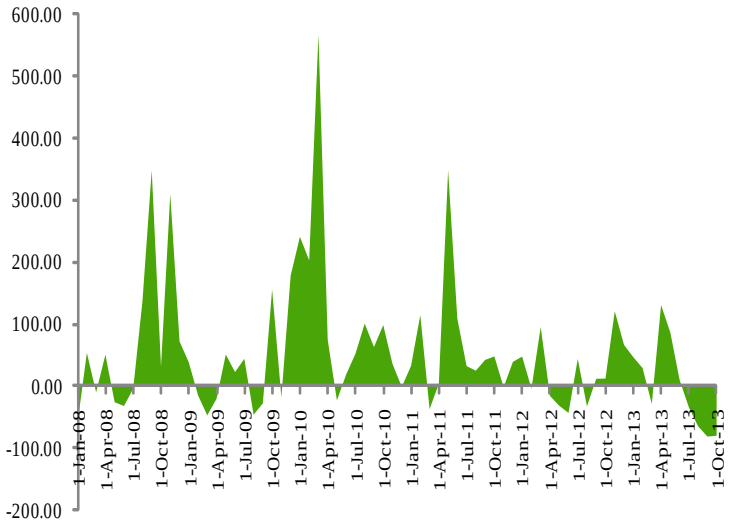

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

डॉव एवं सोना अनुपात

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

सोना एवं कच्चे तेल का अनुपात (COMEX)

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

वार्षिक समीक्षा 2013: चांदी

घरेलू बाजार में सोने की तरह चांदी में भी पिछले वर्ष काफी अस्थिरता रही । 2013 के प्रारंभ से कोमेक्स में चांदी की कीमतों में 36% से अधिक और एमसीएक्स में लगभग 24% की गिरावट हुई । बेस मेटल और कीमती धातु की दोहरी प्रकृति के चलते बेस मेटल में नरमी के कारण भी चांदी की कीमतों पर दबाव पड़ा । 2013 की पहली छमाही में मंदड़ियों का दबाव रहा, जिसके कारण कीमतें लगभग 60000 रू के स्तर से लुढ़ककर जून में 39000 रू से नीचे आ गई। लेकिन केवल अगस्त महीने में दर्ज तेजी के कारण पिछले छह महीने में हुए नुकसान की भरपायी हो गई और रूपये के कमजोर होने के कारण कीमतें फिर से 60000 रू के स्तर पर पहुंच गई । क्वांटिटिव इजिंग की समाप्ति की आशंका जैसे वैश्विक आर्थिक घटनाक्रमों के कारण भी 2013 में बढ़त पर रोक लगी ।

घरेलू बाजार में सोने की तुलना में चांदी की कीमतों में अधिक तेजी से गिरावट हुई । 2013 में सोने की कीमतों में लगभग 5% की जबकि चांदी की कीमतों में 24% की गिरावट दर्ज की गई।

अक्टूबर में एफएमओसी की हुई बैठक के बाद जारी मिनट के अनुसार यदि आर्थिक स्थिति में अनुमान से अधिक सुधार होता है तो केन्द्रीय बैंक द्वारा आगामी महीने में 85 बिलियन डॉलर के एसेट खरीद योजना में कटौती किए जाने की संभावना से 2013 की अंतिम तिमाही में चांदी की कीमतों में कमजोर सेंटीमेंट बरकरार रहा ।

ईरान के परमाणु मुद्दे पर और सीरिया संकट के समाधान के बाद मध्य-पूर्व के तनाव के कम होने के कारण 2013 की तीसरी तिमाही और अंतिम तिमाही में मंदड़ियों का वर्चस्व बना रहा । नवम्बर 2013 में अमेरिका और विश्व के अन्य पांच शक्तिशाली देशों का ईरान के साथ जेनेवा में बातचीत के बाद हुए समझौते का पहला कदम यह है कि ईरान को परमाणु कार्यक्रम की प्रगति को सीमित करने के बदले आर्थिक प्रतिबंधों में ढील दी जाएगी ।

2013 में चांदी की कीमतों में गिरावट जारी रहने से चांदी के खनन पर भी दबाव पड़ा । यह उन खदानों के बारे में विशेष रूप से सच है जो अधिक कीमतों के कारण पहले से ही मुनाफा अर्जित करने में असमर्थ थे, जैसे कोयर डी'एलन खदान। चांदी की कम कीमतों के कारण अमेरिका में चांदी के सिक्कों की बिक्री को बढ़ावा मिला और 2013 में अमेरिकी ईगल की चांदी के सिक्कों की बिक्री 2011 में हुई 39868000 औंस की रिकॉर्ड बिक्री से अधिक हो गई । 7 जनवरी 2013 को जब चांदी के सिक्कों की बिक्री शुरू हुई, तब पहले ही दिन कुल 3937000 सिक्कों का ऑर्डर मिला, जो अमेरिकी ईगल चांदी के सिक्कों की एक दिन में सबसे अधिक बिक्री है।

वार्षिक आउटलुक 2014

चांदी **दायरा: एमसीएक्स: 36000-60000 रु**

कोमेक्स: 17-28 डॉलर

चांदी, जिसे गरीबों का सोना माना जाता है, पर पिछले वर्ष घरेलू बाजार और कोमेक्स दोनों में भारी बिकवाली का दबाव रहा। चांदी की कीमतें अक्सर सोने और बेस मेटल की कीमतों का अनुसरण करती हैं क्योंकि इसकी विशेषताएं दोहरी प्रकृति की हैं।

भारत में 2013 में सोने की कीमतों में लगभग 5% की गिरावट हुई है लेकिन चांदी की कीमतों में 24% से अधिक की गिरावट हुई है , जिससे पता चलता है कि सोने की तुलना में चांदी अधिक सस्ती हुई है और 2014 में भारत का मध्य वर्ग चांदी की खरीददारी कर सकता है और चांदी की फिजिकल मांग बढ़ सकती है।

चांदी के ईटीएफ की मांग में पिछले वर्ष की तरह 2014 में वृद्धि होने की संभावना है। वैश्विक आर्थिक परिदृश्य से भी चांदी की कीमतें प्रभावित होती है और अमेरिकी रोजगार के आंकड़ों और हाउसिंग आंकड़ों से कीमतें प्रभावित होंगी । 2014 की दूसरी तिमाही के बाद चांदी की कीमतों में बढ़त दर्ज की जा सकती है।

इस बीच विभिन्न अनुप्रयोगों में चांदी के बढ़ते इस्तेमाल से भी फिजिकल मांग को मदद मिल सकती है। बायोटेक्नोलॉजी के क्षेत्र में नवीनतम अनुसंधानों के कारण दवाओं के रूप में चांदी का सदियों पुराना इतिहास एक बार फिर से केन्द्र में आ गया है। सिल्वर इंस्टीट्यूट का मानना है कि चांदी के औषधीय इस्तेमाल से एंटीबायोटिक प्रतिरोधी कीटाणुओं के फैलने का खतरा कम करने में मदद मिलती है। आजकल एंटीबायोटिक प्रतिरोधी कीटाणुओं के फैलाव को रोकने और अस्पतालों में होने वाले संक्रमण को रोकने के लिए चांदी युक्त उपकरणों के इस्तेमाल का महत्व बढ़ता जा रहा है। मोटरोला अपने अनेक मोबाइल फोनों के लिए प्लास्टिक कवर बनाने के लिए चांदी का इस्तेमाल कर रही है। कैल्कुलेटर और पेंट के निर्माण में निर्माता अब चांदी का इस्तेमाल एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में कर रहे हैं। पेंट को फफूंद, कवक और जीवाणुओ के खिलाफ अधिक प्रभावी बनाने के लिए चांदी का उपयोग किया जाता है।

विश्व स्तर पर चांदी के सिक्कों की बढ़ती लोकप्रियता से चांदी की कीमतों को मदद मिलने की संभावना है । लेकिन सोने की कीमतें इतनी अधिक बनी रह सकती है कि सोने के सिक्के सामान्य निवेशकों की पहुंच से बाहर ही रहने की संभावना हैं । चांदी के सिक्के अपेक्षाकृत सस्ते रहेंगें। अमेरिकी सरकार के अमेरिकी ईगल सोने और चांदी के बेहतरीन डिजाइन और सुन्दर सिक्कों की मांग हाल ही में काफी बढ़ी है।

चांदी के मांग और सप्लाई का फंडामेंटल कमजोर रहने वाला है और भंडार पर्याप्त है। आभूषणों के लिए मांग के कारण चीन का चांदी भंडार 18 महीने के उच्च स्तर पर रहने वाला है जबकि 2012 के शुरू में यह 16 महीने और 2009 में 4 महीने के उच्च स्तर पर था।

चांदी के औद्योगिक स्क्रैप का हमेशा पुनर्चक्रण नही होता है क्योंकि चांदी के नये उत्पादन की तुलना में पुनर्चक्रण की लागत अधिक होती है। इस कारण सोने की तुलना में चांदी अधिक दुर्लभ होती है और यह दुर्लभता बढ़ती जा रही है। अंत: सप्लाई की कमी और बढ़ते इस्तेमाल के कारण 2014 में कीमतों को मदद मिल सकती है।

सिल्वर इंस्टीट्यूट के अनुसार अमेरिका और एशिया में चांदी की अधिक औद्योगिक मांग एक अहम कारक है जिससे 2015 तक मांग में बढ़ोतरी होती रह सकती है । भारत और चीन जैसे विकासशील देशों की ओर से बेहतर मांग के कारण भी कीमतों को मदद मिल सकती है।

2014 में सोने-चांदी के अनुपात के 50-70 के दायरे में रहने की संभावना है। 2014 में कोमेक्स में चांदी की कीमतों को 17 डॉलर पर और एमसीएक्स में 36000 रू पर अहम सपोर्ट रहने की उम्मीद है जबकि कोमेक्स में 28 डॉलर और एमसीएक्स में 60000 रू के स्तर पर रेजिस्टेंस रह सकता है ।

चांदी वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (MCX)

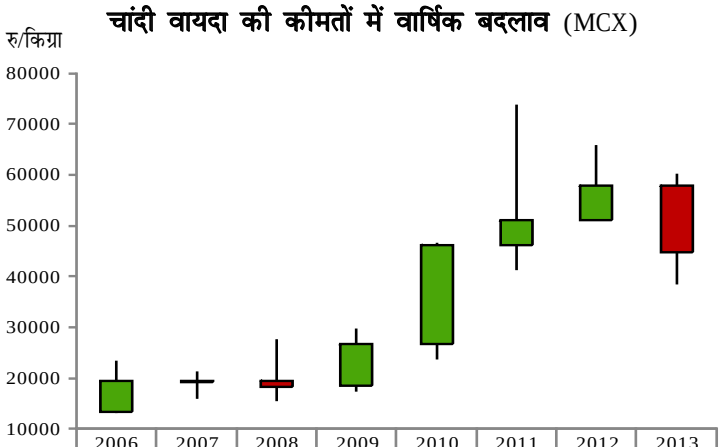

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	13290	19400	19422	18475	26730	46250	51000	57851
High	23148	21174	27500	29580	46383	73600	65723	59974
Low	13037	15975	15539	17392	23610	41280	51000	38536
Close	19424	19463	18355	26771	46217	51029	57864	44723*

*बंद भाव 13 दिसम्बर 2013 के अनुसार

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

सोना एवं चांदी का अनुपात (COMEX)

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

वार्षिक समीक्षा 2013: कच्चा तेल

कच्चे तेल को किसी भी अर्थव्यवस्था का जीवन आधार माना जाता है। 2013 में कच्चे तेल की कीमतों में जोरदार तेजी दर्ज की गई और नाइमेक्स में 86-112 डॉलर और एमसीएक्स में 4740-7700 रू के दायरे में कारोबार हुआ ।

नाइमेक्स में कच्चे तेल की कीमतों में सबसे अधिक वृद्धि जून से अगस्त के बीच हुई जबकि रूपये के कमजोर होने और मध्यपूर्व के तनाव के कारण मई से अगस्त के चार महीने में एमसीएक्स में लगभग 63% की वृद्धि हुई । अगस्त में नाइमेक्स में कच्चे तेल की कीमतें 112 डॉलर के उच्च स्तर पर और एमसीएक्स में 7700 के स्तर पर पहुंच गई।

विश्व स्तर पर तनावों के कारण कच्चे तेल के प्रीमियम में वृद्धि हुई । मिस्त्र में नयी सरकार की स्थापना को लेकर सैन्य कार्रवाई और लीबिया में तनाव से कीमतों को मदद मिली । पूर्वी लीबिया में श्रमिकों के प्रदर्शन से अगस्त 2013 में कुछ तेल बंदरगाहों को बंद करना पड़ा । अरब देशों में बदलाव के आंदोलनों के बाद की सरकारों को अपने वादे पूरा करने में कठिनाई के कारण भी तेल बाजार पर दबाव बना रहा ।

2013 के अधिकांश समय में सीरिया केन्द्र में बना रहा और इस बात की आशंका थी कि सीरिया में जारी हिंसा की आग मध्य-पूर्व के अन्य तेल समृद्ध देशों में फैल सकता है।

सितम्बर 2013 से नवम्बर के बीच एमसीएक्स और नाइमेक्स में कीमतों में तेजी से गिरावट हुई । इन तीन महीनों में नाइमेक्स में कीमतों में लगभग 22% और एमसीएक्स में 16% की गिरावट हुई । हाइड्रोलिक फ्रैक्चरिंग टेक्नोलॉजी के कारण अमेरिका में तेल का उत्पादन बढ़ा है। अमेरिकी कारपोरेट के तिमाही नतीजों के निराशाजनक रहने से भी सेंटीमेंट पर दबाव पड़ा ।

मौद्रिक स्टीमुलस में कटौती के भय से कच्चे तेल की कीमतों की बढ़त पर रोक लगी । फेड चेयरमैन बेन बर्नान्के ने कहा है कि केन्द्रीय बैंक 85 बिलियन डॉलर की मासिक बांड खरीद योजना में कटौती कर सकता है और यदि अर्थव्यवस्था में सुधार होता है तो 2014 के मध्य तक समाप्त कर सकता है ।

दिसम्बर 2013 में कीमतों में कुछ हद तक स्थिरता रही क्योंकि जाड़े के मौसम में मांग और भंडार में गिरावट के कारण कीमतों को मदद मिली । जनवरी 2014 से कुशिंग, ओक्लोहामा के भंडारण केन्द्र से गल्फ तट तक पाइपलाइन शुरू होने से कच्चे तेल के भंडार में कमी की संभावना से कीमतों में वृद्धि दर्ज की गई ।

वार्षिक आउटलुक 2014

कच्चा तेल

दायरा: एमसीएक्स: 4500-7000 रु

नाइमेक्स: 75-115 डॉलर

'काला सोना' के रूप में विख्यात कच्चे तेल में 2014 में उतार-चढ़ाव के साथ कारोबार होने की उम्मीद है क्योंकि भूराजनीतिक तनावों, बड़े आर्थिक आंकड़ों और अमेरिकी स्टीमुलस में कटौती के साथ ही डॉलर के कारोबार जैसे कारकों से कच्चे तेल के निवेशकों का सेंटीमेंट प्रभावित होगा । घरेलू बाजार में रूपये के कारोबार का भी 2014 में एक निर्णायक कारक होगा क्योंकि रूपये के कमजोर होने से 2013 में कीमतें रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई थी।

2014 में फेड द्वारा कटौती का मुद्दा भी कच्चे तेल की कीमतों के लिए अहम कारक होगा। 2013 की अंतिम तिमाही में अमेरिकी जीडीपी आंकड़ों में सुधार के बाद हाल ही में फेड ने मासिक बांड खरीद योजना को 85 बिलियन डॉलर से कम करके 75 बिलियन डॉलर करने की घोषणा की है।

विश्व तेल बाजार एक नए दौर से गुजरने वाला है । पिछले एक दशक में पहली बार चीन और भारत जैसे विकासशील देशों की तुलना में अमेरिकी मांग में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है। नवम्बर 2013 में परमाणु मुद्दे पर ईरान और पश्चिमी देशों के बीच समझौता हो जाने और ईरान पर इजरायली या अमेरिकी हवाई हमले की संभावना के समाप्त हो जाने से मध्य-पूर्व में तनाव की स्थिति समाप्त हो गई ।

लीबिया और ईरान में कच्चे तेल के उत्पादन में वृद्धि होने के कारण 2014 में सऊदी अरब तेल के उत्पादन में कमी कर सकता है, जिससे रिजर्व क्षमता में बढ़ोतरी होगी । तेल की मांग में थोड़ी वृद्धि को विश्व स्तर पर अधिक सप्लाई द्वारा संतुलित किया जा सकता है, खासतौर से, यदि अमेरिका में कच्चे तेल के उत्पादन में वृद्धि जारी रहती है । चीन की ओर से कच्चे तेल की मांग कीमतों की दिशा तय करने में एक अहम कारक होगा क्योंकि नवम्बर 2013 में चीन में 23.56 मिलियन टन कच्चे तेल का आयात हुआ है ।

ईआईए (अमेरिकी एनर्जी इंफॉर्मेशन एडमिनिस्ट्रेशन) का अनुमान है कि 2012 में विश्व स्तर पर कच्चे तेल की खपत 89.2 मिलियन बैरल/दिन हुई थी और 2013 और 2014 दोनों में 1.1 मिलियन बैरल/दिन की बढ़ोतरी होने की संभावना है। चीन, मध्य-पूर्व, मध्य और दक्षिण अमेरिका और आर्थिक सहयोग और विकास संघ के बाहर के देशों में खपत बढने की संभावना है। आर्थिक सहयोग और विकास संघ के देशों की खपत में 2013 में 0.1 मिलियन बैरल/दिन और 2014 में 0.2 मिलियन बैरल/दिन की कमी का अनुमान है।

2014 में विश्व स्तर पर द्रव ईंधन की कुल खपत वृद्धि में 30000 बैरल/दिन की कमी हो

सकती है। ईआईए का अनुमान है कि इस वर्ष गैसोलीन की खपत में 0.4% की कमी हो सकती है। कम खपत वाले नये वाहनों में लगातार वृद्धि से खपत में कमी हो सकती है। 2014 में जापान में भी तेल की मांग में 0.13 मिलियन बैरल/दिन की कमी दर्ज किए जाने का अनुमान है क्योंकि जापान तेल के स्थान पर अन्य ऊर्जा स्रोतों के इस्तेमाल को बढ़ावा देना जारी रखा है ।

ईआईए का अनुमान है कि 2013 में ओपेक देशों में द्रव ईंधन का उत्पादन 0.8 मिलियन बैरल/दिन की गिरावट के साथ 35.9 मिलियन बैरल/दिन हो सकता है और 2014 में भी उत्पादन इसी के आसपास हो सकता है। ईआईए का अनुमान है कि 2014 के प्रारंभ में सऊदी अरब तेल के उत्पादन में कटौती करना शुरू करेगा क्योंकि तेल उत्पादन में पैदा हुई कुछ अड़चने दूर हो गई है और गैर ओपेक देशों की ओर से सप्लाई में वृद्धि जारी है। 2012 में औसतन 52.7 मिलियन बैरल/दिन तेल उत्पादन करने वाले गैर ओपेक देशों में द्रव ईंधन के उत्पादन में 2013 में 1.6 मिलियन बैरल/दिन और 2014 में 1.5 मिलियन बैरल/दिन की बढ़ोतरी का अनुमान है।

ईआईए का अनुमान है कि अमेरिका में कच्चे तेल का उत्पादन 2012 के औसतन प्रतिदिन 6.5 मिलियन बैरल से बढ़कर 2013 में औसतन प्रतिदिन 7.5 मिलियन बैरल और 2014 में औसतन प्रतिदिन 8.5 मिलियन बैरल हो जाने का अनुमान है।

विश्व स्तर पर वास्तविक जीडीपी में वृद्धि 2013 के 2.4% से बढ़कर 2014 में 3.1% हो जाने का अनुमान है, जो 2010 के बाद सबसे अधिक होगा । विकसित देशों की वृद्धि दर 2013 के 1.1% से बढ़कर 2014 में लगभग 2.0% हो जाने का अनुमान है। 2014-15 में अमेरिका और यूके की वृद्धि दर लगभग 3% रहने की संभावना है। 2014 में जापान की वृद्धि दर में भी अच्छी खासी बढ़ोतरी की उम्मीद है । विश्व स्तर पर जीडीपी में वृद्धि कच्चे तेल की कीमतों के लिए मददगार हो सकती हैं।

इसके अतिरिक्त कच्चा तेल केवल एनर्जी नही है, यह एक वैकल्पिक निवेश, खासतौर से इंस्टीट्यूशनल निवेशकों(हेज फंड, निवेश फंड और अधिक संपत्ति वाले निवेशकों) के लिए, का जरिया भी है। इसलिए इन निवेशकों द्वारा पोर्टफोलियो में कच्चे तेल की हिस्सेदारी से भी 2014 में इसकी कीमतें प्रभावित होंगी । इसके साथ ही तूफानो के आने के मौसम के दौरान सप्लाई के बाधित होने से भी 2014 में इसकी कीमतें प्रभावित होंगी ।

नाइमेक्स में कच्चे तेल की कीमतों को 75 डॉलर और एमसीएक्स में 4500 रू पर अहम सपोर्ट रहने की उम्मीद है जबकि नाइमेक्स में 115 डॉलर और एमसीएक्स में 7000 रू पर मजबूत रेजिस्टेंस रह सकता है।

कच्चा तेल वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (MCX)

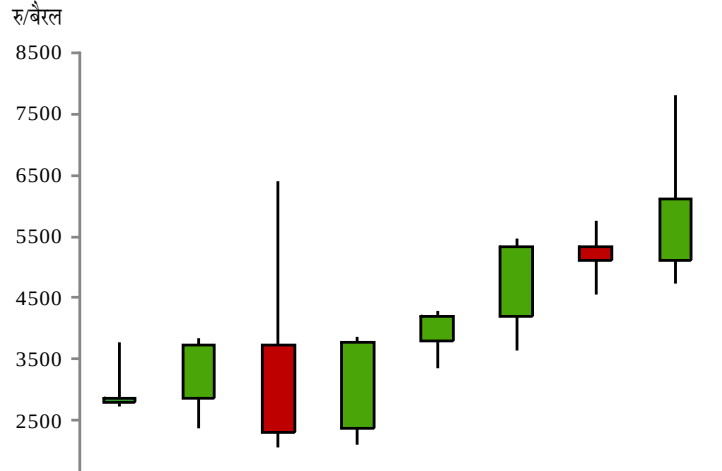

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	2789	2855	3740	2365	3789	4204	5326	5118
High	3760	3812	6375	3850	4270	5456	5728	7785
Low	2737	2370	2053	2100	3350	3636	4546	4737
Close	2856	3721	2312	3787	4198	5336	5110	6118*

*बंद भाव 13 दिसम्बर 2013 के अनुसार

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

ब्रेंट एवं लाइट स्वीट कच्चे तेल का स्प्रैड (डॉलर)

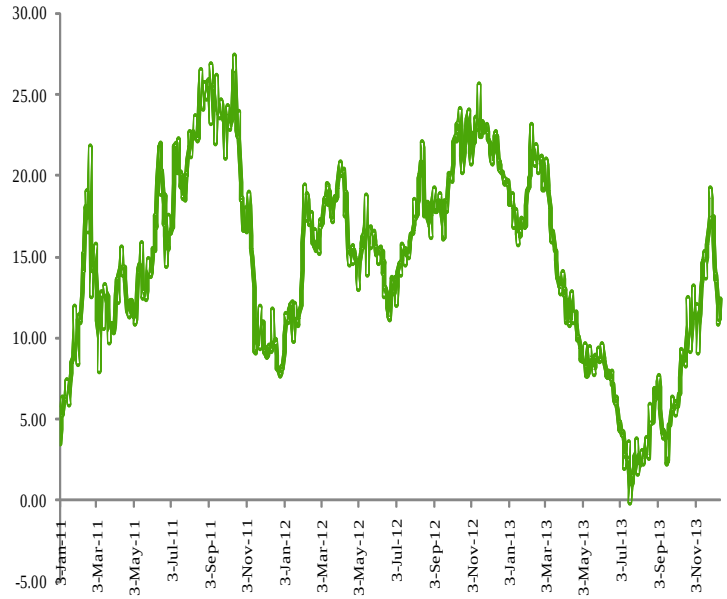

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

वार्षिक समीक्षा 2013: नेचुरल गैस

नेचुरल गैस की कीमतों में लगातार तीसरे वर्ष रिकवरी दर्ज की गई और कीमतें जनवरी 2013 में 176 के निचले स्तर से अप्रैल 2013 में 245 के स्तर पर पहुंच गई । वर्ष के पहले चार महीने में नाइमेक्स और एमसीएक्स दोनों में नेचुरल गैस की कीमतों में लगभग 40% की बढ़त दर्ज की गई ।

गैस के कम होते भंडार और मौसम के कारण इसकी कीमतों को मदद मिली । रिगों की संख्या में कमी से भी कीमतों को मदद मिली । अप्रैल 2013 में अमेरिका में रिगों की संख्या घटकर 1758 रह गई । वर्ष के मध्य में सुस्त मांग के कारण कीमतों में गिरावट हुई लेकिन इसके बाद अगस्त 2013 से कीमतों में रिकवरी शुरू हुई जो वर्ष के अंत तक जारी रही । अप्रैल 2013 में नाइमेक्स में कीमतें 4.41 डॉलर से ऊपर और एमसीएक्स में 270 रू से ऊपर पहुंच गई। अगस्त महीने में घरेलू बाजार में रूपये के कमजोर रहने से कीमतों को मदद मिली । डॉलर के मुकाबले रूपया 68 के ऊपर पहुंच गया था ।

अमेरिका में 2012 में रिकॉर्ड गर्म मौसम की तुलना में 2013 में जाड़े में कम तापमान के कारण आवासीय और कॉमर्शियल भवनों को गर्म रखने के लिए गैस के इस्तेमाल में वृद्धि हुई ।

नाइमेक्स में नेचुरल गैस की कीमतों के 10 वर्षो के निचले स्तर 2 डॉलर से नीचे पहुंचने के बाद उत्पादन में कटौती और गैस रिगों की संख्या में कमी के कारण कीमतों में तेजी से उछाल दर्ज की गई ।

2013 में शेल गैसों के उत्पादन के लिए 'फ्रैकिंग' या हाइड्रो फ्रैक्चरिंग की नयी उत्पादन तकनीक से पर्याप्त सप्लाई जैसे कुछ अन्य कारकों के कारण भी नेचुरल गैस की कीमतों पर दबाव रहा ।

5 अप्रैल से 13 सितम्बर के बीच अमेरिकी नेचुरल गैस का भंडार 94% की वृद्धि के साथ 3.3 ट्रिलियन क्यूबिक फीट हो गया है जो छह वर्षो (2007-2012) के ऐतिहासिक औसत स्तर से थोड़ा ही ऊपर है। इस अवधि में अमेरिकी नेचुरल गैस के भंडार में सामान्यतया बढ़ोतरी होती है क्योंकि मांग की तुलना में अमेरिकी गैस उत्पादन अधिक होता है।

अमेरिकी पर्यावरण सुरक्षा एजेंसी (EPA) द्वारा कोयला आधारित नए बिजली प्लांटों के लिए नए उत्सर्जन कानूनों के प्रस्ताव के बाद से नेचुरल गैस की मांग बढ़ी है। ऐसी संभावना है कि नए बिजली प्लांटों के लिए CO_2 उत्सर्जन मानकों में छूट दी जाएगी, लेकिन कोयला आधारित नए बिजली प्लांटों की तुलना में गैस आधारित बिजली प्लांटों को तरजीह दिए जाने की संभावना कम है। मध्यम से लम्बी अवधि के बीच गैस आधारित बिजली प्लांटों की ओर रूख हो सकता है लेकिन गैस की बढ़ती कीमतें इस रफ्तार को धीमा कर रही हैं।

जाड़े के मौसम में बढ़ती मांग और तूफानों से मेक्सिको की खाड़ी को नुकसान होने की आशंका से नवम्बर और दिसम्बर 2013 में नेचुरल गैस की कीमतों को मदद मिली । वर्ष की इस अंतिम तिमाही में सामान्यतया सीजनल मांग बढ़ने से औसत से कम भंडार के कारण कीमतों को मदद मिली। नेचुरल गैस का भंडार पांच वर्षो के औसत के निचले स्तर पर पहुंच गया।

वार्षिक आउटलुक 2014

नेचुरल गैस

दायरा: एमसीएक्स: 190-350 रु

नाइमेक्स: 3.2-5.5 डॉलर

गैस के कम होते भंडार, बढ़ते इस्तेमाल और रिगों की संख्या में कमी के कारण नेचुरल गैस की कीमतों में पिछले दो वर्षो से जारी तेजी 2014 में भी बरकरार रह सकती है। विश्व स्तर पर सख्त पर्यावरण नियमों के चलते स्वच्छ ईंधन के रूप में गैस का इस्तेमाल बढ़ता जा रहा है।

नेचुरल गैस को कोयला एवं नाभिकीय ऊर्जा जैसे ऊर्जा के अन्य स्रोतों की तुलना में स्वच्छ ईंधन माना जाता है । इसलिए औद्यागिक और घरेलू स्तर पर नेचुरल गैस के बढ़ते इस्तेमाल से कीमतों को मदद मिलेगी । मौसम से संबंधित खबरों का भी नेचुरल गैस की कीमतों पर असर पड़ सकता है। ईआईए के अनुसार कुल अमेरिकी घरों के लगभग आधे घरों को गर्म रखने के लिए नेचुरल गैस पर निर्भर करता है।

लेकिन यदि नेचुरल गैस की कीमतों में काफी अधिक वृद्धि होती है तो बिजली उत्पादक फिर से गैस से कोयले के इस्तेमाल की ओर रूख कर सकते हैं क्योंकि कार्बन की कीमतें काफी कम है, जिससे गैस की मांग कम हो सकती है और कीमतों पर दबाव पड़ सकता है। यदि कीमतों में वृद्धि होती है तो नेचुरल गैस उत्पादकों को अधिक मुनाफा होगा, जिससे स्टॉक में बढ़ोतरी होगी और 2014 में नेचुरल गैस की कीमतों की बढ़त पर रोक लगेगी ।

मांग की स्थिति को देखें तो अमेरिकी आर्थिक वृद्धि और पूराने कोयला प्लांटों के बंद होने से गैस की खपत में वृद्धि होगी । सप्लाई को देखें तो गैस की अधिक कीमतों के कारण अधिक उत्पादन को बढ़ावा मिल सकता है, जिससे गैस की कीमतों की बढ़त पर रोक लग सकती है। यह पूरी तरह से सच है कि उत्पादन क्षमता अधिक है जो शुरु होने के लिए तैयार है लेकिन कम आमदनी के कारण ये भी बंद हैं । फिर भी अमेरिकी उत्पादन में वृद्धि पर रोक नही लगेगी क्योंकि यह अमेरिकी कार्बन कटौती योजना का हिस्सा है, जो ऊर्जा को लेकर आत्मनिर्भर बनाने में सहायक है और नेचुरल गैस की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए आवश्यक है।

अमेरिकी एनर्जी इंफॉर्मेशन एडमिनिस्ट्रेशन ने 2014 में घरेलू नेचुरल गैस के उत्पादन में वृद्धि का अनुमान लगाया है। इस वर्ष गैस का उत्पादन 2013 की तुलना में 1% से अधिक की वृद्धि के साथ रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया है। 2014 में नेचुरल गैस का उत्पादन 2013 की तुलना में 0.74 बिलियन क्यूबिक फीट/दिन की वृद्धि के साथ 71.03 बिलियन क्यूबिक फीट/दिन होने का अनुमान है। उत्पादन में यह वृद्धि एपालाशिया स्थित मार्सेलस शेल से गैस उत्पादन में वृद्धि के कारण होगी, जहां मेक्सिको की खाड़ी में गैस उत्पादन में गिरावट की तुलना में अधिक उत्पादन हो रहा है।

2014 में कनाडा से पाइप लाइन द्वारा नेचुरल गैस के आयात में गिरावट जारी रहने की संभावना है और 2013 में 7.53 बिलियन क्यूबिक फीट/दिन की तुलना में कम होकर 7.

4 बिलियन क्यूबिक फीट/दिन रह सकता है। ईआईए ने 2014 में गैस की खपत में थोड़ी वृद्धि का अनुमान लगाया है, फिर भी 2013 की तुलना में 0.8% की गिरावट के साथ 69. 6 बिलियन क्यूबिक फीट/दिन रह जाने का अनुमान है।

ईआईए के अनुसार अमेरिका में बिजली उत्पादन के लिए कोयले का इस्तेमाल 2012 के 37.4% से बढ़कर 2013 में 39.4% हो जाएगा और 2014 में 40.2% हो जाएगा । जबकि बिजली उत्पादन के लिए नेचुरल गैस का इस्तेमाल 2012 के 30.4% से घटकर 2013 में 27.4% हो जाएगा और 2014 में 26.9% हो जाएगा ।

नेचुरल गैस यातायात के लिए मोटर वाहनों का मार्ग भी प्रशस्त कर रहा है । फैक्ट्रियों और घरों को गर्म करने के लिए तेल के स्थान पर नेचुरल गैस का इस्तेमाल जारी रहेगा और बिजली उत्पादन में कोयले का स्थान लेता रहेगा । अपेक्षाकृत सस्ता और प्रचुर भंडार होने के कारण नेचुरल गैस अमेरिका में कई स्थानों पर तेल का स्थान लेता रहा है और तेल की मांग कम हो रही है।

मौसम की स्थितियों से भी 2014 में नेचुरल गैस की कीमतों का रूझान प्रभावित होगा और गैस की मांग जाड़े एवं गर्मी में तापमान पर निर्भर करेगी ।

नाइमेक्स में कच्चे तेल की कीमतों को 3.2 डॉलर और एमसीएक्स में 190 रू पर अहम सपोर्ट रहने की उम्मीद है जबकि नाइमेक्स में 5.5 डॉलर और एमसीएक्स में 350 रू पर मजबूत रेजिस्टेंस रह सकता है।

नेचुरल गैस वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (MCX)

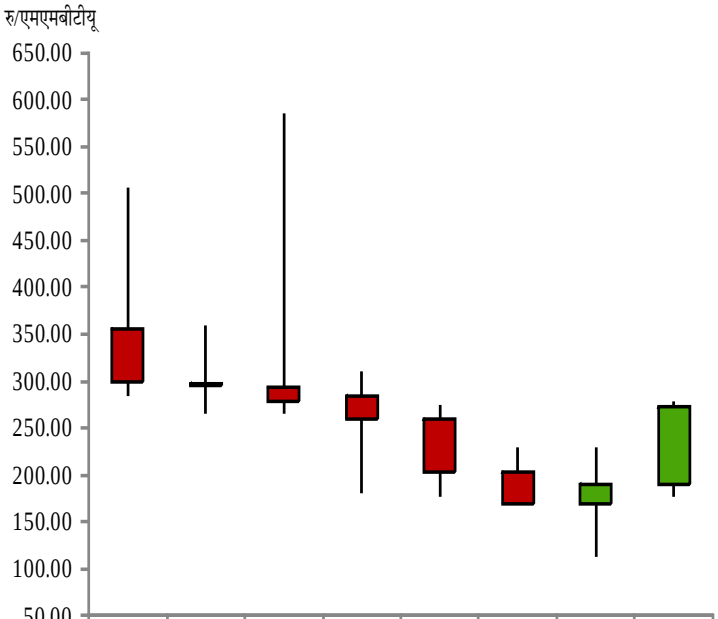

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	356.20	297.00	294.10	284.00	259.80	203.40	169.10	190.40
High	504.50	358.20	584.40	308.00	273.00	227.70	226.90	276.80
Low	284.40	265.40	265.70	180.50	176.50	169.30	112.50	176.20
Close	299.10	296.70	278.20	258.80	202.70	169.60	190.30	273.30*

*बंद भाव 13 दिसम्बर 2013 के अनुसार

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

कच्चा तेल एवं नेचुरल गैस का अनुपात (NYMEX)

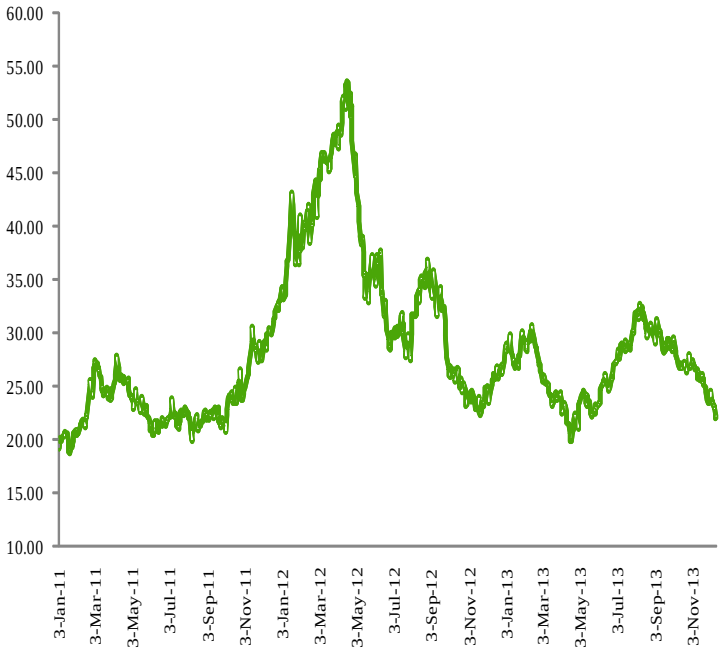

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

अमेरिका में नेचुरल गैस रिगों की संख्या (साप्ताहिक)

स्रोत: बेकर ह्यूज

Source: Baker Hughes

वार्षिक समीक्षा 2013: बेस मेटल

2013 में मिले-जुले फंडामेंटल के कारण बेस मेटल की कीमतों में अस्थिरता रही । अमेरिकी सरकार की आंशिक कामबंदी, कर्ज संकट और मौद्रिक मदद में कटौती की आशंका के कारण कीमतें दबाव में रही जबकि लेड जैसे कुछ बेस मेटल की सप्लाई में कमी के कारण कीमतों की गिरावट पर रोक लगी। प्रमुख आर्थिक आंकड़ों को लेकर अनिश्चितता के कारण भी 2013 में बेस मेटल की कीमतें काफी हद तक प्रभावित हुई । विश्व स्तर पर पीएमआई (Purchasing Manager Index) सूचकांकों के साथ ही आईएसएम (Institute of Management Supply) सर्वे से सेंटीमेंट प्रभावित हुआ है। 2013 में चीन की ओर से सुस्त मांग के कारण निवेशक काफी सतर्क रहे जबकि कई बैंकों द्वारा स्टीमुलस प्रयासों के कारण भी बेस मेटल को अहम सपोर्ट मिला । घरेलू बाजार में रूपये के कमजोर होने से भी सेंटीमेंट को मजबूती मिली । 2013 में रूपया 17% से अधिक कमजोर हुआ ।

2013 में अमेरिकी सरकार की आंशिक कामबंदी, सीरिया, उत्तरी कोरिया और ईरान में तनाव जैसी कई घटनाएं केन्द्र में रही और बाजार के सेंटीमेंट को प्रभावित किया ।

2013 की पहली तिमाही में डॉलर के मजबूत होने के कारण तांबें की कीमतें अब तक के निचले स्तर 366 पर पहुंच गई। फेड मिनट के बाद QE3 को जारी रखने को लेकर बढ़ते संशय के कारण भी तांबें की कीमतों में गिरावट हुई । लेकिन 2013 की पहली तिमाही के बाद कीमतों में धीरे-धीरे बढ़ोतरी होनी शुरू हुई और घरेलू बाजार में रूपये के कमजोर होने के कारण कीमतें वर्ष के उच्चतम स्तर 510 से ऊपर पहुंच गयी । इसके बाद कीमतों में फिर से गिरावट होनी शुरू हुई और नवम्बर 2013 में एमसीएक्स में कीमतें 430 रू से नीचे आ गई ।

चिली के बंदरगाहों पर हड़ताल और भारत के प्रमुख स्मेल्टर के बंद हो जाने के बाद निर्यात में देरी के कारण अप्रैल 2013 में चीन का तांबा आयात 7.4% की गिरावट के साथ 22 महीने के निचले स्तर पर पहुंच गया । 2013 में खदानों के बंद होने से फिजिकल बाजारों में तांबें की कमी दर्ज की गई । चीन की तीसरी सबसे बड़ी तांबा उत्पादक, जिशुवॉन ग्रुप लि. ने कच्चे स्क्रैप की कमी के कारण 200000 टन वार्षिक उत्पादन क्षमता वाले प्लांट को बंद कर दिया है, जिसके कारण इस वर्ष रिफाइंड तांबें के उत्पादन में 16% से अधिक की कमी हुई । सितम्बर 2013 में यूरो जोन के उपभोक्ता विश्वासों में बढ़ोतरी हुई और 2011 की गर्मियों के बाद यह पहली बार लम्बी अवधि के औसत स्तर को पार कर गया । अमेरिकी आर्थिक स्थितियों में भी सुधार हुआ और जुलाई 2013 में उपभोक्ता खर्चो में सात महीने में सबसे अधिक बढ़ोतरी हुई, जो अमेरिकी आर्थिक वृद्धि में तेजी आने के संकेत है।

2013 के पहले चार महीने में एल्युमीनियम की कीमतों में लगातार गिरावट दर्ज की गई और कीमतें लगभग 100 के निचले स्तर पर पहुंच गई जबकि अप्रैल के बाद कीमतों में जोरदार वृद्धि दर्ज की गई और अगस्त में घरेलू बाजार में रूपये के कमजोर होने के कारण कीमतें 133 से ऊपर जाने में कामयाब हो गई । लेकिन इसके बाद भारी मुनाफा वसूली के कारण कीमतों में तेज गिरावट हुई और नवम्बर 2013 में कीमतें लगभग 110 के निचले स्तर पर पहुंच गई । चीन की वृद्धि को लेकर आशंका और पर्याप्त स्टॉक के बीच कच्चे तेल की कीमतों में नरमी के कारण कीमतों में गिरावट हुई । एल्युमीनियम उद्योग अत्यधिक उत्पादन क्षमता, बढ़ती लागत और कम कीमतों की समस्या से जूझ रहा है । रूसल का अनुमान है कि चीन से बाहर कुल उत्पादन का पांचवां हिस्सा घाटे में चल रहा है जबकि 2013 में मांग में 6 से 7% बढ़ोतरी होने की संभावना है। भंडार के लिए फाइनेंस उपलब्ध होने और रद्द किए गए वारंटों के कारण वेयरहाउसों से एल्युमीनियम की निकासी के लिए वेयरहाउसों में लम्बी कतार के चलते 2013 में प्रीमियम में बढ़ोतरी हुई ।

2013 की पहली तिमाही में डॉलर के मजबूत होने और रद्द किए गए वारंटों में गिरावट के कारण लेड की कीमतों में गिरावट हुई लेकिन मई में लगभग 106 के निचले स्तर से धीरे-धीरे मजबूती दर्ज की गई और घरेलू बाजार में रूपये के काफी कमजोर होने और रद्द किए गए वारंटों में वृद्धि के साथ ही बैटरी निर्माताओं की ओर से अधिक मांग के कारण अगस्त में 155 से ऊपर पहुंच गई । अगस्त 2013 के बाद कीमतों में फिर से गिरावट शुरू हुई और वर्ष के शेष दिनों में कीमतें 127-148 के दायरे में कारोबार करती रही । लेड के अधिक प्रीमियम से भी कीमतों को मदद मिलती रही । सितम्बर 2013 के प्रारंभ में लेड का प्रीमियम लगभग 260 डॉलर/टन था। विश्व स्तर पर रिफाइंड लेड का उत्पादन जनवरी-जून 2012 के 5.05 मिलियन टन की तुलना में जनवरी-जून 2013 में 4.4% की वृद्धि के साथ 5.27 मिलियन टन हुआ । उत्पादन में यह वृद्धि चीन में 12.4% की भारी वृद्धि के कारण हुई । इस बीच जनवरी-जून 2013 में विश्व स्तर रिफाइंड लेड का इस्तेमाल 6.8% की वृद्धि के साथ 5.31 मिलियन टन हुआ, जबकि जनवरी-जून 2012 में 4.97 मिलियन टन रिफाइंड लेड का इस्तेमाल हुआ था ।

2013 में जिंक का कारोबार कमोवेश लेड के नक्शेकदम पर हुआ । 2013 के पहले चार महीने में इसकी कीमतों में नरमी रही, लेकिन इसके बाद चार महीनों में इसकी कीमतों में तेजी दर्ज की गई और 40% की उछाल के साथ अगस्त 2013 में कीमतें वर्ष के उच्चतम स्तर 140 पर पहुंच गई । विश्व स्तर पर शेयर बाजारों में तेजी के साथ ही घरेलू बाजार में रूपये के कमजोर रहने से कीमतों में उछाल दर्ज की गई । सितम्बर में कीमतों में फिर से गिरावट हुई और 121 के स्तर पर नीचे आ गई और इसके बाद वर्ष के अंत तक कीमतें एक दायरे में कारोबार करती रही । फेड द्वारा स्टीमुलस में कटौती की आशंका से जिंक की कीमतों की तेजी पर रोक लगी जबकि गैल्वानाइजिंग के लिए मांग से कीमतों को मदद मिली । इंटरनेशनल लेड और जिंक स्टडी ग्रुप के अनुसार जनवरी-जून 2013 के दौरान विश्व स्तर पर रिफाइंड जिंक की मांग की तुलना में सप्लाई 44000 टन अधिक थी जबकि इस दौरान जिंक के कुल भंडार में 123000 टन की गिरावट हुई है।

अन्य बेस मेटल की तरह निकल की कीमतें वर्ष के पहले चार महीने में औंधेमुंह लुढ़क गई और इसकी कीमतों में लगभग 16% की गिरावट हुई । रिकॉर्ड भंडार और कमजोर मांग के कारण कीमतों में गिरावट हुई लेकिन धीरे-धीरे कीमतों में मजबूती दर्ज की गई और अगस्त 2013 में 1000 रू से ऊपर पहुंच गई । लेकिन रूपये के अचानक मजबूत होने और फेड द्वारा स्टीमुलस में कटौती की आशंका से सितम्बर महीने में कीमतों में तेज गिरावट हुई और इसके बाद वर्ष के अंत तक गिरावट जारी रही । निकल की कम कीमतों के कारण ऑस्ट्रेलिया की कुछ खदानों और फिनलैंड के बेलवेदेरे रिसोर्सेज की हिटुरा खदान को बंद करना पड़ा ।

वार्षिक आउटलुक 2014

तांबा

दायरा: एमसीएक्स: 380-540 रु

एलएमई: 6000-8300 डॉलर

तांबें को अर्थव्यवस्था का डॉक्टर माना जाता है, क्योंकि इसके प्रदर्शन से अक्सर अर्थव्यवस्था की स्थिति का अनुमान लगाया जाता है। 2014 में वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में अनिश्चितता रहेगी इसलिए तांबा बाजार में भी अस्थिरता बरकरार रहने की संभावना है। फेडरल रिजर्व की गतिविधियों से इस वर्ष कीमतों पर दबाव रहेगा क्योंकि फेड 85 बिलियन डॉलर की मासिक खरीद योजना को धीरे धीरे समाप्त करने की दिशा में बढ़ रहा है। इस कारण लम्बी अवधि के ब्याज दरों में 2013 में पहले ही वृद्धि हो चुकी है।

2014 में चीन की आर्थिक स्थिति और अमेरिका में हाउसिंग और रोजगार की स्थिति केन्द्र में बनी रहेगी । 2013 में अमेरिकी सरकार की कार्यबंदी ने अमेरिकी जीडीपी वृद्धि को धीमा करके लगभग 1.7% कर दिया, लेकिन 2014 की तस्वीर उज्ज्वल नजर नही आ रही है। ऐसी संभावना है कि 2014 के मध्य तक तिमाही वृद्धि 3% की वार्षिक दर को प्राप्त कर सकती है, जिससे घरेलू स्तर पर नीतिगत अनिश्चितता के साथ ही प्रमुख व्यापारिक साझेदारों के बीच कम वृद्धि से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने में अर्थव्यवस्था समर्थ हो सकती है। तब अमेरिकी अर्थव्यवस्था को प्रतिमाह 200000 से अधिक रोजगार का सृजन करना होगा । चीन में अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे सामान्य स्थिति की ओर लौट रही है क्योंकि 30 सितम्बर को समाप्त तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद में 7.8% की वृद्धि दर्ज की गई है, जबकि इसकी पिछली तिमाही में 7.5% की वृद्धि दर्ज की गई थी ।

तांबें की कीमतों के निर्धारण में चीन की प्रमुख भूमिका बनी रहेगी क्योंकि यह एक आश्चर्यजनक सच्चाई है कि सरकार द्वारा विकास को तेजी प्रदान करने के लिए किए गए निवेश के कारण चीन को तांबें की इतनी जरूरत होगी कि उससे पूरे विश्व को 100 बार घेरा जा सकता है। 2013 में चीन में तांबें की खपत लगभग 8% की वृद्धि के साथ रिकॉर्ड 8.833 मिलियन टन हुई है। चीन के कस्टम विभाग के आंकड़ों के अनुसार चीन का तांबा आयात अगस्त 2013 की तुलना में 32% की उछाल के साथ सितम्बर में 347305 टन हो गया, जो फरवरी 2012 के बाद सबसे अधिक है।

2014 में चीन की मौद्रिक नीति से भी तांबें की कीमतें प्रभावित होंगी क्योंकि चीन ने मुद्रा सप्लाई को कम किया है और इसके बैंकों का डूबा हुआ कर्ज तिगुना हो गया है, जिससे तांबें की खपत धीमी हुई है।

2015 तक विश्व स्तर पर तांबें की सप्लाई मांग की तुलना में लगभग 340000 टन अधिक रहने का अनुमान है, जिससे कीमतों पर दबाव रह सकता है। 2014 में सप्लाई में 1 मिलियन टन की बढ़ोतरी होने की संभावना है और 2015 में 800000 टन अतिरिक्त तांबें की सप्लाई हो सकती है।

ऐसी संभावना है कि तांबें के भंडार में बढ़ोतरी से यह आशंका बढ़ सकती है कि मांग इतना अधिक नही है कि खदानों से बढ़ते उत्पादन के बीच अत्यधिक सप्लाई को कम किया जा सके । इस बीच 2013 में लंदन मेटल एक्सचेंज के अधिकृत वेयरहाउसों में तांबें का भंडार 49% बढ़ गया है।

ग्लेनकोर एक्सट्राटा पीएलसी के अनुसार अफ्रीकी खदानों से उत्पादन बढ़ने के कारण तांबें के तिमाही उत्पादन में 34% की तेजी दर्ज की गई है। फिर भी 2014 में बेहतर मांग होने की संभावना है जिससे सप्लाई की अधिकता कुछ कम हो सकती है, लेकिन मांग इतनी अधिक नही होगी कि बाजार में संतुलन या कमी वाली स्थिति पैदा हो सके । यदि कोई केवल एलएमई, एसएचएफई और कोमेक्स के अधिकृत वेयरहाउसों में रखे भंडार को देखता है तो लगेगा कि बाजार में सरप्लस है क्योंकि 2013 में इनके भंडार में लगभग 110000 टन की वृद्धि हुई है। चीन के अधिकृत वेयरहाउसों में तांबें का भंडार जनवरी 2013 में 1 मिलियन टन से 1.1 मिलियन टन के बीच था और नवम्बर 2013 तक यह घटकर 300000 टन से थोड़ा ही अधिक रह गया ।

चीन में घरों के बाजार का बुलबुला काफी अधिक मार्जिन के साथ बढ़ा है । बीजिंग में दो कमरे के फ्लैट की कीमत अब 32 वर्षो के औसत वेतन या 330000 डॉलर हो गई है। चीन में प्रॉपट्री के बड़े उद्योगपति काफी चिंतित है और संशय में है कि कहीं यह उछाल बुलबुला बनकर फूट न पड़े ।

इसके अतिरिक्त तांबें के ईटीएफ की ओर से तांबें की मांग से भी 2014 में कीमतों को मदद मिल सकती है। तांबें के ईटीएफ के रूप में दर्ज ब्लैकरॉक इंक ने 2013 में काफी बेहतर प्रदर्शन किया है। आईपाथ डॉव जोन्स यूबीएस कॉपर सुबिनेक्स तांबें के अन्य ईटीएफ है जिसमें निवेशकों की भागीदारी बेहतर रही है।

2013 की तरह ही इस वर्ष भी तांबें की कीमतों में अस्थिरता बरकरार रहने की संभावना है। विभिन्न खदानों में हड़ताल से कीमतों को मदद मिल सकती है। इसके साथ 2014 में क्वांटिटिव इजिंग-3 को लेकर अमेरिकी फेडरल रिजर्व के कदमों से तांबें की कीमतों का सेंटीमेंट प्रभावित हो सकता है। 18 दिसम्बर 2013 को हुई बैठक में फेड ने 85 बिलियन डॉलर की मासिक खरीद योजना को कम करके 75 बिलियन डॉलर तक सीमित कर दिया है।

एमसीएक्स में तांबें की कीमतों 380 पर और एलएमई में 6000 डॉलर के स्तर पर अहम सपोर्ट रह सकता है। जबकि एमसीएक्स में 540 रू और एलएमई में 8300 डॉलर के रेजिस्टेंस रह सकता है ।

तांबा वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (MCX)

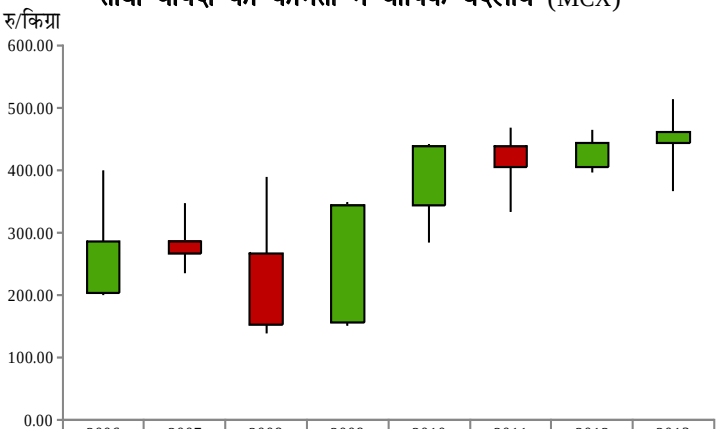

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	203.50	285.60	265.95	155.00	343.95	439.30	405.95	444.00
High	397.90	345.60	387.40	347.20	439.80	466.20	463.00	512.70
Low	199.90	235.00	138.55	150.85	284.10	332.40	397.00	366.40
Close	285.60	266.00	152.75	344.00	439.50	406.00	443.75	461.75*

*बंद भाव 13 दिसम्बर 2013 के अनुसार

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

वार्षिक आउटलुक 2014

निकल

दायरा: एमसीएक्स: 750-1150 रु

एलएमई: 12000-18000 डॉलर

2013 में अन्य बेस मेटल की तुलना में खराब प्रदर्शन करने वाले निकल में 2014 में थोड़ी खरीददारी हो सकती है क्योंकि इंडोनेशिया ने 2014 में निकल अयस्क के निर्यात पर प्रतिबंध लगाने की योजना बनायी है।

इंडोनेशिया की लगभग 30% निकल खदानों को मौजूदा कीमतों पर घाटा हो रहा है। 2013 में इंडोनेशिया ने विश्व स्तर पर लगभग 28% निकल की सप्लाई की थी ।

इंडोनेशिया निकल की बिक्री कीमत को बढ़ाना चाह रहा है और जबकि 2009 के खनन कानून के अनुसार पूर्ण प्रतिबंध के बावजूद सरकार 2014 में प्रोसेसिंग यूनिटों के संचालन या निर्माण की योजना बनाने वाली कंपनियों को छूट दे सकती है।

2013 में निकल की सरप्लस सप्लाई बढ़कर 70000 टन हो सकती है जो 2012 में 75000 टन की सरप्लस सप्लाई से थोड़ा ही कम है, जिससे पता चलता है कि 2013 में मांग 7% बढ़ी है।

2014 में इंडोनेशिया का कानून निकल के लिए एक अप्रत्याशित कारक होगा । इस कानून के तहत विदेशी निवेश को बढ़ावा देने और घरेलू खनन कंपनियों के मुनाफे में बढ़ोतरी के लिए निकल अयस्क की प्रोसेसिंग देश के भीतर ही किया जाएगा और इसके बाद ही निर्यात किया जाएगा ।

बीएनबी परिबा के अनुसार निकल अयस्क के निर्यात पर प्रतिबंध के लागू होने से 2014 में या तो कीमतों में वृद्धि होगी या अत्यंत कम प्रभाव पड़ेगा, जो चीन के उत्पादकों की प्रतिक्रिया पर निर्भर करेगा । चीन के निकल पिग आइरन, जो प्राइमरी निकल की तुलना में सस्ता होता है, के प्रोसेसरों ने उत्पादन में कटौती किया है, जिसके कारण प्राइमरी निकल के आयात में वृद्धि करनी पड़ेगी, जिससे निकल की कीमतों में तेजी दर्ज की जा सकती है। लेकिन यदि चीन में निकल पिग आइरन का उत्पादन जारी रहता है और उत्पादक 2013 के प्रारंभ से ही जमा किए जा रहे अयस्क के भंडार पर निर्भर रहते है तो इंडोनेशिया के प्रतिबंध का कीमतों पर कोई असर नही हो सकता है। ग्लेनकोर एक्सट्राटा पीएलसी के अनुसार चीन द्वारा रिकॉर्ड आयात के कारण इंडोनेशिया 2013 में 60 मिलियन टन निकल अयस्क का निर्यात करेगा जबकि 2012 में 45 मिलियन टन निर्यात किया था ।

चीन ने निकल अयस्क के निर्यात पर प्रतिबंध को देखते हुए अपने बंदरगाहों और निकल पिग आइरन के उत्पादन केन्द्रों पर अगले छह से 10 महीने की खपत के लिए निकल अयस्क का बफर स्टॉक जमा कर रखा है। कस्टम विभाग के अनुसार चीन ने जनवरी-अक्टूबर 2013 के दौरान इंडोनेशिया से कुल 56.9 मिलियन टन निकल अयस्क का आयात किया है, जो 2012 की समान अवधि की तुलना में 41% अधिक है।

कम कीमतों के कारण विश्व स्तर पर निकल खदानों के बंद होने से 2014 में कीमतों को मदद मिलने की संभावना है। ग्लेनकोर एक्सट्राटा जैसे बड़ी खनन कंपनी ने 2013 में डोमिनियन रिपब्लिक स्थित फॉल्कैन्डो में अपने खनन कार्य को रोक दिया है। खदान की कुल क्षमता लगभग 16000 टन/वर्ष है। विश्व की सबसे बड़ी निकल उत्पादक नॉरीस्ल्क निकल ने भी नयी रणनीति के तहत अपने इरादे को साफ करते हुए कहा है कि 2014 में वह केवल रूस के खदानों पर स्वयं को केन्द्रित करेगी और अन्य देशों के खदानों से अलग हो जाएगी ।

निकल बाजार के अधिकांश सरप्लस में चीन के निकल पिग आइरन उद्योग का योगदान सबसे अधिक है। 2013 की तीसरी तिमाही में चीन में निकल के जमा होते भंडार के बीच निकल का उत्पादन बढ़कर लगभग 196896 टन हो गया। इंडोनेशिया द्वारा प्रतिबंध लगाए जाने के बाद प्रतिवर्ष लगभग 430000 टन निकल अयस्क बाजार से हट जाएगा । इंडोनेशिया से आयातित निकल अयस्क पर निर्भर रहने वाले चीन के निकल पिग आइरन स्मेल्टर बंद होने के लिए बाध्य हो जाएगें, जिससे पूर्ण निर्मित निकल की सप्लाई कम हो जाएगी और कीमतों में वृद्धि होगी ।

चीन के कस्टम विभाग के अनुसार जनवरी-अक्टूबर 2013 में इंडोनेशिया से चीन का निकल आयात कुल 56.9 मिलियन टन हुआ है जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 41प्रतिशत अधिक है। इस बीच स्टेनलेस स्टील सेक्टर की ओर से जोरदार मांग और 2014 में इंडोनेशिया से निकल अयस्क पर प्रतिबंध के बाद निकल की सप्लाई में संभावित कमी से निकल की कीमतों को थोड़ी मदद मिल सकती है।

निकल की कीमतों को एमसीएक्स में 1150 रू और एलएमई में 18000 डॉलर पर मजबूत रेजिस्टेंस है जबकि एमसीएक्स में 750 रू और एलएमई में 12000 डॉलर पर अहम सपोर्ट है।

निकल वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (MCX)

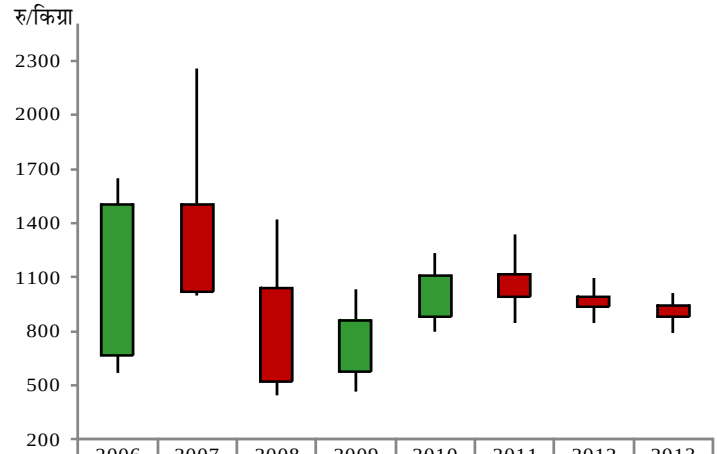

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	663	1505	1040.5	576	878.7	1116.2	992.5	945
High	1640	2253.9	1416	1022.4	1224.7	1327.8	1086.8	1004.8
Low	566	998	442.3	462	795.5	845.3	848	787.5
Close	1503.5	1017.5	523.6	863.1	1111.8	991.2	936.4	877.2*

*बंद भाव 13 दिसम्बर 2013 के अनुसार

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

वार्षिक आउटलुक 2014

जिंक

दायरा: एमसीएक्स: 100-150 रु.

एलएमई: 1750-2400 डॉलर

गैल्वानाइज करने के लिए प्रयुक्त होने वाली जिंक, जिसमें पिछले वर्ष काफी स्थिरता रही, में 2014 में भी मजबूती के रुख के साथ उतार-चढ़ाव जारी रहने की संभावना है। ऑटो, स्टील और कंस्ट्रक्शन सेक्टर की ओर से मांग के कारण 2014 में जिंक की कीमतें प्रभावित होंगी ।

विश्व स्तर पर खदानों से कम उत्पादन और कुछ खदानों के बंद होने के कारण 2014 में जिंक की कीमतों में मजबूती का रूझान रहने की संभावना है। ग्लेनकोर के जिंक खदान से उत्पादन पिछले वर्ष की तुलना में 12% कम हुआ है, जिसके कारण 2013 में दो बड़ी खदानों पर्जेवेरेन्स और ब्रंसवीक को बंद करना पड़ा । इन दो के बंद होने से विश्व स्तर पर जिंक की सप्लाई में 300000 टन की कमी होने की संभावना है।

कंस्ट्रक्शन, परिवहन, कंज्यूमर गुड्स और इलेक्ट्रिकल और सामान्य इंजिनियरिंग की ओर से मांग के कारण भी 2014 की कीमतों को नयी दिशा मिलेगी । इसबीच 2014 में अमेरिकी कर्ज संकट के साथ ही अमेरिका और चीन की रिकवरी की रफ्तार से जिंक की कीमतों के प्रभावित होने की संभावना है।

2012 में एलएमई और न्यू ओरलीन्स जैसे अन्य वेयरहाउसों में जिंक के भंडार का इस्तेमाल कीमतों को प्रभावित करने के लिए किया गया, लेकिन 2013 में कई निवेशकों ने वित्तीय करारों के तहत कई भंडारों को रोक कर रख लिया ताकि पहले की तरह कीमतों से बहुत अधिक प्रभावित न हो । एलएमई के वेयरहाउसों में जिंक के भंडार में लगातार कमी दर्ज की जा रही है और 2013 में इस भंडार में 160000 टन की गिरावट हुई है। लेकिन उद्योग से जुड़े लोगों का मानना है कि वेयरहाउसों में पड़ा लगभग 240000 टन जिंक संभवत: एलएमई के नियंत्रण में नही है। एलएमई का अधिकांश जिंक भंडार केवल एक केन्द्र न्यू ओरलीन्स पर ही केन्द्रित है। न्यू ओरलीन्स में जिंक का कुल भंडार 396000 टन है जो एलएमई के वेयरहाउसों से रद्द नही किए कुल भंडार का लगभग 80% है। अक्टूबर 2013 के मध्य में न्यू ओरलीन्स में जिंक के कुल भंडार में एक ही दिन में 75000 टन की वृद्धि हुई थी । सामान्य रूप से इस तरह के बदलाव से कीमतों पर भारी असर पड़ता है लेकिन कीमतों पर कोई खास असर नही पड़ा, जिससे पता चलता है कि मांग और सप्लाई की स्थिति को जानने में भंडार में बदलाव की भूमिका कम हो रही है क्योंकि कई बार भंडार में बढ़ोतरी वित्तीय करारों के तहत मेटल को जमा करने के कारण होती है।

इंटरनेशनल लेड एंड जिंक स्टडी ग्रुप के अनुसार 2013 में चीन में जिंक की मांग में 7.7% की वृद्धि होने का अनुमान है और रिफाइंड जिंक का कुल आयात आधा मिलियन टन से थोड़ा अधिक हो सकता है। ऐसा अनुमान है कि 2014 में चीन में जिंक के इस्तेमाल में फिर से 7% की बढ़ोतरी हो सकती है। यूरोप की ओर से मांग में लगातार दूसरे वर्ष 2013 में भी कमी दर्ज किए जाने की संभावना है, लेकिन गिरावट की दर काफी कम केवल 0.8% ही रह सकती है। 2014 में बेल्जियम, इटली और पोलैंड की वृद्धि के अनुमान के कारण मांग में 3.8% की उछाल दर्ज की जा सकती है। अमेरिका में 2013 में मांग में 7.1% और 2014 में 1.2% की वृद्धि होने का अनुमान है । इसके अतिरिक्त ब्राजील, भारत और तुर्की में भी मांग में बढ़ोतरी होने की संभावना है जबकि जापान और कोरिया गणराज्य में मांग स्थिर रह सकती है।

इंटरनेशनल लेड एंड जिंक स्टडी ग्रुप के अनुसार 2013 में विश्व स्तर रिफाइंड जिंक की मांग 4.8% की वृद्धि के साथ 12.89 मिलियन टन और 2014 में 5% की वृद्धि के साथ 13.54 मिलियन टन होने का अनुमान है।

2014 में विश्व स्तर पर शहरीकरण की योजनाओं, इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट और कारों के अधिक उत्पादन के कारण जिंक की खपत में वृद्धि होने की संभावना है। वाहनों में लगने वाली चांदी-जिंक एसएलआई बैटरियां, जिसमें 45% अधिक शक्ति होती है और 30% अधिक जीवन काल होता है, भी वाणिज्यिक रूप से उपलब्ध है और कीमतें कम हैं। इसलिए एसएलआई बैटरियों की मांग से 2014 में जिंक की मांग को मदद मिल सकती है ।

जहां तक सप्लाई की बात है, तो 2013 में ग्लेनकोर ने अपनी दो बड़ी खदानों पर्जेवेरेन्स और ब्रंसवीक बंद कर दिया है जबकि वेदांता अपने लिशीन खदान को 2014 में बंद कर सकती है। अन्य छोटे खदानों के भी बंद होने की संभावना है जिससे सप्लाई कम हो सकती है और कीमतों को मदद मिल सकती है

जिंक की कीमतों को एमसीएक्स में 150 रू और एलएमई में 2400 डॉलर पर मजबूत रेजिस्टेंस है जबकि एमसीएक्स में 100 रू और एलएमई में 1750 डॉलर पर अहम सपोर्ट है।

जिंक वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (MCX)

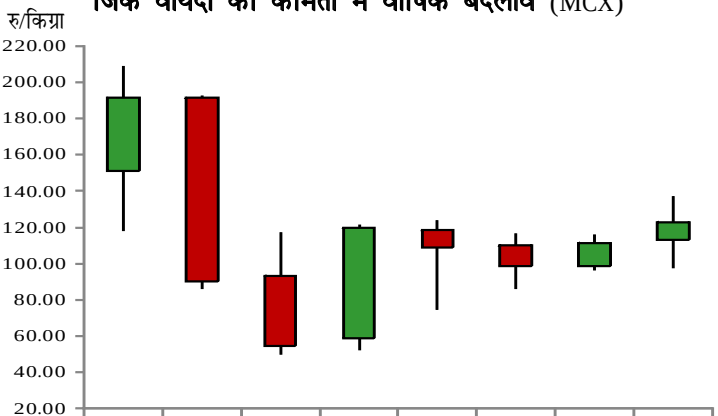

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	150.85	191.60	93.35	58.60	118.70	109.95	98.30	113.00
High	208.30	191.90	116.80	120.70	123.20	115.90	115.20	136.90
Low	118.05	86.00	49.85	52.30	74.35	86.10	96.30	97.40
Close	191.25	90.15	54.30	120.00	108.85	98.45	111.35	122.95*

*बंद भाव 13 दिसम्बर 2013 के अनुसार

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

लेड और जिंक का स्प्रैड (MCX)

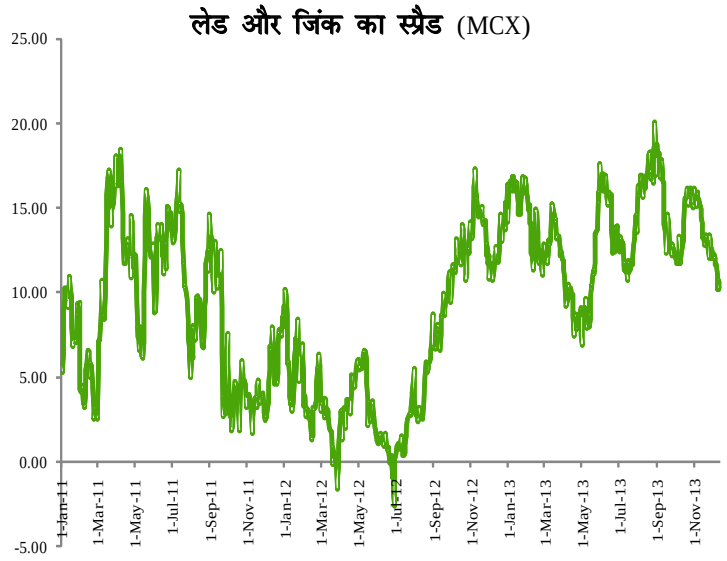

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

वार्षिक आउटलुक 2014

लेड

दायरा: एमसीएक्स: 110-160 रु.

एलएमई: 1750-2650 डॉलर

अधिक मांग और अधिक प्रीमियम के कारण बैटरी निर्माण में इस्तेमाल होने वाले लेड की कीमतों में 2014 में तेजी बरकरार रहने की उम्मीद है ।

2014 में औद्योगिक बैटरी सेक्टर से मांग और ई-बाइकों में इस्तेमाल होने वाली लेड एसिड बैटरियों की मांग में वृद्धि की संभावना के कारण लेड बाजार का भविष्य काफी बेहतर रहने वाला है । लेड का अधिकतम इस्तेमाल कार बैटरियों, मोबाइलों और ई-बाइकों में होता है। इसकी नष्ट नही होने वाली विशेषता इसे सल्फ्यूरिक एसिड को स्टोर करने के उपयुक्त बनाती है। इसकी अपक्षय रोधी विशिष्टता के कारण इसका इस्तेमाल भवन निर्माण भी होता है। कार्बन उत्सर्जन मानकों के लागू होने से भी लेड का उत्पादन प्रभावित हुआ है और कीमतों को मदद मिली है। भारत में रिप्लेशमेंट बैटरियों की मांग बढ़ रही है क्योंकि बिजली की कमी के कारण वैकल्पिक ऊर्जा की मांग बढ़ गई है। एशिया पैसिफिक, खासतौर से भारत और चीन, में ऑटोमोबाइल बैटरियों की लगातार मांग के कारण 2014 में लेड की कीमतों को मदद मिलने की संभावना है।

जाड़ों में लेड की मांग में अक्सर वृद्धि होने से कीमतों को मदद मिलती है। उत्तरी गोलार्ध में ठंडे मौसम के दौरान लेड की मांग में बढ़ोतरी होने की संभावना है क्योंकि लेड का इस्तेमाल वाहनों में इस्तेमाल होने वाली रिप्लेशमेंट बैटरियों में होता है।

इस बीच अमेरिका और जर्मनी जैसे देशों में रिकवरी होने और खदानों के बंद होने से कम होते स्टॉक के कारण 2014 में कीमतों को मदद मिलने की संभावना है। कनाडा में ग्लेनकोर ने अपनी बड़ी खदान ब्रंसवीक बंद कर दिया है। अमेरिकी की प्रमुख प्राइमरी लेड स्मेल्टर डो रन्स की हर्कुलानीयम खदान भी जनवरी 2014 में बंद हो जाएगी क्योंकि कंपनी का मानना है कि पर्यावरण मानकों को लागू करने के लिए जिस तरह के अपग्रेड करने की जरूरत है वह आर्थिक रूप से संभव नही है ।

लेड का खनन जिंक के उप-उत्पाद के रूप में किया जाता है । लेकिन खदानों के बंद होने के बाद उत्पादकों के पास खनन के काफी कम अवसर रह गए है। ग्लेनकोर की बुर्किनाफासो स्थित पर्कोवा प्रोजेक्ट जैसी नयी खदान से जिंक का ही अधिक उत्पादन होता है।

इंटरनेशनल लेड एंड जिंक स्टडी ग्रुप के अनुसार 2013 के पहले नौ महीने में सप्लाई की तुलना में मांग 46000 टन अधिक रही है, लेकिन 2013 के अंत तक लेड के थोड़ा सरप्लस रहने की उम्मीद है और ग्रुप का अनुमान है कि 2014 में सप्लाई की तुलना में मांग पांच वर्षो में पहली बार अधिक हो सकती है।

लेड की 80% मांग बैटरी निर्माताओं की ओर से होती है। जापान और अमेरिका में वाहनों की अधिक बिक्री हो रही है । इसका मतलब यह है कि नयी बैटरियों की मांग में बढ़ोतरी होगी । लेकिन लेड की कीमतों के निर्धारण में नि:संदेह चीन की भूमिका निर्णायक होगी, जहां कारों और ई-बाइकों की संख्या लगातार बढ़ रही है। चीन में कारों की बिक्री अक्टूबर 2013 में नौ महीने में सबसे अधिक हो गई ।

अमेरिका में प्राइमरी और द्वितीयक बैटरियों की मांग प्रतिवर्ष 4.2% की वृद्धि के साथ 2017 तक 17.1 बिलियन डॉलर हो जाने की संभावना है। मोटर वाहनों और अन्य टिकाऊ वस्तुओं (durable good) के उत्पादन में वृद्धि के कारण मांग में बढ़ोतरी होने की संभावना है। कीमतों के हिसाब से अमेरिका में ऑटो बाजार सबसे तेजी से बढ़ेगा क्योंकि मोटर वाहनों के उत्पादन में एक दशक से अधिक समय तक गिरावट के बाद फिर से बढ़ोतरी होती है । प्रतिशत के हिसाब से अमेरिका में ऑटो बाजार सबसे तेजी से बढ़ता हुआ बाजार है और हाइब्रिड इलेक्ट्रिक वाहनों और इलेक्ट्रिक वाहनों के उत्पादन में वृद्धि से लेड बैटरियों की मांग में भी वृद्धि होगी । वायरलेस ट्रांसमिशन टॉवरों और अन्य कॉमर्शियल केन्द्रों के लिए पॉवर बैक-अप की बढ़ती मांग के कारण लेड की मांग बढ़ती जा रही हैं।

इसप्रकार बढ़ती मांग और कम होती सप्लाई के कारण 2014 में लेड की कीमतों उछाल दर्ज की जा सकती है।

2014 में एमसीएक्स में लेड और जिंक का स्प्रैड(कीमतों का अंतर) बढ़कर 18 हो सकता है क्योंकि मजबूत फंडामेंटल के कारण जिंक की तुलना में लेड के बेहतर प्रदर्शन करने की उम्मीद है।

लेड की कीमतों को एमसीएक्स में 160 रू और एलएमई में 2650 डॉलर पर मजबूत रेजिस्टेंस है जबकि एमसीएक्स में 110 रू और एलएमई में 1750 डॉलर पर अहम सपोर्ट है।

लेड वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (MCX)

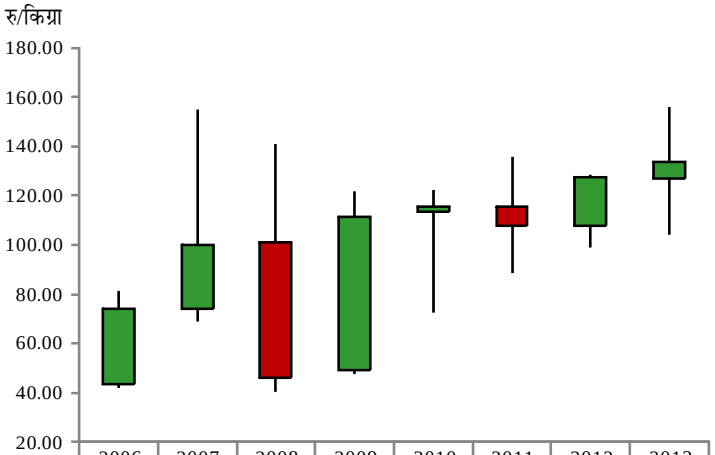

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	43.65	74.25	101.30	49.35	113.50	115.40	107.75	127.15
High	80.95	154.40	140.70	121.50	122.00	135.40	128.20	155.40
Low	42.00	69.00	40.50	47.80	72.55	88.50	99.10	104.30
Close	74.25	99.80	45.95	111.65	115.65	107.65	127.75	133.55*

*बंद भाव 13 दिसम्बर 2013 के अनुसार

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

वार्षिक आउटलुक 2014

एल्युमीनियम

दायरा: एमसीएक्स: 90-135 रु.

एलएमई: 1600-2200 डॉलर

2014 में एल्युमीनियम की कीमतें एक दायरे में बरकरार रह सकती है। इस वर्ष प्रमुख उपभोक्ता क्षेत्रों से मांग में बढ़ोतरी की भरपायी अत्यधिक सप्लाई से हो सकती है। इसके साथ ही 2014 में कच्चे तेल की कीमतों के बदलाव पर भी नजर रखनी होगी क्योंकि एल्युमीनियम की लागत में 35-40% योगदान ऊर्जा का होता है। रद्द किए गए वारंटो की संख्या और खदानों के बंद होने से भी 2014 में एल्युमीनियम की कीमतें प्रभावित होंगी । पैकेजिंग, एरोस्पेस, ऑटोमोबाइल, कंस्ट्रक्शन, और बिजली जैसे क्षेत्रों से मांग के रूख पर 2014 में एल्युमीनियम की कीमतें प्रभावित होंगी ।

चीन में मांग का भविष्य बहुत कुछ उसकी इंफ्रास्ट्रक्चर योजनाओं, खासतौर से पश्चिमी देशों में खपत की तुलना में, पर निर्भर करेगा । उत्तरी अमेरिका में एल्युमीनियम की मांग ऑटो, एरोस्पेस और पैकेजिंग जैसे क्षेत्र में होती है । लेकिन चीन में मांग कंस्ट्रक्शन के क्षेत्र में है जबकि वाहन क्षेत्र में मांग कम है और पैकेजिंग क्षेत्र में मांग इकाई अंक में ही है। इसलिए चीन की मांग में अस्थिरता रहने की संभावना है । इस बीच विश्व स्तर पर एल्युमीनियम की मांग बढ़ रही है लेकिन उत्पादन उससे भी तेज गति से बढ़ रहा है।

इंडोनेशिया द्वारा बॉक्साइट सहित अन्य खनिज अयस्कों के निर्यात पर रोक लगाने की योजना 13 जनवरी 2014 को लागू हो जाएगी । लेकिन इंडोनेशिया के बॉक्साइट का सबसे अधिक आयात करने वाला चीन इस प्रतिबंध को लेकर संशय की स्थिति में है कि आर्थिक और सामाजिक कारकों के कारण पूर्ण प्रतिबंध वास्तव में लगाया जा सकता है। बाक्साइट और अन्य खनिज अयस्कों के निर्यात से इंडोनेशिया को काफी मुद्रा प्राप्त होती है, अत: पूर्ण प्रतिबंध से अर्थव्यवस्था प्रभावित होगी । फिर भी 2014 में बाक्साइट की सप्लाई चीन के आयातकों के लिए एक प्रमुख समस्या बनी रहेगी । अनेक आयातकों ने तो हाल के महीने में सप्लाई या भंडार जमा करने के लिए वैकल्पिक स्त्रोतों की तलाश करना शुरू कर दिया है।

2014 में हाजिर बाजार के प्रीमियम से भी कीमतें प्रभावित होंगी जो अधिक माल भाड़े, वित्तीय करार और सप्लाई-मांग की स्थिति से निर्धारित होती है।

वॉल्यूम के हिसाब से एलएमई के वेयरहाउसों में एल्युमीनियम का भंडार सबसे अधिक है। वर्तमान समय में 11-12 हफ्तों की खपत के बराबर है। साप्ताहिक खपत के हिसाब से स्टॉक 2009 के उच्च स्तर से धीरे-धीरे या लगातार कम हो रहा है, जो अधिक मांग की ओर संकेत कर रहा है।

वर्ल्ड ब्यूरो ऑफ मेटल स्टैटिस्टिक्स(WBMS) के अनुसार 2013 के पहले नौ महीने में एल्युमीनियम बाजार में कुल 1.2 मिलियन टन एल्युमीनियम सरप्लस रहा है, जो पूरे 2012 में दर्ज रिकॉर्ड 539000 टन की तुलना में दोगुने से भी अधिक है।

विश्व स्तर पर एल्युमीनियम स्मेल्टर, खासतौर से छोटे स्मेल्टर, ऊर्जा की बढ़ती लागत से जूझ रहे हैं। एनर्जी की लगातार बढ़ती लागत, जो एल्युमीनियम स्मेल्टरों की कुल लागत में एक बड़ा हिस्सा होता है, के कारण पहले ही कई उत्पादक इसके शिकार हो चुके हैं। खासतौर से छोटे स्मेल्टरों को एनर्जी की अधिक लागत और एल्युमीनियम की कम कीमतों के बीच मुनाफा प्राप्त करना मुश्किल हो रहा है। छोटे उत्पादकों के पास सीमित संसाधन होने के कारण वे कम दरों पर बिजली की सप्लाई सुनिश्चित करने के लिए समझौता नही कर पाते हैं।

विश्व स्तर पर प्रमुख सूचकांकों जैसे पर्चेजिंग मैनुफैक्चरिंग इंडेक्स, कारों के उत्पादन और बिक्री एवं औद्योगिक उत्पादनों में वृद्धि से एल्युमीनियम की कीमतों को मदद मिल सकती है।

चीन ने पूराने एल्युमीनियम संयंत्रों को बंद करके एल्युमीनियम सेक्टर को पुर्नगठित करने की एक महत्वाकांक्षी योजना बनायी है। बाजार में अत्यधिक सप्लाई की स्थिति को फिर से संतुलित करने के लिए चीन अपनी क्षमता कम करना चाहता है। लेकिन पुर्नगठन की प्रक्रिया काफी धीमी है । अभी केवल योजनाओं की घोषणाओं की गई है। इन योजनाओं में ऊर्जा की कम खपत वाली टेक्नोलॉजी का विकास करना शामिल है। छोटे उत्पादन केन्द्रों को बंद किया जाएगा । वेयरहाउस नीति में बदलाव का प्रस्ताव अप्रैल 2014 से लागू हो सकता है, जिससे एल्युमीनियम की कीमतें कम हो सकती है।

2014 में एल्युमीनियम की कीमतों को एमसीएक्स में 90 रू के नजदीक और एलएमई में 1600 डॉलर के नजदीक अहम सपोर्ट रहने की उम्मीद है जबकि एमसीएक्स में 135 रू और एलएमई में 2200 डॉलर पर रेजिस्टेंस रह सकता है।

एल्युमीनियम वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (MCX)

रु/कि.ग्रा

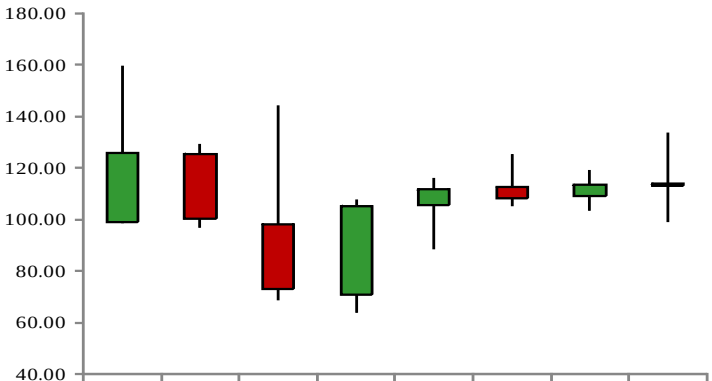

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	99.00	125.60	98.00	71.05	105.65	112.75	108.95	114.15
High	159.15	129.00	144.05	107.30	115.60	125.10	118.70	133.50
Low	98.75	96.80	68.60	64.00	88.40	105.00	103.60	99.10
Close	126.05	100.55	73.20	105.20	111.85	108.15	113.60	113.30*

*बंद भाव 13 दिसम्बर 2013 के अनुसार

स्त्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

वार्षिक समीक्षा 2013 : इलायची

पिछले वर्ष कमजोर फंडामेंटल के दबाव के कारण इलायची की कीमतों में पूरे वर्ष गिरावट होती रही । मसालों में, एमसीएक्स में इलायची की कीमतों में सबसे अधिक 48% से अधिक की गिरावट दर्ज की गई और कीमतें 559.90 के स्तर पर लुढ़क गई । इस बीच हाजिर बाजारों के अलग-अलग ऑक्शन में कीमतें 600 रू के स्तर पर नीचे आ गई । घरेलू डीलरों द्वारा ताबड़तोड़ खरीददारी के अभाव, मांग की तुलना में सप्लाई अधिक होने, बेहतर बारिश के कारण बेहतर उत्पादन और ग्वाटेमाला से अपेक्षाकृत सस्ती इलायची के आयात के कारण कीमतों में तेज गिरावट को मदद मिली । इसके अतिरिक्त अधिक उत्पादकता वाली 'नियालानी' वेरायटी और खेती की नयी तकनीक के कारण बाजारों में इलायची की आवक लगभग दोगुनी हो गई । आवक में वृद्धि का पता इस बात से चलता है कि नवम्बर के अंत तक इस फसल के इतिहास में अब तक की सबसे अधिक आवक हुई है। वर्ष के अंत तक कीमतें 600 के आसपास स्थिर हुई क्योंकि कम कीमतों के कारण किसान अपने उत्पाद को बेचने के लिए इच्छुक नही थे । मौजूदा सीजन 1 अगस्त से शुरू हुआ है और इस सीजन में 29 दिसम्बर तक कुल आवक पिछले वर्ष की समान अवधि के 6115 टन की तुलना में 11169 टन हुई है, जबकि बिक्री पिछले वर्ष की समान अवधि के 5823 टन की तुलना में 10892 टन हुई है। इस बीच अप्रैल-सितम्बर 2013 के बीच भारत से छोटी इलायची के निर्यात में अप्रैल-सितम्बर 2012 की तुलना में 51% की उछाल दर्ज किए जाने का अनुमान है, जबकि बड़ी इलायची के निर्यात में 53% की गिरावट हुई है।

वार्षिक आउटलुक 2014: इलायची

दायरा: 550-950 रु

इलायची की सप्लाई के फंडामेंटल से पता चलता है कि इलायची के प्रमुख उत्पादन क्षेत्रों में भारी बारिश के कारण 2012-13 के फसल वर्ष में बंपर उत्पादन का शुरूआती अनुमान अब दूर की कौड़ी हो गया है । अब कुल उत्पादन लगभग 14000 टन होने का अनुमान है, जो 2011-12 की तुलना में लगभग 6% कम है। 2013-14 में उत्पादक फिर से उत्पादन में कमी, लगभग 30%, का अनुमान लगा रहे हैं। केरल और कर्नाटक के प्रमुख उत्पादन क्षेत्रों में भारी बारिश, मौसम में परिवर्तन और श्रमिकों की समस्या उत्पादन में कमी के पीछे प्रमुख कारण है। इसके अतिरिक्त पिछले सीजन में कम कीमतें मिलने के कारण किसान अंतर-फसलों की खेती करना पसंद कर रहे हैं। किसानों के अनुसार 750 रू/किग्रा से कम कीमत किसी भी तरह से लाभकारी नही है। मौजूदा सीजन में 01 दिसम्बर तक वेटेड औसत कीमतें पिछले वर्ष की समान अवधि के 758.44 रू के मुकाबले 605.31 रू हो गई हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में ग्वाटेमाला में नयी फसल की कटाई शुरू हो गई है और उत्पादन पिछले वर्ष के समान ही हुआ है। ग्वाटेमाला इलायची का सबसे बड़ा उत्पादक है जहां औसत वार्षिक उत्पादन 25000 से 29000 टन के बीच होता है।

वर्तमान समय में, एमसीएक्स में इलायची वायदा का कारोबार फसल कटाई के मौजूदा दौर में प्रत्येक ऑक्शन केन्द्र पर 100 टन से अधिक की आवक के दबाव में हो रहा है। खरीददार नयी खरीददारी से दूरी बनाए हुए है और कोई जोखिम नही ले रहे है क्योंकि उन्हे डर है कि आवक की मौजूदा रफ्तार के दबाव से कीमतें 650 रू तक लुढ़क सकती हैं। लेकिन वर्ष के अंत तक 8 मिमी की बड़ी इलायची की आवक में कमी दर्ज की जा सकती है और इलायची की कीमतों को मदद मिल सकती है। इलायची वायदा की कीमतों के 600 रू से ऊपर ही रहने की संभावना है । वर्ष की पहली छमाही में कीमतों में 10-15% की बढ़त दर्ज की जा सकती है क्योंकि रमजान (28 जुलाई 2014) के दौरान मांग को पूरा करने के लिए स्टॉकिस्ट कुछ स्टॉक रोक कर रख सकते हैं। वे इस बात को भी ध्यान में रखेंगें कि उत्पादन वर्ष-दर-वर्ष कम होने से अगले सीजन में सप्लाई कम रह सकती है। निर्यात की स्थिति में, भारत का मुख्य निर्यात उत्तरी अफ्रीका और पश्चिम एशिया के क्षेत्रों में होगा, जहां सऊदी अरब सबसे बड़ा आयातक है। अमेरिका और यूरोप भारत से आयात करना नही चाहते है क्योंकि भारतीय इलायची की कीमतें अधिक हैं। यूरोपीयन यूनियन और अमेरिका में इलायची की मांग मुख्य रूप से वहां बसे हुए दक्षिण एशिया के लोगों की ओर से होती है।

सीजनल पैटर्न को देखा जाय तो वर्ष की दूसरी छमाही, अर्थात् जुलाई से अक्टूबर के, दौरान इलायची की कीमतों में 20% से अधिक की गिरावट हो सकती है क्योंकि केरल और कर्नाटक के प्रमुख उत्पादन क्षेत्रों में इस दौरान फसल की कटाई शुरू हो जाएगी । इलायची के फसल की कटाई 20 से 30 दिनों के अंतराल पर सात या आठ दौर में होती है। अक्टूबर महीने में कीमतें सबसे कम हो सकती है क्योंकि हाजिर बाजारों में इस समय थोक आवक होती है। इसके अतिरिक्त सितम्बर में ग्वाटेमाला में भी फसल की कटाई शुरू होती है और फरवरी तक चलती है। कैलेंडर वर्ष के अंतिम तीन महीने में वैवाहिक और जाड़े की सीजनल मांग के कारण इलायची की कीमतों में उछाल दर्ज की जा सकती है। लेकिन किसी भी बढ़त पर 950 के नजदीक रोक लग सकती है।

इलायची वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (MCX)

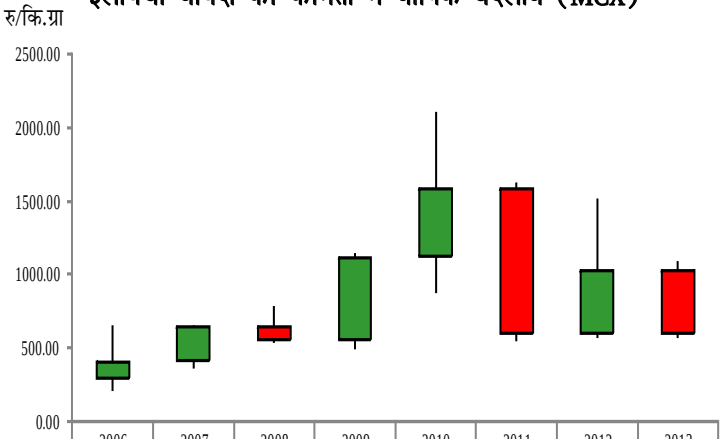

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	288.00	406.50	639.50	554.50	1118.00	1587.50	598.30	1022.10
High	638.00	643.50	773.00	1135.90	2097.00	1615.00	1508.00	1082.70
Low	206.10	362.00	530.30	487.00	868.00	545.00	570.00	559.90
Close	405.50	640.00	553.50	1112.70	1581.40	600.70	1021.70	597.10

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

वार्षिक समीक्षा 2013: हल्दी

हल्दी का कारोबारी सफर पिछले वर्ष काफी खराब रहा और राष्ट्रीय एक्सचेंजों में कीमतों में 4426 रू के निचले स्तर तक गिरावट हुई, जो 40% से अधिक की गिरावट है। उत्तर भारत से मांग और घरेलू निर्यातकों की ओर से खरीददारी की मदद से जनवरी-अप्रैल के दौरान हल्दी वायदा की कीमतें 6000-7000 रू के दायरे में स्थिर रही । आंध्रप्रदेश में भारी बारिश ने फसल को काफी नुकसान पहुंचाया और अच्छी गुणवता वाली हल्दी की उपलब्धता में कमी को लेकर आशंका बढ़ गई । आंध्रप्रदेश सरकार द्वारा जारी प्रेस सूचना के अनुसार भारी बारिश के कारण निजामाबाद यार्ड में लगभग 9240 टन हल्दी नष्ट हो गई । अप्रैल के मध्य तक हाजिर बाजारों में हाइब्रिड वेरायटी की हल्दी की कीमतें 10000 रू/क्विंटल के स्तर पर पहुंच गई । कीमतों में आगे भी बढ़ोतरी की उम्मीद से किसानों ने हल्दी का स्टॉक जमा करना शुरू किया । लेकिन मुनाफा वसूली, कम होते घरेलू ऑर्डर और स्टॉकिस्टों की ओर से कम खरीददारी के कारण फंडामेंटल बदल गया। यहां तक कि एक दिन ऐसा हुआ कि बिक्री के लिए 60% स्टॉक बिना बिके रह गया । किसानों ने मध्यम और कम गुणवता वाली हल्दी के स्टॉक को इरोद बाजार में लाया लेकिन कीमतों में बढ़ोतरी की उम्मीद से अच्छी गुणवता वाली हल्दी को रोक कर रख लिया । घरेलू बाजारों में अधिक कैरीओवर स्टॉक के कारण हल्दी की कीमतें हाजिर और वायदा दोनों बाजारों में उच्च स्तर पर बरकरार नही रह सकी । ऐसा अनुमान था कि प्रमुख हाजिर बाजारों में लगभग 60-62 लाख बैग हल्दी का स्टॉक है, जो आगामी महीनों, वर्ष के अंत तक, की मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त था । सबसे अहम यह कि हल्दी के उत्पादन क्षेत्र में वृद्धि दर्ज की गई क्योंकि किसानों ने धान के बजाय हल्दी की खेती करना पसंद किया । जहां तक निर्यात की बात है, अप्रैल-सितम्बर 2013 के बीच भारत से जीरे का निर्यात अप्रैल-सितम्बर 2012 की तुलना में मात्रा के हिसाब से महज 2% अधिक और कीमत के हिसाब से 37% अधिक हुआ है । चमकीले पीले रंग और सरक्यूमिन की अधिक मात्रा के कारण भारतीय हल्दी की विदेशों में अधिक मांग होती है।

वार्षिक आउटलुक 2014: हल्दी

दायरा: 4500-9000 रु

हल्दी का पिछले वर्ष का कैरीओवर स्टॉक लगभग 35-36 लाख बैग रहने का अनुमान है। वर्ष 2013-14 में आंध्रप्रदेश में हल्दी की खेती लगभग 53279 हेक्टेयर में हुई है जो 2012-13 की तुलना में 21.38% कम है। तमिलनाडु में मौजूदा सीजन (2013-14) में हल्दी की बुआई लगभग 18550 हेक्टेयर में हुई है जो 2012-13 की तुलना में 40% कम है। भारत में हल्दी की कीमतों को प्रभावित करने में मौजूदा स्टॉक की मात्रा, फसल की मौजूदा स्थिति, निर्यात मांग और घरेलू मांग की प्रमुख भूमिका रह सकती है । अगले सीजन में कम उत्पादन अनुमान के बावजूद अगले दो-तीन महीनों की मांग, लगभग 8-10 लाख बैग, को पूरा करने के लिए हल्दी की कमी नही है। हल्दी की वार्षिक मांग लगभग 65-75 लाख बैग होती है, जिसमें घरेलू और निर्यात मांग दोनों शामिल है।

वर्तमान समय में फसल की कटाई शुरू हो गई है और मार्च के अंत तक जारी रह सकती है। इसी क्रम में इरोद बाजार में हल्दी की नयी फसल की आवक मैसूर क्षेत्र से जनवरी से अप्रैल के बीच होने की संभावना है। जहां तक मांग की स्थिति है। घरेलू निर्यातकों को उत्तर भारत से ऑर्डर नही मिल रहा है, इसलिए हाजिर बाजारों में बिक्री काफी कम है। हाजिर बाजारों में कमजोर फंडामेंटल को देखते हुए हल्दी वायदा की कीमतों को 7000 के नजदीक रेजिस्टेंस का सामना करना पड़ सकता है। आवक दबाव और अधिक कैरीओवर स्टॉक जैसे कारकों के कारण कीमतों की बढ़त पर रोक लगी रह सकती है। इरोद के विनियमित बाजार में हल्दी की नयी आवक जनवरी मध्य में शुरू होगी और जून तक जारी रहेगी। इसके अतिरिक्त इरोद बाजार में हल्दी की नयी फसल की आवक मैसूर क्षेत्र से जनवरी से अप्रैल के बीच होगी, जिससे बिकवाली का दबाव बढ़ सकता है। मैसूर क्षेत्र से जनवरी से अप्रैल के बीच इरोद बाजार में हल्दी की नयी फसल की आवक के बाद अंथियूर, भवानी, गोबी, सत्यामंगलम, थोन्डामूतूर जैसे क्षेत्रों से भी हल्दी की आवक होती है।

लेकिन स्टॉकिस्टों की ओर से मांग और पूरे वर्ष घरेलू खरीददारों के बाजार में बने रहने के कारण कीमतों में गिरावट 4500 रू के नजदीक सीमित रह सकती है । जहां तक कीमतों में बदलाव की बात है, वर्ष की पहली छमाही में हल्दी वायदा की कीमतें 4500-8000 रू के दायरे में स्थिर कारोबार कर सकती हैं। हल्दी वायदा के जुलाई कॉन्ट्रैक्ट की कीमतें 6244 रू/क्विंटल के नजदीक कारोबार कर रही हैं। सीजनल पैटर्न से पता चलता है कि मॉनसून के शुरू होने के साथ ही हल्दी में नमी की मात्रा बढ़ जाने के कारण मांग में कमी आने से जुलाई-सितम्बर की अवधि में कीमतों में गिरावट हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त तटीय क्षेत्रों में भारी बारिश के कारण निर्यात बाधित हुआ है। वर्ष की अंतिम तिमाही में वैवाहिक सीजन की मांग और निर्यात मांग को पूरा करने के लिए निचले स्तर पर खरीददारी की मदद से हल्दी की कीमतें 9000 रू के स्तर तक पहुंच सकती हैं।

हल्दी वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव

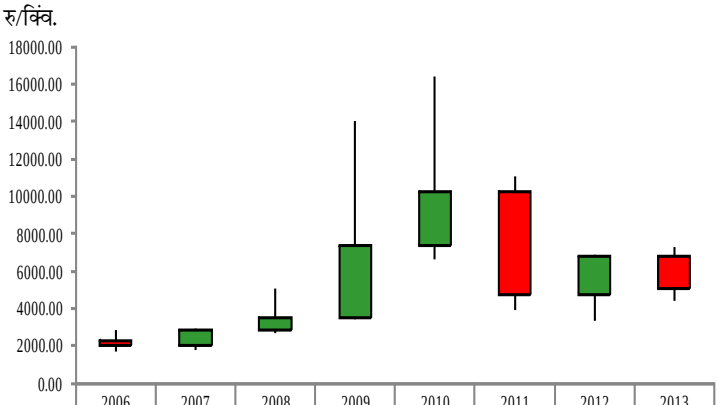

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	2267.00	2030.00	2823.00	3475.00	7341.00	10230.00	4770.00	6818.00
High	2749.00	2878.00	4994.00	13971.00	16350.00	10980.00	6832.00	7248.00
Low	1666.00	1795.00	2690.00	3456.00	6600.00	3918.00	3336.00	4426.00
Close	2027.00	2818.00	3479.00	7395.00	10244.00	4766.00	6798.00	5034.00

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

वार्षिक समीक्षा 2013: जीरा

मसालों में जीरा वायदा की कीमतों में सबसे कम 19% की गिरावट हुई और कीमतें 11895 के स्तर पर पहुंच गई । स्टॉकिस्टों की ओर से कम मांग और उत्पादक राज्यों में अनुकूल मौसम के कारण बढ़त पर रोक लगी रही । वर्ष के प्रारंभ से ही गुजरात में अधिक उत्पादन अनुमान और लगभग 8-9 लाख बैग के कैरीओवर स्टॉक के कारण कीमतों में नरमी रही । लेकिन सीरिया में संकट के कारण निर्यात ऑर्डर के भारत की ओर रूख करने के कारण अक्टूबर के मध्य तक कीमतों को 12500 रू से ऊपर सपोर्ट मिलता रहा। निर्यात के मोर्चे पर, भारत ने अप्रैल-सितम्बर 2013 के बीच जीरे का निर्यात अप्रैल-सितम्बर 2012 की तुलना में मात्रा और कीमत दोनों के हिसाब से 93% अधिक किया है। सिंगापुर के लिए मुंबई में 1% बाहरी तत्वों के साथ भारतीय जीरे की कीमत 2150-2250 डॉलर/टन के दायरे में है, जबकि यूरोप के लिए लागत और माल भाड़े के साथ 2400-2500 डॉलर/टन के दायरे में है। सप्लाई की स्थिति में, विश्व स्तर पर सप्लाई कम है क्योंकि ईरान और तुर्की जैसे जीरा उत्पादक देशों में उत्पादन कम हुआ है। 2012-13 में भारत में 400000 टन जीरा उत्पादन का अनुमान है जो पांच वर्षो के औसत से लगभग 10-15% अधिक है लेकिन पिछले वर्ष के रिकॉर्ड 461160 टन के मुकाबले कम है। वर्ष की अंतिम तिमाही में फसल कटाई सीजन के दौरान बढ़ती सप्लाई के कारण जीरे की कीमतों में फिर से गिरावट हुई । रबी फसल होने और अच्छे मॉनसून के बाद मिट्टी में बेहतर नमी और बुआई के अनुकूल बेहतर मौसम होने के कारण जीरे का उत्पादन क्षेत्र अधिक हो गया है।

वार्षिक आउटलुक 2014: जीरा

दायरा: 10500-17000 रु

भारत में जीरे की खेती रबी सीजन के दौरान होती है। विदेशों में जीरे का उत्पादन मिस्त्र, सीरिया, तुर्की और ईरान में होता है। विश्व स्तर पर जीरे का अनुमानित उत्पादन लगभग 300000 टन होता है। भारत में इस सीजन में प्रमुख उत्पादन क्षेत्रों में अनुकूल मौसम के कारण अधिक उत्पादन की उम्मीद है। इसके विपरीत कुछ किसान दालों की खेती की ओर रूख करते देखे जा रहे हैं। प्रमुख उत्पादन क्षेत्रों में जीरे की बुआई शुरू हो गई है और अनुकूल मौसम के कारण जीरे की फसल के विकास में मदद मिली है। गुजरात और राजस्थान के कुछ भागों में जीरे की बुआई अभी भी जारी है क्योंकि मौसम अभी भी बुआई और पौधे के विकास के अनुकूल है । प्रारंभिक अनुमानों से पता चलता है कि गुजरात में बुआई में लगभग 20-25% और राजस्थान में 25-30% बढ़ोतरी का अनुमान है। जीरे का उत्पादन 40-45 लाख बैग(55 किग्रा का) होने का अनुमान है जबकि 2012 में 40 लाख बैग जीरे का उत्पादन हुआ था । वर्तमान समय में जीरे का कुल कैरीओवर स्टॉक पिछले वर्ष की समान अवधि के 10 लाख बैग के मुकाबले 8 लाख बैग होने का अनुमान है।

जहां तक मांग की स्थिति है, जॉर्डन और इराक जैसे मध्य पूर्व के देशों से निर्यात मांग हो रही है । ये देश अक्सर सीरिया और तुर्की से जीरे की खरीददारी करते थे । अमेरिका, यूके, जापान और ब्राजील जीरे के अन्य प्रमुख आयातक देश हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साबूत जीरे और जीरे के पाउडर दोनों का व्यापार होता है। पश्चिमी देशों में जीरे का तेल क्यूमिन भी काफी लोकप्रिय हो रहा है। पिछले पांच वर्षो में भारत के क्यूमिन निर्यात में 9% की सीएजीआर की दर से वृद्धि दर्ज की गई है।

एनसीडीईएक्स में जीरा वायदा की कीमतें मई तक 11500-15000 रू के दायरे में कारोबार कर सकती हैं क्योंकि इस दौरान फसल कटाई के कारण कीमतों पर बिकवाली का दबाव रह सकता है। सीजनल पैटर्न को देखा जाय तो जून-जुलाई में विश्व बाजार में अभाव की अवधि का लाभ उठाते हुए कीमतों में 10-15% की वृद्धि हो सकती है । सीरिया और तुर्की में नयी फसल की कटाई अगस्त-सितम्बर में होती है । तब तक विदेशों में भारतीय जीरे को बेहतर बाजार मिल सकता है। वर्तमान समय में सिंगापुर में 1% भारतीय जीरे की कीमत 2150-2250 डॉलर/टन(FOB मुंबई) है। जबकि यूरोप के लिए 2400-2500 डॉलर/टन(CNF) है।

लम्बी अवधि में अधिक उत्पादन अनुमान और पिछले सीजन के अधिक कैरीओवर स्टॉक के कारण जीरा वायदा की कीमतों की बढ़त पर 15500-16500 रू के नजदीक रोक लग सकती है।

जीरा वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव

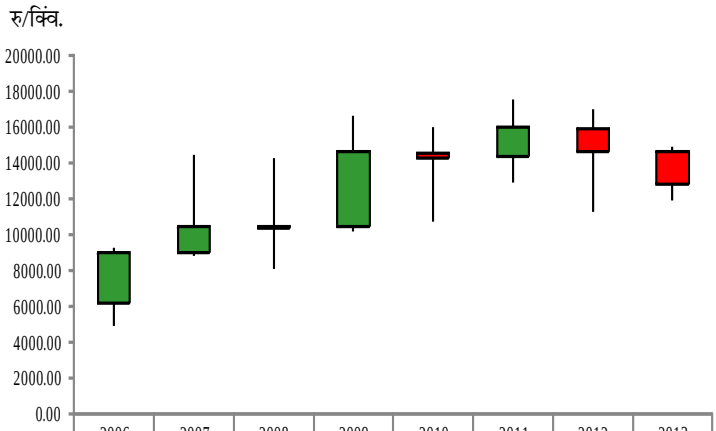

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	6170.00	9010.00	10412.00	10450.00	14590.00	14350.00	15905.00	14695.00
High	9165.50	14425.00	14190.00	16599.00	15915.00	17520.00	16975.00	14845.00
Low	4877.40	8811.00	8112.00	10227.00	10710.00	12975.00	11275.00	11895.00
Close	8977.20	10457.00	10481.00	14646.00	14326.00	16024.00	14672.50	12835.00

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

smc®
Moneywise. Be wise.

वार्षिक समीक्षा 2013: लाल मिर्च

2013 में लाल मिर्च वायदा ने धमाके के साथ शुरूआत की और जनवरी महीने में 14% से अधिक की उछाल दर्ज करते हुए 7130 रू के उच्च स्तर पर पहुंच गई । वर्ष के शुरूआती दो महीने में उत्पादन में कमी और बेहतर निर्यात मांग के कारण हाजिर और वायदा दोनों बाजारों में लाल मिर्च की कीमतों में तेजी दर्ज की गई । ऐसा देखा गया कि बुआई में लगभग 20-25% की कमी का असर उत्पादन पर पड़ा। लेकिन तीसरी तिमाही के प्रारंभ से अगस्त महीने तक उच्च स्तर पर मुनाफा वसूली और चीन में अधिक उत्पादन की संभावना और आंध्रप्रदेश के कोल्ड स्टोरेजों में लगभग 30 लाख टन के भारी भरकम कैरीओवर स्टॉक के कारण लाल मिर्च वायदा की कीमतें 31% लुढ़क गई । इसके साथ ही भारत को चीन से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा क्योंकि चीन लाल मिर्च का सबसे बड़ा उत्पादक बन गया और ओलेरेसिन निर्यातकों को देश में फैक्ट्री स्थापित करना पड़ा । आंकड़ों से पता चलता है कि भारत में ब्यादगी लाल मिर्च का उत्पादन लगभग 1 से 1.2 लाख टन हुआ है। चीन में पैपरिका का उत्पादन 1.5 लाख टन से अधिक हुआ है। मसाला बोर्ड के अनुसार अप्रैल-सितम्बर 2013 के बीच भारत से लाल मिर्च का निर्यात में अप्रैल-सितम्बर 2012 की तुलना में मात्रा के हिसाब से 3% कम हुआ है। सितम्बर महीने में फंडामेंटल ने कीमतों के परिदृश्य को बदल दिया क्योंकि मॉनसून पूरे आंध्रप्रदेश में फैलने में असफल रहा और लाल मिर्च के उत्पादन क्षेत्र में 22% की गिरावट हुई । इसके साथ ही मध्यप्रदेश में अत्यधिक बारिश के कारण पहले दौर में लाल मिर्च की अधिकांश फसल नष्ट हो गई । कर्नाटक में किसानों ने दूसरी लाभकारी फसल कपास की खेती करना पसंद किया । इसप्रकार उत्पादन क्षेत्र में कमी और निचले स्तर पर खरीददारी का फायदा उठाते हुए लाल मिर्च वायदा की कीमतें जोरदार उछाल दर्ज करते हुए वर्ष के उच्चतम स्तर 7666 पर पहुंच गई । श्रीलंका और बांग्लादेश से निर्यात मांग ने भी मजबूती का सेंटीमेंट प्रदान किया ।

वार्षिक आउटलुक 2014: लाल मिर्च

दायरा: 4800-9100 रु

वर्तमान वर्ष में आंध्रप्रदेश में लाल मिर्च का कैरीओवर स्टॉक 40 लाख बैग(35 किग्रा का एक बैग) है जबकि तमिलनाडु में 2 लाख बैग है। आंध्रप्रदेश के कृषि विभाग द्वारा जारी 2013-14 की रबी फसल रिपोर्ट के अनुसार 4 दिसम्बर 2013 को समाप्त हफ्ते तक लाल मिर्च की बुआई 27301 हेक्टेयर में हुई थी, जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 4.91% कम है। ऐसी खबरें है कि यदि जनवरी में फसल की कटाई तक मौसम अच्छा रहता है तो उत्पादन में सुधार होगा । आंध्रप्रदेश में नयी फसल की आवक जनवरी के बाद शुरू होने की संभावना है। इसके बाद मार्च में तमिलनाडु से लाल मिर्च की आवक शुरू होगी और मई तक जारी रहेगी, जिसकी बुआई अक्टूबर-नवम्बर में हुई थी । वर्तमान समय में नयी फसल की आवक मध्यप्रदेश से हो रही है । मध्यप्रदेश में लाल मिर्च का उत्पादन पिछले अनुमान 45-50 लाख बैग की तुलना में लगभग 38-40 लाख बैग होने की संभावना है।

घरेलू और निर्यात बाजार इंटेलीजेंस सेल तमिलनाडु का मानना है कि फरवरी-मार्च 2014 में लाल मिर्च की कीमतें 5500-6000 रू के दायरे में कारोबार करेंगी । रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि वर्तमान वर्ष में सामान्य उत्पादन अनुमान और बेहतर घरेलू एवं निर्यात मांग के कारण कीमतें उपर्युक्त दायरे से ऊपर कारोबार कर सकती है। इसके बाद गर्मी के मौसम के शुरूआत के साथ ही हाजिर बाजारों के बंद होने से मांग प्रभावित हो सकती है जिसका असर कीमतों पर पड़ सकता है। घरेलू एक्सचेंजों में लाल मिर्च वायदा की कीमतों में 4800 रू के सपोर्ट से ऊपर मजबूती का रूख बरकरार रह सकता है। जबकि अगस्त से दिसम्बर के दौरान कीमतें 7100 के स्तर को पार करते हुए 9100 रू तक बढ़त दर्ज कर सकती हैं।

भारत का मुख्य प्रतिस्पर्धी चीन में लाल मिर्च पैपरीका के प्रमुख उत्पादक शिनजियांग में 2013 में कुल उत्पादन लगभग 70-80 हजार टन हुआ है जो वर्ष 2012 की तुलना में लगभग 20 हजार टन कम है। लेकिन गुणवता बेहतर है और रंग काफी लाल है ।

लाल मिर्च वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव

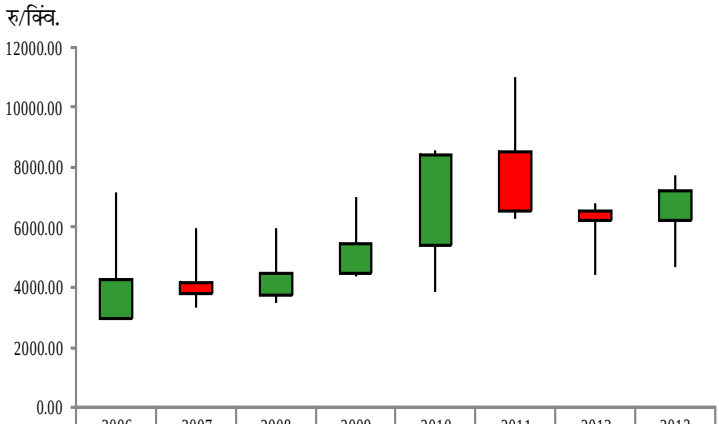

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	2963.00	4156.00	3766.00	4484.00	5420.00	8490.00	6560.00	6240.00
High	7136.00	5920.00	5918.00	6951.00	8540.00	10970.00	6748.00	7666.00
Low	2946.00	3334.00	3503.00	4375.00	3833.00	6274.00	4430.00	4650.00
Close	4272.00	3777.00	4469.00	5439.00	8410.00	6556.00	6216.00	7224.00

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

नोट: लाल मिर्च का किसी भी वायदा कॉन्ट्रैक्ट में फिलहाल कारोबार नहीं हो रहा है।

वार्षिक समीक्षा 2013: सोयाबीन

पिछले वर्ष घरेलू एक्सचेंजों में जनवरी से अप्रैल के मध्य के बीच उतार-चढ़ाव के साथ कारोबार करते हुए सोयाबीन वायदा की कीमतो में 3100 के स्तर से लगभग 35% की बढ़त दर्ज की गई । यह बढ़त सोयामील की जोरदार खरीददारी के कारण हुई । साल्वेंट एक्सट्रैक्टर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के आंकड़ों के अनुसार इस अवधि में सोयामील का निर्यात जनवरी-अप्रैल 2012 के 1593529 टन की तुलना में 1633622 टन हुआ । पशु आहार की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय मांग के कारण भारत से ऑयलमील के निर्यात में वृद्धि हुई है। ईरान, थाइलैंड, वियतनाम और जापान प्रमुख आयातक देश है। डॉलर के मुकाबले रूपये के कमजोर होने से भी सेंटीमेंट को मदद मिली । मई-जुलाई अवधि में सोयाबीन की कीमतों में 4182 के स्तर से लगभग 29% की भारी गिरावट दर्ज की गई और कीमतें 2973 के स्तर पर पहुंच गई । मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के प्रमुख उत्पादन क्षेत्रों में बेहतर मॉनसून के कारण मिट्टी में अच्छी खासी नमी हो गई, जो बुआई के लिए काफी उपयुक्त स्थिति होती है। इस प्रकार बेहतर मॉनसून का असर किसानों द्वारा तिलहन की अधिक बुआई के रूप में दिखाई दिया । सप्लाई को देखें तो केन्द्रीय तेल उद्योग एवं व्यापार संगठन (COOIT) के अनुसार पिछले वर्ष सोयाबीन के उत्पादन अनुमान 113.40 लाख टन को कम करके 107.00 लाख टन कर दिया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आईजीसी की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार दक्षिण अमेरिका में बंपर उत्पादन के कारण 2013-14 में सोयाबीन का उत्पादन पिछले वर्ष की तुलना में 4% की वृद्धि के साथ रिकॉर्ड 282 मिलियन टन होने का अनुमान है। अगस्त के बाद कारोबारियों ने निचले स्तर पर खरीददारी और डॉलर के मुकाबले रिकॉर्ड निचले स्तर पर पहुंचे रूपये का लाभ उठाया, जिससे सोयाबीन की कीमतें घरेलू एक्सचेंजों में लगभग 35% की उछाल के साथ 4276 रू के उच्च स्तर पर पहुंच गई । सोयाबीन के प्रमुख उत्पादन क्षेत्रों में भारी बारिश के कारण बुआई को लेकर आशंका के कारण ऐसा हुआ । सोयाबीन प्रोसेसर एसोसिएशन द्वारा कराए गए सर्वे के अनुसार खरीफ 2013 में सोयाबीन की उत्पादकता में 8.94% की गिरावट हुई है।

सीबोट में अमेरिकी सोयाबीन वायदा की कीमतें 1630 के उच्च स्तर से 1255 के निचले स्तर के बीच कारोबार करती रही । गर्म और सूखे मौसम के कारण फसल उत्पादकता में कमी की आशंका और सोयामील की जोरदार निर्यात मांग के कारण मजबूती के सेंटीमेंट को मदद मिली । अमेरिकी कृषि विभाग के अनुसार बाजार वर्ष 2013/14 में 21 नवम्बर तक सोयाबीन की कुल बिक्री पांच वर्षो के औसत 64.70% के मुकाबले 93.5% रही है। इसके विपरीत ब्राजील का मौसम फसल के काफी अनुकूल है और दक्षिण अमेरिका में बारिश के बाद फसल के समय से पहले तैयार होने और उत्पादकता में बढ़ोतरी की संभावना है।

वार्षिक आउटलुक 2014: सोयाबीन दायरा: एनसीडीईएक्स: 3000-4800 रु सीबोट: 1135-1650 डॉलर

भारी भरकम सप्लाई और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में नरमी के रूझानों के कारण पिछले दो महीने से सोयाबीन की कीमतों की तेजी थमती नजर आयी है। लेकिन लगातार सीजनल मांग के कारण कीमतों में तेज गिरावट की संभावना नही है। केन्द्रीय तेल उद्योग एवं व्यापार संगठन (COOIT) के अनुसार 2013-14 में सोयाबीन का उत्पादन 102.30 लाख टन और उत्पादकता 837 किग्रा/हेक्टेयर होने का अनुमान है जबकि 2012-13 में सोयाबीन का उत्पादन 107.00 लाख टन और उत्पादकता 1000 किग्रा/हेक्टेयर थी । अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अमेरिका और दक्षिण अमेरिका के प्रमुख उत्पादक राज्यों में सोयाबीन के अधिक उत्पादन अनुमान से बाजार के सेंटीमेंट पर दबाव रहेगा । अमेरिकी कृषि विभाग की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार अर्जेंटिना में अधिक उत्पादन क्षेत्र के कारण 54.50 मिलियन टन सोयाबीन उत्पादन का अनुमान है जो पिछले वर्ष की तुलना में 1 मिलियन टन अधिक होगा । ब्राजील में सोयाबीन का उत्पादन 88.50 मिलियन टन के लक्ष्य तक पहुंच गया है।

जहां तक मांग की स्थिति है, बाजार वर्ष 2013-14 में चीन में सोयाबीन का आयात 67.5 मिलियन टन से अधिक हो जाने का अनुमान है जबकि 2012-13 में अनुमानत: 60 मिलियन टन आयात हुआ था । COOIT के अनुसार, घरेलू बाजार में 2013-14 सीजन में पेराई के लिए लगभग 89.80 लाख टन सोयाबीन सरप्लस रहने का अनुमान है जबकि 2012-13 में 97 लाख टन सरप्लस था । बुआई के लिए पिछले वर्ष के 7.50 लाख टन की तुलना में इस वर्ष 9 लाख टन सोयाबीन रखे जाने का अनुमान है। 2012-13 में 2.50 लाख टन की तुलना में इस वर्ष 3.50 लाख टन सोयाबीन का सीधा खपत होने का अनुमान है। निर्यात के मोर्चे पर, 2013-14 में भारत का सोयामील निर्यात 4 मिलियन टन तक ही सीमित रह सकता है क्योंकि फसल कटाई के दौरान हुई बारिश से फसल प्रभावित हुई है। निर्यात की स्थिति रूपये के कारोबार पर भी निर्भर करेगी ।

कीमतों में बदलाव को देखें तो वर्तमान समय में घरेलू बाजार में नयी फसल की आवक होने से सोयाबीन वायदा पर थोड़ा बिकवाली का दबाव रह सकता है। कीमतों को 4000 रू के नजदीक रेजिस्टेंस रह सकता है। एनसीडीईएक्स में सोयाबीन वायदा का फॉरवर्ड कर्व बैकवार्डेशन में है, जिससे पता चलता है कि कैलेंडर वर्ष की पहली तिमाही में सोयाबीन वायदा की कीमतें 3500-4000 रू के दायरे में कारोबार कर सकती हैं। सीजनल आधार पर देखें, तो अप्रैल महीने में निचले स्तर पर खरीददारी हो सकती है और आवक में कमी वाले सीजन के दौरान जुलाई तक कीमतों में लगभग 5-6% की बढ़त दर्ज की जा सकती है। इसके बाद सितम्बर तक कीमतों में लगभग 10-15% की गिरावट हो सकती है क्योंकि घरेलू बाजार में फसल की नयी आवक हो सकती है। वर्ष की अंतिम तिमाही में सोयाबीन की कीमतें 3000 के नजदीक स्थिर रह सकती है और लगातार निर्यात मांग और निचले स्तर पर खरीददारी की मदद से कीमतों में थोड़ी उछाल दर्ज की जा सकती है।

सीबोट में सोयाबीन वायदा के लम्बी अवधि के रूझान को देखा जाय तो अर्जेंटिना और कनाडा में सोयाबीन के उत्पादन में वृद्धि के कारण विश्व स्तर पर रिकॉर्ड 284.9 मिलियन टन के उत्पादन अनुमान के कारण कीमतों में नरमी का रूझान देखा जा सकता है। सीबोट में सोयाबीन (नवम्बर 14) वायदा की कीमत 11.29 डॉलर/बुशल रहने का अनुमान है, जो मौजूदा कीमत की तुलना में 12% अधिक है।

सोयाबीन वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव

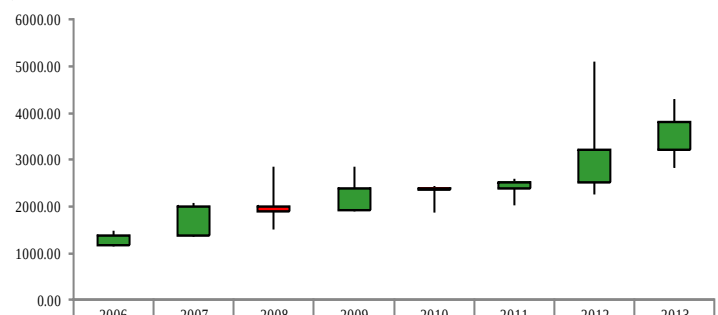

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	1187.00	1388.00	1991.00	1919.50	2389.00	2388.00	2521.00	3214.00
High	1448.00	2047.00	2826.00	2824.00	2413.00	2557.00	5064.50	4276.00
Low	1145.00	1345.20	1517.00	1907.00	1878.00	2031.00	2257.00	2838.00
Close	1392.85	1997.00	1909.00	2383.50	2374.50	2514.00	3203.00	3820.00

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

वार्षिक समीक्षा 2013: सरसों

वर्ष की पहली छमाही में एनसीडीईएक्स में सरसों वायदा की कीमतों में 4290 के उच्च स्तर से 20% की गिरावट हुई । बुआई के दौरान मिट्टी में बेहतर नमी और अधिक क्षेत्र में बुआई के कारण गिरावट हुई । पिछले वर्ष के शुरूआती महीनों में आवश्यक बारिश और लगातार अनुकूल मौसम के कारण उत्पादन में वृद्धि हुई । साल्वेंट एक्सट्रैक्टर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के आंकड़ों के अनुसार 2012-13 में बुआई का क्षेत्र बढ़कर 67.49 लाख हेक्टेयर हो गया था, जबकि उत्पादकता पिछले 893 किग्रा/हेक्टेयर के अनुमान की तुलना में 24% की बढ़ोतरी के साथ 1103 किग्रा/हेक्टेयर हो गई है। केन्द्रीय तेल उद्योग एवं व्यापार संगठन (COOIT) के अनुसार 2012-13 में रबी तिलहन का उत्पादन 2011-12 के 58.80 लाख टन की तुलना में 71.50 लाख टन होने का अनुमान है। पिछले रबी सीजन के प्रारंभ में साल्वेंट एक्सट्रैक्टर एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने तिलहन की उत्पादकता बढ़ाने के लिए गुजरात की अधिक उत्पादकता वाली सरसो-3 वेरायटी की खरीददारी की और उसे गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के प्रगतिशील किसानों के बीच वितरित किया । जहां तक मांग की बात है, डॉलर के मुकाबले रूपये के रिकॉर्ड निचले स्तर पर पहुंचने के कारण कीमतों की तेजी को मदद मिली और गिरावट पर रोक लग गई और सरसो वायदा की कीमतें 3000 के स्तर से ऊपर बने रहने में कामयाब रही। कीमतों में 28% की तेजी दर्ज की गई और कीमतें 3700 के नजदीक स्थिर हुई । जनवरी-अक्टूबर 2013 के दौरान सरसोमील का निर्यात पिछले वर्ष की समान अवधि के मुकाबले 10% की बढ़ोतरी के साथ 760654 टन हुआ । दक्षिण कोरिया, थाइलैंड, इंडोनेशिया, मलेशिया, ताइवान और वियतनाम जैसे देशों के लिए भारत सरसोमील का सबसे बड़ा बाजार रहा । अंतरराष्ट्रीय बाजार में यूरोप से कनाडा और यूक्रेन में रिकॉर्ड उत्पादन के कारण सप्लाई की अधिकता होने से पेरिस के NYSE LIFFE में सरसो वायदा की कीमतों में पिछले वर्ष 20% की गिरावट हुई । अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, ऑयल वर्ल्ड के अनुसार विश्व स्तर पर सरसों का उत्पादन पिछले वर्ष की तुलना में 2.5% की वृद्धि के साथ अब तक के रिकॉर्ड 70 मिलियन टन होने का अनुमान है।

वार्षिक आउटलुक 2014: सरसों

दायरा: 2700-4300 रु

सरसों, सोयाबीन के नक्शेकदम का अनुसरण कर रहा है और सप्लाई के दबाव के कारण उच्च स्तर पर बरकरार नही रह सका । सरसो अनुसंधान एवं संवर्धन कंसोर्टियम (MRPC)के अनुसार भारत में सरसों का उत्पादन 11% की वृद्धि के साथ 78 लाख टन होने का अनुमान है । देर से हुई बारिश के कारण मिट्टी में अधिक नमी, तापमान में गिरावट और अधिक न्यूनतम समर्थन मूल्य जैसी अनुकूल परिस्थितियों के कारण राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के किसानों को मौजूदा रबी सीजन में अधिक क्षेत्र में सरसों की बुआई करने का अवसर मिला । कृषि विभाग के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार 13 दिसम्बर तक प्रमुख सरसों उत्पादक राज्य राजस्थान में बुआई क्षेत्र 2.41 लाख हेक्टेयर की बढ़ोतरी के साथ 29.73 लाख हेक्टेयर हो गया है जबकि उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश में बुआई क्षेत्र पिछले वर्ष की तुलना में थोड़ा कम है।

अमेरिकी कृषि विभाग के अनुसार कनाडा और ऑस्ट्रेलिया में सरसों के उत्पादन में वृद्धि के कारण विश्व स्तर पर सरसों का उत्पादन 2.1 मिलियन टन की वृद्धि के साथ रिकॉर्ड 70 मिलियन टन होने का अनुमान है। एक नवीनतम सर्वे के अनुसार, कनाडा में सरसों का उत्पादन 1.9 मिलियन टन बढ़कर 18 मिलियन टन होने का अनुमान है। अनुकूल मौसम के कारण सरसों की उत्पादकता में रिकॉर्ड बढ़ोतरी हुई है।

आगामी दिनों में जनवरी में मौसम की स्थिति फसल उत्पादन के आकार में प्रमुख भूमिका निभायेगी । वर्ष की पहली छमाही में सरसो वायदा की कीमतों में 2700 रू तक गिरावट होने की संभावना है क्योंकि फरवरी से मार्च के बीच फसल कटाई के दौरान आवक शुरू होने और मई तक आवक के अधिकतम होने का दबाव कीमतों पर रहेगा । अंतरराष्ट्रीय बाजार में यूरोपीयन यूनियन के किसान सामान्यतया अगस्त से अक्टूबर के दौरान फसल की बुआई करते है और गर्मियों के दौरान फसल की कटाई करते हैं।

वर्ष की दूसरी छमाही में तिलहन की मांग में बढ़ोतरी होने की संभावना है क्योंकि इस दौरान दिवाली से पहले सरसो तेल की मांग बढ़ जाती है और वर्ष की समाप्ति तक बरकरार रहती है। सरसों की कीमतों को 2700 रू के नजदीक सपोर्ट रहने की संभावना है जबकि कीमतें 4000 रू के स्तर को पार करते हुए 4300 रू के स्तर तक बढ़त दर्ज की जा सकती है।

जहां तक मांग की स्थिति है, रेपमील का निर्यात जारी रहने की संभावना है क्योंकि ऐसा माना जा रहा है कि पशुओं के आहार के लिए एक प्रमुख घटक है।

सरसों वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव

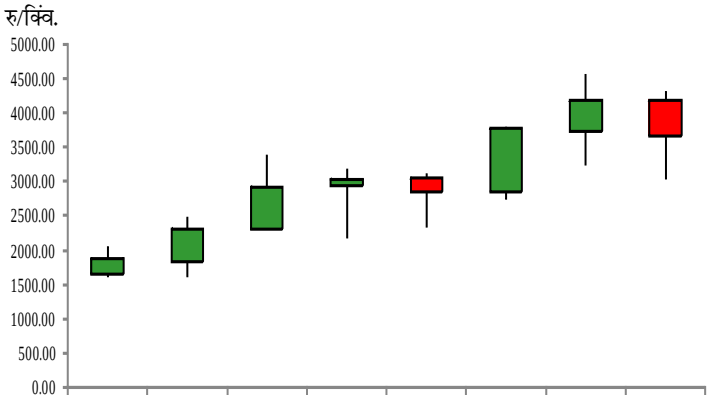

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	1650.00	1837.50	2300.75	2930.00	3040.50	2855.00	3722.00	4170.00
High	2045.00	2465.00	3375.00	3169.00	3090.00	3776.00	4538.00	4290.00
Low	1605.00	1610.50	2300.50	2160.50	2319.00	2724.00	3235.00	3020.00
Close	1866.75	2308.25	2914.25	3034.50	2846.50	3776.00	4179.00	3660.00

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

वार्षिक समीक्षा 2013: खाद्य तेल

2013 में एमसीएक्स में क्रूड पॉम ऑयल वायदा ने खाद्य तेलों के समूह में सबसे बेहतरीन प्रदर्शन किया और 25 % से अधिक की तेजी दर्ज करते हुए 585.10 के उच्च स्तर पर पहुंच गया । बीएमडी में सीपीओ की कीमतें 2130 के स्तर पर सपोर्ट के साथ लगभग 9% की तेजी दर्ज की । डॉलर के मुकाबले मलेशियाई रिंगिट के लगभग 12.88% कमजोर होकर 3.3345 के स्तर पर पहुंचने से विदेशी खरीददारों की ओर से खरीददारी में वृद्धि हुई । लेकिन बढ़त पर 2700 के नजदीक रोक लग गई क्योंकि मलेशियन पॉम ऑयल बोर्ड के अनुसार अक्टूबर में मलेशिया में पॉम तेलों का उत्पादन बढ़कर 13 महीने के उच्च स्तर 1.97 मिलियन टन पर पहुंच गया और भंडार बढ़कर 1.85 मिलियन टन हो गया, जो अप्रैल के बाद सबसे अधिक है।

घरेलू बाजार में रिफाइंड सोया तेल वायदा की कीमतें 650-750 के बड़े दायरे में स्थिर रही । खाद्य तेलों की बढ़ती खपत, घरेलू बाजार में सोया तेल की कम उपलब्धता और डॉलर के मुकाबले रूपये में भारी गिरावट के बाद आयात महंगा होने के कारण कीमतों में तेजी को मदद मिली। अगस्त में डॉलर के मुकाबले रूपया रिकॉर्ड निचले स्तर 68.85 पर पहुंच गया था । लेकिन इसके बाद थोड़ी मजबूती दर्ज करते हुए 62.60 के आसपास स्थिर हुआ है। पूरे वर्ष में रूपया 17.87% कमजोर हुआ है। भारत में खाद्य तेलों की मांग, जो लगभग 17-18 मिलियन टन है, का अधिकांश भाग आयात से पूरा होता है जो मलेशिया और इंडोनेशिया से होता है।

कुल मिलाकर 2012-13 में खाद्य तेलों का उत्पादन 2011-12 के 8.1 मिलियन टन के मुकाबले लगभग 8 मिलियन टन पर ही स्थिर रहा, जबकि जनसंख्या(1.76%) और प्रति व्यक्ति आय(3%) में वृद्धि के कारण खपत में 3% की वृद्धि हुई है। साल्वेंट एक्सट्रैक्टर एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अनुसार तेल वर्ष 2012-13(नवम्बर 12 से अक्टूबर 13) की पहली तिमाही में पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में खाद्य तेलों का अधिक आयात हुआ था, दूसरी तिमाही में पिछले वर्ष की समान अवधि के बराबर आयात हुआ, तीसरी तिमाही में आयात में 8.02% की बढ़ोतरी हुई जबकि चौथी तिमाही में 9.68% की गिरावट हुई । कुल मिलाकर पिछले तेल वर्ष के दौरान खाद्य तेलों के आयात में 4.77% की वृद्धि हुई । इसके विपरीत भारतीय बंदरगाहों पर खाद्य तेलों का भंडार 31 अक्टूबर 2012 को 15.7 लाख टन की तुलना में घटकर 14.0 लाख टन रह गया ।

वार्षिक आउटलुक 2014:

दायरा: रिफाइंड सोया 600-780 रु

सीपीओ (एमसीएक्स) 450-630 रु

सीपीओ (बीएमडी) 2100-3000 रिंगिट

खाद्य तेल

COOIT के अनुसार 2013-14 सीजन के खरीफ तिलहन और दूसरे स्रोतों से खाद्य तेल की कुल उपलब्धता 2012-13 के 52.65 लाख टन की तुलना में 58.03 लाख टन रहने का अनुमान है। आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने 12वीं योजना के दौरान राष्ट्रीय तिलहन और पॉम तेल मिशन के क्रियान्यवयन को मंजूरी दे दी है, जिसके लिए 3507 करोड़ रूपये का आवंटन किया गया है। इससे तिलहन के उत्पादन में 6.58 मिलियन टन की बढ़ोतरी का अनुमान है। इस मिशन के तहत पॉम तेलों के पेड़ों की खेती 1.25 लाख हेक्टेयर अतिरिक्त क्षेत्र में की जाएगी और पॉम फलों की उत्पादकता 4927 किग्रा/हेक्टेयर से बढ़ाकर 15000 किग्रा/हेक्टेयर की जाएगी । इस मिशन के द्वारा 12वीं योजना के अंत तक खाद्य तेलों के उत्पादन में 2.48 मिलियन टन की वृद्धि होगी, जिसमें तिलहन से 1.70 मिलियन टन, पॉम तेल में 0.60 मिलियन टन और पेड़ वाले तिलहन से 0.18 मिलियन टन की वृद्धि होगी ।

भारत खाद्य तेल की मांग और सप्लाई के अंतर को पाटने के लिए मलेशिया और इंडोनेशिया से आयात पर निर्भर है। तेल वर्ष 2013-14(नवम्बर-अक्टूबर) में 2012-13 के 106 लाख टन की तुलना में कुल 112 लाख टन तेल (खाद्य और अखाद्य) का आयात किए जाने का अनुमान है। इसका मुख्य कारण प्रमुख निर्यातक मलेशिया और इंडोनशिया में विपरीत शुल्क ढांचा और कच्चे एवं रिफाइंड तेलों के आयात शुल्कों के अंतर का कम होना है। वर्तमान समय में रिफाइंड तेलों पर आयात शुल्क 7.5% और कच्चे खाद्य तेलों में लगभग 2.5% है। औद्योगिक संस्था साल्वेंट एक्सट्रैक्टर एसोसिएशन आयात को कम करने और घरेलू मिलों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए रिफाइंड तेलों पर आयात शुल्क को बढ़कर 12.50% करने की मांग कर रही है ।

विपरीत शुल्क ढांचें के कारण भारतीय कारोबारी कच्चे तेलों के बजाय रिफाइंड खाद्य तेलों का आयात करना पसंद कर रहे हैं। विपरीत शुल्क ढांचें का भारतीय तेल उद्योग पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है क्योंकि इस कारण कच्चे मालों पर अधिक कीमतों का भुगतान करना पड़ रहा है जबकि तैयार उत्पादों पर कम शुल्क होने से लागत कम है। कारोबारी कच्चे और रिफाइंड खाद्य तेलों के आयात शुल्क के बदलाव पर पैनी नजर रखेंगें ।

वर्तमान समय में 1 दिसम्बर तक विभिन्न बंदरगाहों पर खाद्य तेलों का कुल भंडार लगभग 590000 टन रहने का अनुमान है और लगभग 880000 टन पाइपलाइन में रहने का अनुमान है।

मांग की स्थिति में, भारतीय घरों में भोजन पर होने वाले खर्च में खाद्य तेल एक अहम घटक है और प्रति व्यक्ति खपत में 3 से 4% प्रतिवर्ष की बढ़ोतरी हो रही है। खपत में यह बढ़ोतरी बढ़ती आबादी, बढ़ती आय और सप्लाई में सुधार के कारण हो रही है। भारत में प्रति व्यक्ति खपत में बढ़ोतरी (बाजार वर्ष 2012-13 में 14.04 किग्रा) के बावजूद विश्व स्तर पर प्रति व्यक्ति औसत खपत 22.4 किग्रा की तुलना में कम है।

अंतरराष्ट्रीय बाजार के फंडामेंटल से पता चलता है कि इंडोनेशिया में उत्पादन में 1998 के बाद पहली बार गिरावट होने की संभावना है। इस बीच मलेशिया में भी उत्पादन में गिरावट हो सकती है क्योंकि हाल ही में आई बाढ़ ने कई पॉम उत्पादक क्षेत्रों को प्रभावित किया है। दूसरी ओर पॉम ऑयल का भंडार 1.98 मिलियन टन है जो नवम्बर के 2.57 मिलियन टन से 23% कम है।

निर्यात शुल्क को देखें तो मलेशिया ने मार्च में भंडार के उच्चतम स्तर पर पहुंचने के बाद पॉम तेलों की कच्ची वेरायटी पर निर्यात शुल्क में कोई बदलाव नही किया है। इंडोनेशिया ने निर्यात शुल्क नवम्बर के 9% से बढ़ाकर दिसम्बर 12% कर दिया है।

कीमतों में बदलाव की संभावना को देखें तो बुर्सा मलेशिया डेरिवेटिव्स में पॉम ऑयल को 2100 से ऊपर सपोर्ट बरकरार रहने की संभावना है। बायोडीजल में पॉम तेलों के बढ़ते इस्तेमाल और साबुन से लेकर नूडल्स एवं चॉकलेट जैसे विभिन्न उद्योगों में पॉम तेलों के विविध अनुप्रयोगों के कारण कीमतों को मदद मिलती रह सकती है। चीन, भारत, बांग्लादेश और पाकिस्तान जैसे प्रमुख पॉम ऑयल बाजारों के अतिरिक्त मध्य-पूर्व और उत्तरी अफ्रीका के देश भी पॉम ऑयल के प्रमुख बाजारों के रूप में उभर रहे हैं। जनवरी से अक्टूबर के दौरान बीएमडी में पॉम ऑयल की कीमतें 2250-2850 रू के दायरे में कारोबार कर सकती है क्योंकि उत्पादन चक्र के अनुसार जुलाई से अक्टूबर के दौरान उत्पादन अधिकतम होता है। वर्ष की अंतिम तिमाही में, जब नवम्बर से जनवरी और फरवरी तक उत्पादन अक्सर सबसे कम होता है, कीमतों में बढ़त दर्ज की जा सकती है।

घरेलू बाजार में क्रूड पॉम ऑयल की कीमतों को 630 के स्तर पर रेजिस्टेंस बरकरार रह सकता है और मांग में कमी के कारण गिरावट दर्ज की जा सकती है क्योंकि जाड़े के दिनों में यह जमने लगता है । गर्मियों की सीजन की शुरूआत के साथ ही कीमतों में गिरावट जारी रह सकती है और अगस्त-सितम्बर तक कीमतें 540 रू से नीचे टूटकर 450 तक गिरावट दर्ज कर सकती हैं। इसी तरह रिफाइंड सोया तेल वायदा की कीमतों में 600 रू तक गिरावट हो सकती है जबकि 780 के नजदीक रेजिस्टेंस का सामना करना पड़ सकता है।

वर्ष की अंतिम तिमाही में वैवाहिक और जाड़े की सीजनल मांग के कारण खाद्य तेल की कीमतों में 10-15% की बढ़त दर्ज की जा सकती है। कारोबारी रूपये के कारोबार पर भी पैनी नजर रखेंगें, जिससे आयात का वॉल्यूम और खरीददारी प्रभावित होती रह सकती है।

रिफाइंड सोयातेल वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव

रु/10 किग्रा

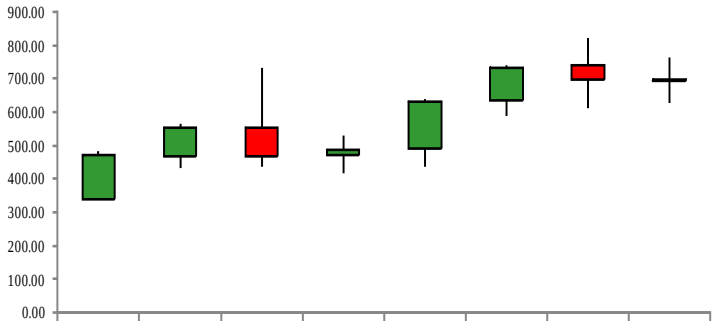

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	339.10	469.15	553.10	471.60	489.90	636.00	738.00	697.95
High	478.30	559.15	729.20	525.90	635.50	735.50	817.00	760.80
Low	337.70	431.45	436.85	418.00	437.50	588.50	611.50	628.00
Close	471.25	552.70	468.05	487.85	632.55	733.50	695.80	695.80

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

सीपीओ वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव (MCX)

रु/10 किग्रा

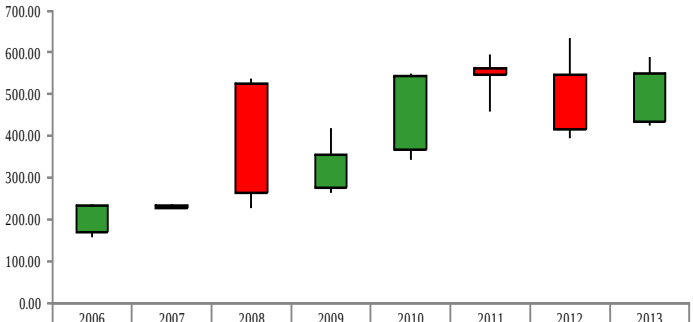

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	168.00	234.20	526.30	274.80	366.20	562.00	548.00	435.10
High	234.20	234.20	534.80	415.50	547.00	591.00	632.20	585.10
Low	157.00	227.00	228.50	264.60	344.20	459.20	393.00	426.40
Close	234.20	228.50	263.60	355.60	544.20	546.50	417.10	550.60

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

वार्षिक समीक्षा 2013: चीनी

वर्ष के प्रारंभ से ही हाजिर बाजारों के साथ-साथ राष्ट्रीय एक्सचेंजों में चीनी की कीमतों में 15% से अधिक की भारी गिरावट हुई है। मिलों के यहां एस-ग्रेड चीनी की कीमतें लुढ़ककर 2800 रू/क्विं. पर पहुंच गई जबकि एनसीडीईएक्स में कीमतें 2680 रू के निचले स्तर पर पहुंच गई। मांग के अभाव और बिकवाली के बढ़ते दबाव के कारण चीनी की कीमतों में पूरे वर्ष गिरावट होती रही । हाजिर बाजारों में घरेलू खरीददारों ने स्थानीय स्तर से ही अपनी जरूरतों को पूरा किया, इसलिए उत्पादकों को स्थानीय बाजारों में चीनी बेचने के लिए बाध्य होना पड़ा । स्टॉकिस्ट भी थोक खरीददारी से दूर रहे क्योंकि उनके पास पर्याप्त भंडार था । इसके अतिरिक्त अपने स्टॉक में कमी करने के लिए मिलों द्वारा चीनी की लगातार बिक्री करने और देश में चीनी की पर्याप्त उपलब्धता के बावजूद विदेशों से सस्ती कच्ची चीनी आयात करने के कारण भी कीमतों में नरमी बरकरार रही । चीनी की औसत उत्पादन लागत लगभग 36000 रू/टन आंकी गई जबकि बाजार मूल्य लगभग 31000-32000 रू/टन रही, जिससे लगभग 4000 रू/टन का विशुद्ध घाटा हुआ। अनुमानित उत्पादन लगभग 24 मिलियन टन हुआ है और 22.5 मिलियन टन की अनुमानित मांग को पूरा करने के बाद लगभग 1.5 मिलियन टन शेष बच गया । दूसरी ओर 2012-13 सीजन में निर्यात बिल्कुल नगण्य हुआ । फिर भी वर्ष के मध्य में केन्द्र सरकार ने विदेशों से आयात को रोकने के लिए चीनी पर सीमा शुल्क बढ़ाकर 15% करने का फैसला किया । पिछले वर्ष सरकार ने एक अहम फैसले के तहत दिसम्बर से मार्च के बीच अनबिकी चीनी को स्वत: लेवी चीनी में बदलने के मानकों में छूट दे दी । इससे एक नियत समयावधि में चीनी के कोटे को बेचने का मिलों पर से दबाव कम हो गया और चीनी की कीमतों की भारी गिरावट पर रोक लगी । दूसरी बात यह है कि सरकार ने चीनी मिलों को खुले बाजार में चीनी के कोटे को बेचने की छूट दी । अंत में, आर्थिक मामलों की कैबिनेट कमिटी ने चीनी को कुछ छूटों के साथ नियंत्रण मुक्त करने का फैसला किया । सभी कमजोर फंडामेंटल के कारण 2012-13 सीजन में चीनी की कीमतों में नरमी रही और चीनी का कैरीओवर स्टॉक 8.8 मिलियन टन रहा । अंतरराष्ट्रीय बाजार में ब्राजील में चीनी के बढ़ते उत्पादन अनुमान के दबाव से न्यूयार्क में चीनी की कीमतें साढ़े तीन वर्षो के निचले स्तर पर पहुंच गई ।

वार्षिक आउटलुक 2014: चीनी

दायरा: 2400-3200 रु

2013 की तरह ही स्थिर मांग और लगातार सप्लाई के कारण चीनी की कीमतें नरमी के जाल में उलझी रह सकती है। गर्मियों के दौरान सीजनल मांग के कारण गिरावट सीमित रह सकती है । सप्लाई को देखें तो, बाजार वर्ष 2013-14 की शुरूआत 8.8 मिलियन टन के कैरीओवर भंडार के साथ शुरू होगी, जो लगभग 5 वर्षो के उच्चतम स्तर के नजदीक है। 30 सितम्बर 2014 को बाजार वर्ष समाप्ति तक भंडार बढ़कर 10 मिलियन टन हो जाने की संभावना है। मांग का फंडामेंटल यह है कि चीनी की वार्षिक खपत लगभग 23 मिलियन टन होती है और 3 से 4 मिलियन टन चीनी निर्यात किया जाता है। फिर भी निर्यात के दरवाजे खुलने की संभावना कम है क्योंकि न्यूयार्क में चीनी की कीमतें 16.81 सेंट/पाउंड है जो फरवरी 2011 के बाद से 114% की और सबसे अधिक दिनों तक होने वाली गिरावट है। अमेरिकी कृषि विभाग के अनुसार 2014 में समाप्त होने वाले बाजार वर्ष में विश्व स्तर पर चीनी का भंडार अब तक के उच्चतम स्तर 43.379 मिलियन टन पर पहुंच जाने की संभावना है।

सप्लाई के अलावा उत्तर प्रदेश में गन्ने की कीमतों पर विवाद भी कीमतों पर असर डाल सकता है। उत्तर प्रदेश में मौजूदा चीनी वर्ष (2013-14) में मिलों ने किसानों को 280 रू/क्विं. का भुगतान दो किस्तों, 260 रू/क्विं. तत्काल और 20रू/क्विं. का भुगतान वर्तमान पेराई सीजन समाप्त होने से पहले करने पर सहमति जतायी है। सरकार ने चीनी उद्योग के लिए एक राहत पैकेज की भी मंजूरी दी है जिसके तहत बैंक चीनी मिलों को 6600 करोड़ रूपये का ब्याज रहित कर्ज उपलब्ध करायेंगे।

कारोबारी अगले पेराई सीजन में गन्ने की कीमतों को चीनी की कीमतों के साथ संबंधित करने के प्रस्ताव पर भी इस वर्ष पैनी नजर रखेंगे । केन्द्र सरकार द्वारा गठित रंगराजन कमिटी ने दो फार्मूले में से किसी एक को स्वीकार करने की सिफारिश की है: (अ) चीनी, खोई, शीरा आदि से प्राप्त कुल आमदनी का 70% गन्ने की कीमतें होनी चाहिए या (ब) केवल चीनी से प्राप्त कुल आमदनी का 75% गन्ने की कीमतें होनी चाहिए(प्रथम चरण के बाइ-प्रॉडक्टों से प्राप्त आय को 5% वेटेज देते हुए)।

एनसीडीईएक्स में चीनी वायदा की कीमतें मई तक 2700 रू से नीचे टूट सकती है और 2400 रू तक गिरावट जारी रह सकती है । इस अवधि में विश्व स्तर पर बिकवाली का दबाव बढ़ने की संभावना है क्योंकि अप्रैल से जून तक ब्राजील में गन्ने की कटाई और पेराई का सीजन होने के कारण इस दौरान सप्लाई काफी अधिक होती है। इसके बाद वर्ष के अंत तक निचले स्तर पर खरीददारी, गर्मियों के दौरान सीजनल मांग और त्योहारों की मांग के कारण कीमतों को मदद मिल सकती है और चीनी वायदा की कीमतें 3200 रू के स्तर पर पहुंच सकती हैं।

चीनी वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव

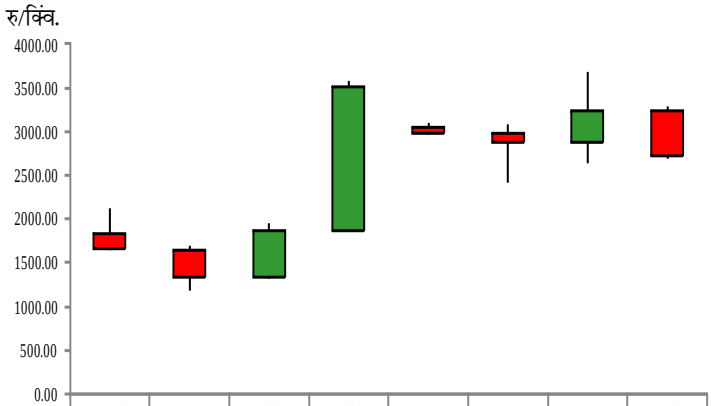

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	1830.00	1640.00	1330.00	1862.00	3049.00	2979.00	2875.00	3238.00
High	2110.00	1675.00	1934.00	3555.00	3079.00	3065.00	3672.00	3267.00
Low	1644.00	1182.00	1321.00	1862.00	2968.00	2421.00	2635.00	2680.00
Close	1652.00	1334.00	1866.00	3516.00	2973.00	2881.00	3238.00	2726.00

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

वार्षिक समीक्षा 2013: गेहूँ

पिछले वर्ष गेहूं वायदा में जोरदार तेजी और गिरावट होती रही । पहली तिमाही में कीमतें 1595 के स्तर से लुढ़ककर 1370 पर आ गई और उसके बाद 1688 के उच्च स्तर पर पहुंच गई । गेहूं के समर्थन मूल्य को 65 रू/क्विं. बढ़ाकर 1350 रू/क्विं. किए जाने की घोषणा से अधिक उत्पादन की संभावना बढ़ गई । भारत में किसानों ने लगातार छठे वर्ष मांग से अधिक गेहूं का उत्पादन किया । विश्व में गेहूं के दूसरे सबसे बड़े उत्पादक भारत ने रिकॉर्ड 92.46 मिलियन टन गेहूं का उत्पादन किया । 1 नवम्बर तक सरकारी गोदामों में 34 मिलियन गेहूं का स्टॉक था, जो अक्टूबर-दिसम्बर तिमाही के लक्ष्य से तीन गुना अधिक है। केन्द्रीय स्तर पर गेहूं का कैरीओवर स्टॉक पिछले वर्ष की तुलना में 4.2 मिलियन टन की बढ़ोतरी के साथ 24.2 मिलियन टन हो गया है जो 2001-02 के बाद सबसे अधिक है। लेकिन रूपये में 68.80 के स्तर तक रिकॉर्ड गिरावट के कारण बाजार का फंडामेंटल मजबूत रहा । अधिक निर्यात के कारण गेहूं वायदा में उछाल दर्ज की गई । इंटरनेशनल ग्रेन काउंसिल के अनुसार बाजार वर्ष 2012-13(अप्रैल-मार्च) में भारत का गेहूं निर्यात बढ़कर 6.7 मिलियन टन हो गया । इसके अतिरिक्त निर्यात में बढ़ोतरी करने के लिए सरकार ने गेहूं के निर्यात के लिए आधार मूल्य को 40 डॉलर/टन कम करके 260 डॉलर/टन कर दिया । विश्व बाजार में भारतीय गेहूं को अधिक स्वीकार्य बनाने के लिए यह कदम उठाया गया । भारत के गेहूं की प्रतिस्पर्धा काला सागर क्षेत्र के गेहूं से होती है। शिकागो बोर्ड ऑफ ट्रेड में गेहूं की कीमतें पिछले वर्ष 16% लुढ़क गई । संयुक्त राज्य खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार विश्व स्तर पर रिकॉर्ड 708.5 मिलियन टन गेहूं उत्पादन का अनुमान है। अमेरिकी कृषि विभाग के अनुसार यूरोपियन यूनियन, कनाडा और अर्जेंटिना में उत्पादन में बढ़ोतरी के कारण विश्व स्तर पर गेहूं का स्टॉक 2.2 मिलियन टन अधिक रहने का अनुमान है।

वार्षिक आउटलुक 2014: गेहूँ

दायरा: 1450-1900 रु

यह एक अति आवश्यक कमोडिटी है जिसकी लगातार सप्लाई से उपभोक्ताओं को राहत मिल सकती है। फिर भी सीजनल पैटर्न से तेजड़ियों और मंदड़ियों दोनों को समान अवसर मिलने की उम्मीद है और कीमतों में सीमित दायरे में तेजी और नरमी दर्ज की जा सकती है।

2013-14 में, भारत में 92.5 मिलियन टन के गेहूं उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त कर लेने की संभावना है क्योंकि देश के 85 प्रमुख जलाशयों में जल का भंडारण पिछले 10 वर्षो में सबसे अधिक रहा है। इसके अतिरिक्त कृषि मूल्य और लागत आयोग की सिफारिशों को अमल करते हुए सरकार ने कृषि वर्ष 2013-14(जुलाई-जून) के लिए गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य 1350 रू/क्विंटल तय किया है। मध्यप्रदेश सरकार से मिले अतिरिक्त बोनस के कारण इस राज्य के किसानों को इस वर्ष गेहूं की खेती के लिए प्रोत्साहन मिला है।

निर्यात की स्थिति को देखा जाय तो एमएमटीसी, एसटीसी और पीईसी जैसी सरकारी कंपनियों को काफी बेहतर प्रतिक्रिया मिली है और इन कंपनियों ने लगभग 6.5 मिलियन टन गेहूं के निर्यात के लिए टेंडर आमंत्रित किया है। विश्व स्तर पर गेहूं की अधिक कीमतों और रूस एवं यूक्रेन से गेहूं की कम सप्लाई के कारण भारत को निर्यात करने का लाभ मिल रहा है। सरकार ने नयी फसल की आवक से पहले गोदामों से भारी भरकम भंडार को कम करने के लिए गेहूं के निर्यात के लिए आधार मूल्य को 300 डॉलर/टन से कम करके 260 डॉलर/टन कर दिया है। यूएसडीए के अनुसार बाजार 2013-14 में भारत से गेहूं का निर्यात 6 मिलियन टन होने की संभावना है। भारतीय खाद्य निगम के अनुसार 01 नवम्बर तक सरकारी गोदामों में गेहूं का भंडार 34 मिलियन टन रहने का अनुमान है जबकि जरूरत केवल 14 मिलियन टन की है।

घरेलू एक्सचेंज में शुरू से ही गेहूं वायदा में मजबूती का रूझान देखा जा रहा है और कीमतें 1685 रू के आसपास कारोबार कर रही हैं जो अब तक के रिकॉर्ड स्तर 1700 के नजदीक है और मजबूती के रूख के साथ इस स्तर पर पहुंचने की संभावना है । फिर भी वर्ष के पहले तीन महीनों में रबी फसल की कटाई के बाद सप्लाई बढ़ने से कीमतों में थोड़ी गिरावट दर्ज की जा सकती है। इसके बाद जुलाई तक कीमतें 1450 रू से ऊपर ही स्थिर रह सकती है लेकिन चीन, अमेरिका और यूरोपीयन यूनियन-25 जैसे प्रमुख उत्पादक देशों में फसल कटाई के कारण बढ़त पर रोक लगी रह सकती है। वर्ष के अंत तक निचले स्तर पर खरीददारी, वैवाहिक सीजन और त्योहारों के दौरान सीजनल मांग के कारण कीमतों में 1900 रू तक बढ़त दर्ज की जा सकती है।

2014 में विश्व स्तर पर अधिक सप्लाई के दबाव से अंतरराष्ट्रीय बाजार में गेहूं की कीमतों में नरमी का रूझान रह सकता है । इंटरनेशनल ग्रेन काउंसिल के अनुसार 2014-15 तक देखा जाय तो उत्तरी गोलार्ध में जाड़े की गेहूं की बुआई लगभग पूरी होने वाली है और विश्व स्तर पर गेहूं का उत्पादन क्षेत्र 1.4% की वृद्धि के साथ लगभग 223 मिलियन हेक्टेयर होने का अनुमान है। विश्व स्तर पर गेहूं का उत्पादन 698 मिलियन टन होने का अनुमान है जबकि कुल खपत 692 मिलियन टन, कुल व्यापार 142 मिलियन टन और सीजन के अंत में 181 मिलियन टन भंडार रहने का अनुमान है।

गेहूँ वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव

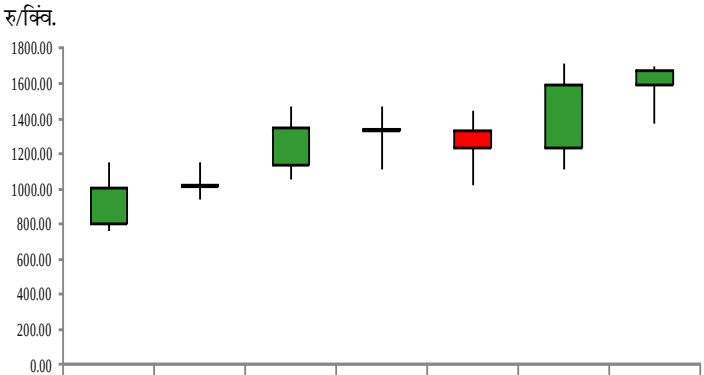

	2006	2007	2009	2010	2011	2012	2013
Open	799.00	1025.00	1135.00	1340.00	1335.00	1236.00	1589.00
High	1145.80	1139.80	1461.00	1460.00	1435.00	1705.00	1688.00
Low	765.00	940.00	1052.20	1112.20	1025.00	1111.00	1370.00
Close	1008.40	1018.60	1343.20	1337.00	1237.00	1592.00	1671.00

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

वार्षिक समीक्षा 2013: कपास

वर्ष की पहली छमाही में मिले-जुले फंडामेंटल के कारण कपास वायदा की कीमतें तेजी और गिरावट के बीच झूलती रही। बांग्लादेश और चीन से बढ़ती मांग के बाद कपास के धागों के निर्यात के लिए पंजीकरण के दो वर्षो में सबसे अधिक होने के कारण कपास की कीमतें 1100 के उच्च स्तर पर पहुंच गई । कॉटन एडवाइजरी बोर्ड ने कपास वर्ष 2012-13(अक्टूबर-सितम्बर) में कपास के आयात और निर्यात में वृद्धि का अनुमान लगाया था। फिर भी वर्ष के अंत तक कपास की कीमतों में 920 रू तक गिरावट हुई है। कपास की कीमतों पर नियंत्रण रखने के सरकारी प्रयास की योजना के रूप में भारतीय कपास निगम ने बाजार में हस्तक्षेप के तहत अपने स्टॉक से कपास बेचना शुरू किया । इसके साथ ही 2012-13 में कपास का निर्यात पिछले बाजार वर्ष की तुलना में 31% लुढ़ककर 9.8 मिलियन बेल रह गया लेकिन समान अवधि में आयात थोड़ा बढ़कर 1.47 मिलियन बेल हो गया। चीन द्वारा कपास की कम खरीददारी से विश्व स्तर पर कपास की कीमतें बुरी तरह से प्रभावित हुई और कीमतें 10 महीने के निचले स्तर पर पहुंच गई जबकि निवेशकों और कारोबारियों ने अनुमान लगाया कि चीन अपने रिजर्व स्टॉक से कपास बेच रहा है। चीन के कपास सूचना केन्द्र के आंकड़ों के अनुसार चीन ने 2013 में सरकारी रिजर्व के लिए घरेलू कपास की खरीददारी कम करके 731050 टन कर दिया, जो पिछले वर्ष की समान अवधि की खरीददारी की तुलना में 41% कम है। भारत में औसत से अधिक मॉनसून के बाद कपास की अधिक बुआई के कारण रिकॉर्ड उत्पादन अनुमान के बाद कपास पर नरमी के सेंटीमेंट की पकड़ बढ़ती गई। कॉटन एडवाइजरी बोर्ड ने 2012-13 में कपास के उत्पादन अनुमान 26.5 मिलियन बेल को संशोधित करते हुए 34 मिलियन बेल कर दिया ।

वार्षिक आउटलुक 2014: कपास

दायरा: 850-1100 रु

भारतीय कपास संगठन के आंकड़ों से पता चलता है कि 2013-14(अक्टूबर-सितम्बर) में भारत में कपास का उत्पादन 38.05 मिलियन बेल होने का अनुमान है। 1 अक्टूबर तक कैरीओवर स्टॉक 4.3 मिलियन बेल रहने का अनुमान है और आयात 1.5 मिलियन बेल होने का अनुमान है। 2013-14(अक्टूबर-सितम्बर) में भारत में कपास की उत्पादकता केवल 540 किग्रा/हेक्टेयर रहने का अनुमान है जो पिछले वर्ष के 517 किग्रा/हेक्टेयर से थोड़ा ही अधिक है। 2013-14 में कुल मांग 30 मिलियन बेल होने का अनुमान है, जिससे अगले सीजन के लिए 13.8 मिलियन बेल सरप्लस रहेगा । जहां तक मांग की स्थिति है, बहुत कुछ चीन की आयात नीति, डॉलर के मुकाबले रूपये में बदलाव, अन्य देशों की तुलना कीमतों के कम होने और पर्याप्त सप्लाई पर निर्भर करेगा ।

बाजार वर्ष 2013-14 में चीन द्वारा कपास आयात कम होकर 2.2 मिलियन टन रहने का अनुमान है क्योंकि चीन के भारी भरकम सरकारी भंडार और धीमी पड़ती खपत के कारण मांग में सुस्ती रहेगी । जबकि चीन के कुल सरकारी भंडार में बढ़ोतरी जारी रहने की संभावना है क्योंकि चीन मूल्य समर्थन कार्यक्रम (Price support program)के तहत कपास की खरीददारी जारी रखेगा । इसी से संबंधित सरकारी कपास समर्थन नीति में बदलाव पर वर्तमान समय में विचार किया जा रहा है और 2014 में इसकी घोषणा की जा सकती है। चीन के नेशनल कॉटन मार्केट मॉनिटरिंग नेटवर्क के नवीनतम सर्वेक्षण के अनुसार बाजार वर्ष 2013-14 में चीन में कपास का उत्पादन 6.67 मिलियन टन होने का अनुमान है जो बाजार वर्ष 2012-13 की तुलना में 12.30% कम होगा । प्रतिकूल मौसम के कारण इस दौरान उत्पादकता 9.30% की गिरावट के साथ 1415 किग्रा/हेक्टेयर रहने का अनुमान है।

कीमतों में बदलाव की संभावना को देखा जाय तो घरेलू बाजार में वर्ष के शुरूआती महीनों में कपास की कीमतें एक दायरे में बरकरार रह सकती हैं और बढ़त पर रोक लगी रह सकती है क्योंकि इस दौरान कपास के अधिकतम आवक का सीजन होगा और मिलों की ओर से सीमित खरीददारी होगी । फिर भी एनसीडीईएक्स में कपास वायदा की कीमतों के 850 रू से ऊपर सपोर्ट रहने की संभावना है। वर्तमान समय में किसान लगभग 1000 रू/20 किग्रा की कीमत मिलने की उम्मीद से अपने स्टॉक को रोक कर रखे हुए हैं। मार्च से सितम्बर तक की अवधि में अंतरराष्ट्रीय एक्सचेंज(ICE) में कारोबार होने वाले कपास के सीजनल पैटर्न के नक्शेकदम पर चलते हुए कपास की कीमतों में लगभग 6% की गिरावट हो सकती है । चीन के अपने भंडार से कपास की बिक्री से भी कीमतों पर दबाव रह सकता है। इंटरनेशनल कॉटन एडवाइजरी कमिटी के अनुसार चीन अपने भारी भरकम सरकारी भंडार से लगभग 2-3 मिलियन टन कपास बेचेगा। इंटरनेशनल कॉटन एडवाइजरी कमिटी के अनुसार फसल वर्ष 2013-14 के अंत तक विश्व स्तर पर कपास का रिकॉर्ड भंडार रहने का अनुमान है। अगले वर्ष 31 जुलाई तक विश्व स्तर पर कपास का शेष बचा कुल भंडार 20.3 मिलियन टन रहने का अनुमान है, जो पिछले सीजन की तुलना में 10% अधिक होगा ।

कैलेंडर वर्ष के अंत तक, अर्थात् सितम्बर से दिसम्बर तक सीजनल मांग, घरेलू बाजारों में कम आवक के सीजन से निवेशकों को फायदा हो सकता है। सीजनल पैटर्न से पता चलता है कि इस अवधि में कपास वायदा में लगभग 9% की वृद्धि हो जाती है।

कपास वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव

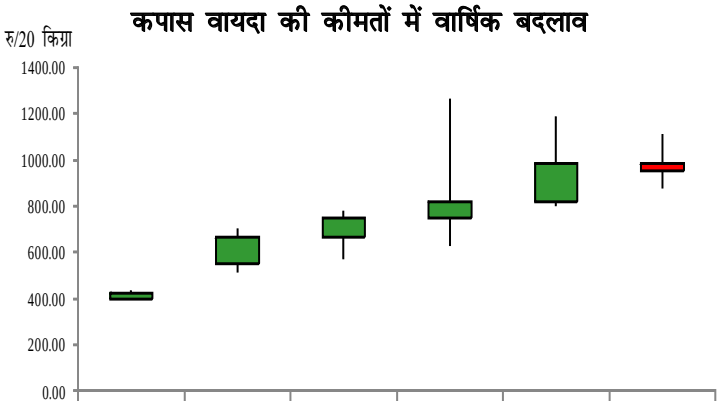

	2007	2009	2010	2011	2012	2013
Open	400.00	548.60	666.90	749.50	822.00	985.00
High	429.00	695.80	775.00	1262.00	1184.00	1105.00
Low	398.90	516.00	570.00	630.10	801.00	874.00
Close	421.70	666.10	747.60	817.10	982.00	952.50

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

वार्षिक समीक्षा 2013: चना

पिछले वर्ष चना वायदा में गिरावट जारी रही और कीमतों में 25% से अधिक की गिरावट दर्ज की गई । घरेलू बाजारों में कम खरीददारी, अन्य दालों की अधिक आवक और मध्यप्रदेश में उत्पादकता में वृद्धि के कारण कीमतों पर दबाव पड़ा । जहां तक सप्लाई की स्थिति है, 2012-13 में दालों का उत्पादन 18.45 मिलियन टन हुआ, जो अब तक का रिकॉर्ड है। दूसरी तिमाही की शुरूआत में निचले स्तर पर खरीददारी के साथ ही मांग और सप्लाई में असंतुलन के कारण कीमतों में तेजी दर्ज की गई। आवक में लगातार गिरावट और मिलों की ओर से उत्साहजनक खरीददारी के कारण चना वायदा की कीमतें तेजी दर्ज करते हुए 4127 के उच्च स्तर पर पहुंच गई । इसके बाद उच्च स्तर पर मुनाफा वसूली, आटा मिलों की ओर से कम मांग, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और तंजानिया से सस्ते आयात और अधिक क्षेत्र में बुआई की उम्मीद से कीमतें 2500 रू के स्तर पर लुढ़क गई। बेहतर उत्पादन की संभावना और चने की नयी फसल की कटाई के कारण स्टॉकिस्टों के बीच भय व्याप्त हो गया । इसके अतिरिक्त सरकार ने दालों के निर्यात पर प्रतिबंध को फिर से एक वर्ष के लिए बढ़ा दिया, लेकिन काबुली चना, ऑर्गेनिक दालों और मसूर के निर्यात को कुछ शर्तो के साथ मंजूरी प्रदान की । फिर भी वर्ष के अंत तक वैवाहिक सीजन की मांग और डॉलर के मुकाबले रूपये के कमजोर होने के कारण चना वायदा की कीमतें 3000 के आसपास स्थिर रही ।

वार्षिक आउटलुक 2014: चना

दायरा: 2400-3800 रु

एनसीडीईएक्स में चना वायदा की कीमतें 2940 रू के नजदीक कारोबार कर रही है जो इसके अब तक के उच्चतम स्तर 4999 रू से लगभग 40% से अधिक कम है। कीमतों को 3250 के नजदीक रेजिस्टेंस का सामना करना पड़ रहा है । अधिक कैरीओवर स्टॉक, विश्व बाजार में नयी फसल की आवक और घरेलू बाजार में आयातित दालों की लगातार सप्लाई के कारण कीमतों की बढ़त पर रोक लगी रह सकती है। आगामी दिनों में कारोबारियों की पैनी नजर डॉलर के मुकाबले रूपये के कारोबार पर रहेगी । रूपये के कमजोर होने से आयात महंगा हो जाता है।

भारत में दालों की वार्षिक मांग लगभग 20.50 मिलियन टन है और यह बढ़ती जा रही है। 2013-14 में दालों की मांग 21.77 मिलियन टन होने का अनुमान है जो 6% से अधिक की वृद्धि है। इसके विपरीत भारत सरकार ने 2013-14 में 19 मिलियन टन दालों के उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसप्रकार सप्लाई में कमी को आयात के द्वारा पूरा किया जाएगा ।

कृषि मंत्रालय द्वारा खरीफ फसलों के प्रथम अग्रिम उत्पादन अनुमान के अनुसार तुर और उड़द के औसतन अधिक उत्पादन के कारण खरीफ दालों का कुल उत्पादन 6.01 मिलियन टन होने का अनुमान है जो औसत उत्पादन से 0.42 मिलियन टन अधिक होगा । एक नवीनतम आंकड़ें के अनुसार रबी सीजन में दालों की बुआई अंतिम चरण में है और 2013-14 में 114.87 लाख हेक्टेयर में दालों की बुआई हो चुकी है जबकि पिछले वर्ष में 102.49 लाख हेक्टेयर में दालों की बुआई हुई थी । दक्षिण-पश्चिम मॉनसून के बेहतर रहने और देश के जलाशयों के भरे रहने से अधिक उत्पादन की संभावना बढ़ गई है। वर्तमान समय में जलाशयों का भंडार पिछले वर्ष की तुलना में 122% अधिक है जबकि पिछले 10 वर्षो के औसत भंडारण से 123% अधिक है।

इस वर्ष फरवरी में बाजार में नयी फसल की आवक से पहले स्टॉकिस्टों द्वारा बिकवाली के दबाव के कारण दिल्ली के हाजिर बाजार में चने की कीमतें 3000 रू के आसपास है जो दो वर्षो में सबसे कम है । घरेलू एक्सचेंज में चना वायदा की कीमतों के 2400 रू से ऊपर ही स्थिर रहने की संभावना है । एनसीडीईएक्स में फॉरवर्ड कॉन्ट्रैक्ट कॉन्टैंगो में कारोबार कर रहा है, जिससे पता चलता है कि आगामी महीने में कीमतें अधिक है और मजबूती के रूझान की ओर संकेत करती है और तेजी की स्थिति में कीमतें 3400 के स्तर को पार करते हुए 3800 के स्तर तक पहुंच सकती हैं।

विश्व स्तर पर, खासतौर से कनाडा से अधिक सप्लाई के कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार में औसत कीमतों में लगातार तीसरे वर्ष भी गिरावट का अनुमान है । 2013-14 में काबुली चने का उत्पादन 6% की वृद्धि के साथ 171 किलो टन होने का अनुमान है और अधिक कैरीओवर स्टॉक के कारण सप्लाई में 29% वृद्धि होने की संभावना है।

चना वायदा की कीमतों में वार्षिक बदलाव

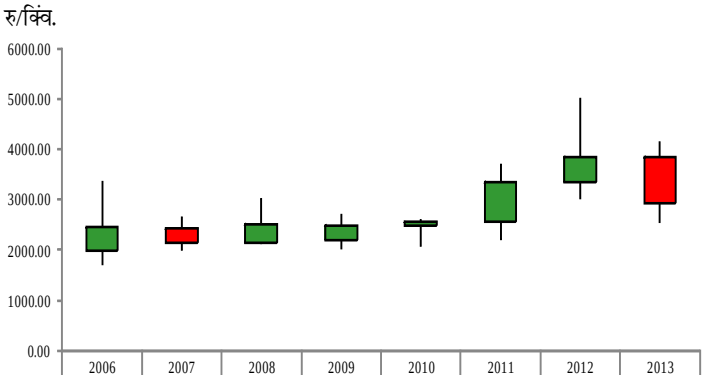

	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013
Open	1993.00	2445.00	2131.00	2200.00	2475.00	2559.00	3339.00	3855.00
High	3345.00	2648.00	3016.00	2685.00	2590.00	3700.00	4999.00	4127.00
Low	1702.00	1985.00	2111.00	2001.00	2065.00	2198.00	3020.00	2528.00
Close	2460.00	2131.00	2514.00	2474.00	2557.00	3354.00	3852.00	2939.00

स्रोत: रॉयटर एवं SMC रिसर्च

/smcglobalsecuritieslimited

/smcglobal

2013 EMERGING SME INVESTMENT BANKER Awarded by: ASSOCHAM

2013 BEST EQUITY BROKING HOUSE -DERIVATIVE SEGMENT Awarded by: BSE

2013 FASTEST GROWING EQUITY BROKING HOUSE -LARGE FIRM Awarded by: BSE

2012 BEST EQUITY OVERALL Awarded by: BSE

2012 BEST CURRENCY BROKER Awarded by: Bloomberg UTV

2011 BEST WEALTH MANAGEMENT Awarded by:

Expand your investment portfolio with commodity.

Invest in commodity with us and benefit from award winning industry expertise, simplified research calls and latest trading platform. From oils and spices to metals and grains, make commodity the biggest asset in your investment portfolio with our personalised services.

- Longest trading time (open till 23:00 hours)
- PAN India presence
- Offline & online trading facilities
- Arbitrage expertise
- Strong delivery handling team
- Dedicated research team having experienced and skilled research analysts

smc®

Moneywise. Be wise.

INDIA'S BEST MARKET ANALYST AWARD - COMMODITIES (VIEWERS' CHOICE)
Source: Zee Business Best Market Analyst Awards, 2012

INDIA'S BEST ANALYST AWARD - COMMODITIES (FUNDAMENTAL)
Source: CPAI-2nd International Commodity Convention, 2012

CALL 1800-11-0909 (TOLL-FREE) TEXT 'SMC COM' TO 56677 VISIT WWW.SMCTRADEONLINE.COM

SMC Global Securities Limited

REGISTERED OFFICE: 11/6B, Shanti Chamber, Pusa Road, New Delhi - 110005 • Tel +91-11-30111000 • Fax +91-11-25754365
MUMBAI: 1st Floor, Dheeraj Sagar, Opp. Goregaon Sports Club, Link Road, Malad (W), Mumbai - 400064 • Tel +91-22-67341600 • Fax +91-22-28805606
KOLKATA: 18, Rabindra Sarani, Poddar Court, Gate No. 4, 5th Floor, Kolkata - 700001 • Tel +91-33-39847000 • Fax +91-33-39847004
DUBAI: 312, Belshalat Building, Al Karama, Dubai, P.O. Box 117210, U.A.E. • Tel +9714-3963120 • Cell +97150-2612483 • Fax +9714-3963122

Award sources: BSE IPF and D&B Equity Broking Awards 2012 & 2013 • Bloomberg-UTV Financial Leadership Awards 2012 • Business Sphere Group 2011

NSE INB/INF/INE 230771431, BSE INB/INF 011343937, MCX- SX INB/INF 260771432 INE 260771431, USEL INE 271343936, CDSL IN-DP-CDSL-583-2010, NSDL IN-DP-NSDL-333-2010 (SMC Global Securities Ltd.) NCDEX: NCDEX/TCM/CORP/0131, MCX: MCX/TCM/CORP/0385, NMCE: NMCE/TCM/CORP/0215, ICEX: ICEX/TCM/CORP/009, ACE: ACEL/CM/CORP/0267, PMS INP000003435 (SMC Investments and Advisors Ltd.), IRDA Regi: No: DB 272/04 License No. 289 (SMC Insurance Brokers Pvt. Ltd.), UCX: 210001

Disclaimer: Investment in securities & commodities market are subject to market risk • All insurance products sold through SMC Insurance Brokers Pvt. Ltd. • Investment Banking Services provided by SMC Capitals Ltd. • Equity PMS and Wealth management services provided by SMC Investments & Advisors Ltd. • IPOs and Mutual Funds distribution service is provided by SMC Global Securities Ltd. • Financing Services provided by Moneywise Financial Services Pvt Ltd. • Insurance is the subject matter of solicitation. • Commodity broking services provided by SMC Comtrade Ltd. • SMC business associate/ partner means Sub Broker/ Authorised Person/ Remiser.

triverse

STEEL HAS BUILT NATIONS, NOW IT WILL BUILD YOUR PORTFOLIO

Salient Features of Steel Long Contracts on NCDEX Platform

- Very high co-relation to steel making raw materials such as sponge iron, melting scrap and finished long products such as TMT rebars, structural steel and wire rods
- Adequate volume and liquidity
- Ideal Hedging and Risk Management Platform for value chain participants in long products industry
- Widely accepted as benchmark for long steel product prices across India
- Compulsory delivery contract with staggered delivery mechanism
- Justified premium/ Discount structure for fair pricing across the country
- Widely accepted quality specifications

NCDEX

Akruti Corporate Park, 1st Floor, Near G.E.Garden, L.B.S. Marg, Kanjurmarg (West), Mumbai - 400 078
Tel: (+91-22) 66406639-13, Fax: (+91-22) - 66436899, E-mail: ask.us@ncdex.com, Website: www.ncdex.com
For more details, contact our Product Managers - Mr. Ramesh Iyer: 9820489726 & Mr. Ashish Singhal: 9811798428.